ग्रामीण पाठकों के लिए

प्रतिभा

संक्षिप्तीकरण

हरेकृष्ण महताब

अनुवाद

मंजु शर्मा महापात्र



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-3165-5

पहला संस्करण : 2000 *(शक 1922)*

PRATIBHA *(Hindi)*

रु. 12.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया,
ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

1

सनातन की लड़की के साथ जमींदार रामहरि के लड़के का ब्याह जिस दिन तय हुआ, बस उसी दिन से सनातन के सिर पर बोझ बढ़ गया। हालांकि उन्होंने बड़ी खुशी से खुद ही दूसरों की मदद से इस रिश्ते को तय करवाया था। एक गरीब घर की लड़की बड़े घर में जाएगी। होनेवाला दामाद कटक कॉलेज से बी.ए. पास कर वकालत की पढ़ाई कर रहा है। भाग्य से ही ऐसे रिश्ते बनते हैं—ये सब बातें सोचकर वे बहुत खुश थे। वे मन ही मन अंदाज़ा लगा रहे थे कि अब तो उन्हें अपने समधी की जमींदारी में जरूर कोई अच्छी नौकरी मिल जाएगी, पर उन्हें एक चिंता खाए जा रही थी। बरातियों के स्वागत और बेटी के गहनों का खर्च उनके सामने मुंह उठाए खड़ा था। इसके लिए लगभग दो सौ रुपए चाहिए, पर वे आएंगे कहां से ? उन्होंने इस बारे में अपनी पत्नी से बात की।

जमींदार रामहरि खुशी-खुशी इस विवाह के लिए राजी हो गए थे। उन्हें यह विश्वास हो गया था कि जो तीन शर्तें उन्होंने अपने बेटे के विवाह के लिए रखी थीं उन पर सनातन की बेटी पूरी खरी उतरती है। उनकी पहली शर्त थी, लड़की बहुत सुंदर होनी चाहिए। उनकी दूसरी शर्त थी कि लड़की गरीब घर की होनी चाहिए। (उनकी अपनी पत्नी एक गरीब घर से आई थी) उनका दृढ़-विश्वास था, साथ ही अपने जीवन के अनुभवों से उन्होंने जाना था कि लड़की जितने गरीब घर से आएगी उतनी



ही दबकर रहेगी। उनकी तीसरी शर्त थी कि लड़के-लड़की की जन्म-कुंडली पूरी तरह से आपस में मिलनी चाहिए। इस तीसरी शर्त में कुछ गड़बड़ी थी, पर जीवन भर जमींदारों के अनेक विभागों में काम करते हुए सनातन ने जो पैंतरेबाजियां सीखी थीं, वही काम दे गईं। उन्होंने गांव के ज्योतिषी को कुछ पाठ पढ़ाकर अपनी तरफ कर लिया था, उससे बिगड़ता हुआ काम बन गया था। ब्याह का शुभ मुहूर्त भी निकल आया था। पर सनातन को बस एक ही चिंता थी कि दो सौ रुपए आएंगे कहां से ?

कुछ सोचकर ही उन्होंने अपनी यह चिंता अपनी पत्नी को बताई थी। वे जानते थे कि उसके पास इतने रुपए होंगे। जब

से वो ब्याह कर आई थी उसी दिन से, इन बीस सालों में उसने घर के खर्चों से बचा-बचाकर एक गुल्लक में जमा किए थे। जब पैसे ज्यादा हो जाते थे तो वह उन्हें रुपयों में बदलकर जमा करती रहती थी। रोज संध्या-वंदन के समय वह उस स्थान पर भी धूप-बत्ती दिखाती थी। उनकी पत्नी समझ गई थी कि उसके पति की आँख उसके जमा धन पर थी। उसने पति की सारी बात सुनकर कहा, ‘‘ये तो तुम जानो, कहीं से भी रुपयों का इंतजाम करो। मैं तो ठहरी औरत जात, मैं भला क्या करूंगी ?’’ इतना सुनने के बावजूद भी सनातन को आशा थी कि अपनी बेटी के ब्याह में, साथ ही इस ब्याह से उनका भविष्य भी संवर सकता था सो उनकी पत्नी अपनी जमा पूंजी अवश्य निकालेगी। इधर उनकी पत्नी सोच रही थी कि यदि मैं इसी तरह थोड़ी कड़ी बनी रहूंगी तो पति खुद जाकर कहीं न कहीं से पैसों का इंतजाम करेंगे ही। इसी तरह से दोनों के बीच एक खींचातानी सी चल रही थी।

2

सनातन की बेटी केवल देखने में ही सुंदर न थी बल्कि उसका स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा था। उसके सौंदर्य की चर्चा सारे गांव में थी। उसका ब्याह तय होने तक उसने अपने गांव की उच्च प्राथमिक पाठशाला की पढ़ाई पूरी कर ली थी। उसके अम्मा-बाबूजी उसे ‘अपुछि’ नाम से बुलाते थे। स्कूल के हाजिरी रजिस्टर में उसका नाम लिखा था ‘अपुछि देवी’।

एक दिन गांव का एक शिक्षित युवक महेंद्र बाबू पाठशाला घूमने आया था। वह कटक के कॉलेज में पढ़ता था। वह शिक्षा विस्तार की दिशा में अपना कर्तव्य समझकर पाठशाला आया

था। उस समय 'अपुछि' तेरह साल की थी और वह पाठशाला की सर्वोच्च कक्षा में पढ़ती थी। चारों ओर घूमते हुए निरीक्षण करते समय उसकी आंख अपुछि पर पड़ी। उसने 'अपुछि' को किताब पढ़ने को कहा। वह उसके मधुर-स्वर और साफ उच्चारण को सुन मंत्रमुग्ध-सा हो गया था। लगभग तीन पन्ने पढ़े जाने तक वह उसी की ओर टकटकी लगाए था। अचानक बीच में लड़की ने सिर उठाया तो देखा वह युवक उसी को ताके जा रहा है तो वह लजा गई। वह युवक भी कुछ हड़बड़ा गया। उसने 'अपुछि' को किताब बंद करने को कहा। उसने मास्टरजी से हाजिरी रजिस्टर मंगवाकर उस लड़की का 'अपुछि देवी' नाम काट दिया और उसकी जगह 'प्रतिभा देवी' लिख दिया। उस युवक ने अपने सुधार के बारे में मास्टरजी से कहा, "देखिए मास्टरजी, नाम कोई साधारण बात नहीं है। नाम के अनुसार मनुष्य के गुण भी विकसित होते हैं।"

प्रतिभा की इस खूबी को जानकर उसके अम्मा-बाबूजी बहुत खुश हुए। उच्च प्राथमिक परीक्षा में भी उसे छात्र-वृत्ति मिली थी। पर उसे और आगे पढ़ाने के लिए उसके अम्मा-बाबूजी राजी नहीं थे। उस शिक्षित युवक, महेंद्रबाबू ने उसकी पढ़ाई का सारा खर्च स्वयं उठाने का तथा उसे कटक में पढ़ने का पूरा विश्वास प्रतिभा के घरवालों को दिलाया था। यह सुनकर प्रतिभा के बाबूजी थोड़े-थोड़े राजी हो गए थे पर उसकी अम्मा ने सिर झटककर प्रस्ताव को नकार दिया था। बोली थी, "जवान होती लड़की को कटक भेजकर कोठे की वेश्या के पास नाम लिखाना है क्या ?"

बस ऐसे ही प्रतिभा की पढ़ाई बंद हो गई और वह बंद होकर रह गई घर के एक कोने में। उसकी इस दुरावस्था को जानकर महेंद्रबाबू ने लंबी सांस ली और सोचने लगे, "ऐसे ही

न जाने कितने जंगली मोंगरे के फूल खिलकर जंगल में ही नष्ट हो जाते हैं।'' फिर भी वो पाठशाला के मास्टरजी के द्वारा उसे पढ़ने के लिए किताबें तथा मासिक पत्रिका भेजते रहे। वे सब किताबें, उसी पाठशाला में पढ़ रहा प्रतिभा का छोटा भाई, उसे घर में लाकर दे देता था। गोशाला का गोबर साफ करना, दूध निकालना, दोपहर के लिए भोजन बनाना आदि काम खत्म कर प्रतिभा को बहुत कम समय पढ़ने को मिल पाता था।

3

फिर एक बार महेंद्रबाबू गांव आते हैं। पहले की तरह ही वे पाठशाला आए। वहां मास्टरजी से उन्हें पता चला कि उनके द्वारा भेजी गई सभी किताबें तथा पत्रिकाएं प्रतिभा के छोटे भाई सिद्धेश्वर के हाथ से ठीक समय पर प्रतिभा के पास पहुंच जाती हैं। सो इस बार भी उन्होंने अपने साथ लाई हुई किताबें तथा मासिक पत्रिका सिद्धेश्वर को देते हुए कहा, ''लो इसे ले जाकर प्रतिभा को दे देना, समझे ?''

सिद्धेश्वर ने घर जाकर किताबें और पत्रिका प्रतिभा के ऊपर फेंक दी और बोला, ''ये ले, हमारे स्कूल में महेंद्रबाबू आए थे उन्होंने तेरे पढ़ने के लिए ये किताबें भेजी हैं।'' उसकी आवाज अम्मा के कान में पड़ गई थी। वो चौकन्नी हो गई थी। किताबें किसने भेजीं, यह जानकर उसका दिमाग भन्ना गया। वह गुस्से में तमतमाकर बोली, ''उसे क्या और कोई नहीं मिला, मेरी बेटी क्या इतनी सस्ती है ? अमीरजादा है तो क्या जो मन में आएगा सो कर लेगा ? आदि-आदि न जाने क्या कह-कहकर वह चिल्लाने लगी थी। जब बेटी उन्हें समझाने की कोशिश करने लगी कि वे तो बराबर इस तरह किताबें पढ़ने के लिए

भेजते हैं ये आज की कोई नई बात तो नहीं है। यह सुनकर तो उसकी अम्मा का पारा और चढ़ गया बोली, "क्या बोली, वो बराबर भेजता है ? मैं तो सोचती थी कि मेरी बेटी अच्छा पढ़ती है सो सरकार की तरफ से उसके लिए किताबें आती हैं। अच्छा तो ये महेंद्र भेजता रहा। उसने हमारे घर को क्या कोठा समझ लिया ? जाती हूं अभी उस मास्टर की खबर लेती हूं ?"

उसके बाद उसकी अम्मा ने पाठशाला जाकर मास्टरजी तो गाली-गलौच शुरू कर दी। वे कह रही थीं, "अरे, तू यहां मास्टरगिरि करता है या भड़ुआगिरि ? मेरी लड़की तेरी पाठशाला में पढ़ती थी सो तू दूत का काम करता था, क्यों रे? और भी न जाने वो क्या-क्या बकती गई। कुछ समय तो मास्टरजी अवाक् हो सुनते रहे पर बाद में उन्होंने उसकी बातों का प्रतिवाद किया। पर उससे प्रतिभा की अम्मा को कोई फर्क नहीं पड़ा। हल्ले-गुल्ले की आवाजें सुन आसपास पांच-सात लोग जुट गए थे। अपुछि की अम्मा का झगड़ालूपन सभी जानते थे। सो पहले लोगों ने उसे ही समझाया कि गांव के मास्टर को इस तरह क्यों वह बीच रास्ते में डांट-डपट कर रही है, क्यों वह गांव की इज्जत को बीच सड़क पर ला रही है आदि-आदि। इस पर अपुछि की अम्मा ने विस्तार से उन्हें सारी बातें कहीं। उसने बताया कि महेंद्र ने इस मास्टर को पटा रखा है और इसी के हाथ वह मेरी बेटी के पास चीजें भिजवाता है। मास्टरजी ने भी एड़ी से चोटी तक का जोर लगाकर अपनी बात समझाने की कोशिश की। वे बोले कि महेंद्रबाबू विद्वान व्यक्ति हैं, धनी आदमी हैं, उनकी नीयत खराब नहीं है बस इनकी बेटी पढ़ाई में अच्छी है सो इसलिए उसके पढ़ने के लिए कुछ किताबें भिजवाते थे। पर अपनी बात समझा-समझाकर वो हार गए और अंत में फैसला हुआ कि गलती मास्टरजी की ही है। एक

जवान लड़की के पास परपुरुष का सामान पहुंचाना अन्याय है। जो भी हो आइन्दा ऐसा नहीं होना चाहिए। वे लोग किसी तरह अपुछि की मां को समझा-बुझाकर ले गए थे।

धीरे-धीरे यह बात सारे गांव में फैल गई थी। लोग बातें कर रहे थे कि जनार्दनबाबू के लड़के ने सनातन बाबू की लड़की के साथ कुछ चक्कर चला रखा था पर बीच में ही अपुछि की अम्मा ने उन्हें पकड़ लिया, और जैसे-तैसे करके बात को दबा दिया गया। महेंद्रबाबू ने जब यह सुना तो एक गहरी सांस ले बोले, "यही तो हमारे समाज की दशा है। जहां नारी पर इतने अत्याचार किए जाते हों वहां उसकी मुक्ति कैसे संभव है ?"

4

जिस मासिक पत्रिका और किताब के लिए इतना बवंडर मचा था, उसी मासिक पत्रिका में 'समाज में नारी का स्थान' नामक एक निबंध था। लेखक थे श्री महेंद्र प्रसाद महापात्र यानी हमारे महेंद्रबाबू। उस किताब का नाम था 'नारी'। इसमें नारी जागरण और प्रगति से संबंधित अनेक लेख थे। प्रतिभा ने देखा कि उस पत्रिका में उसकी बात भी लिखी हुई थी। उसका किस तरह नाम बदला गया, उसकी विलक्षण बुद्धि तथा उसे उच्च प्राथमिक शिक्षा के बाद और आगे पढ़ाने का प्रयत्न कैसे बेकार गया आदि बातें उसमें लिखी हुई थीं। उसमें यह भी लिखा हुआ था कि यदि समाज रुकावट न बनता तो प्रतिभा एक दिन देश की बड़ी नारी नेत्री हो सकती थी।

उस निबंध को प्रतिभा ने बार-बार पढ़ा और खुश हुई। आज तक समाज के जिन नियम-सिद्धांतों को वह स्वाभाविक

मानकर स्वीकारती आई थी, आज पहली बार उनके लिए उसके मन में अनेक प्रश्न उभर रहे थे—जब पुरुष शिक्षा प्राप्त कर सकता है तो नारी क्यों नहीं ? पुरुष स्वतंत्र हो, हर जगह आ जा सकता है तो नारी क्यों एक पिंजरे में बंद होकर अंधेरे कोने में पड़ी रहे ? आदि-आदि। एक अच्छे इंसान के कारण उसे घर बैठे कुछ-कुछ पढ़ने को मिल रहा था, पर उसी बात को लेकर बखेड़ा खड़ा करना, उसमें वेश्या तक का नाम जोड़ देना उसे बड़ा असहनीय लगा। यह बात सोचते ही उसकी आंखों में आंसू झरने लगे थे। आंसुओं के बाद उसका मन कुछ हल्का हो गया था। समाज में नारी के ऊपर किए जानेवाले अत्याचारों के बारे में अनेक बातें उसके मन में आ रही थीं। वह मन ही मन सोच रही थी कि महेंद्र बाबू ने जो लिखा है कि वह एक दिन बड़ी नारी नेत्री बन सकती थी। इसी तरह की अभिलाषाओं के पंख लगाकर वह कल्पनालोक में उड़ी जा रही थी। सोचते-सोचते अचानक उसे याद आया कि कैसे उस दिन महेंद्रबाबू टकटकी लगाकर उसी को देखे जा रहे थे। और अंत में बस एक ही भाव उसके मन में आ-जा रहा था ''काश ! फिर उनसे एक बार मुलाकात होती !''

तभी अचानक मां के कर्कश स्वर से उसका सपना टूट गया। वह जोर-जोर से कह रही थी ''ससुराल में यदि झाड़ू से तेरी पीठ न सेंकी गई तो मेरा नाम नहीं। सांझ होने को आई, ढोरों को दाना-पानी नहीं मिला, संध्या-आरती नहीं सजी और मेरी लाड़ली पढ़ रही है—तो पढ़ रही है—पढ़े जा रही है। अरे मैं कहती हूं इस गांव में और भी लड़कियां हैं या बस तू ही एक है रे ?....''

5

ये सच था कि अपनी इज्जत बचाने के लिए महेंद्रबाबू जल्दबाजी में कटक चले गए थे पर उनके मन को बहुत धक्का लगा था। प्रतिभा के पास कुछ किताबें भेजने को लेकर जो बवंडर मचा था उससे एक मासूम लड़की के नाम पर कितना दाग़ लगा होगा। और बेचारी वो तो शर्म से सिर भी नहीं उठा पा रही होगी ! "मैं क्या उसे किसी प्रकार मदद नहीं कर सकता ?" इसी प्रकार की विचारधाराएं उनके मन में आ जा रही थीं।

सोचते-सोचते एक दो बार उनके मन में आया कि प्रतिभा से ब्याह कर लेने पर सारा झंझट ही समाप्त हो जाएगा, पर यह विचार अपने आप दब भी गया। ब्याह तो उनके हाथ की बात नहीं है इसके लिए माता-पिता की राय लेना जरूरी है। और फिर उनका समाज भी उन्हीं के पक्ष में बोलेगा ऐसा भी तो पक्का नहीं है। तभी उनके मन में एक विचार कौंधा कि प्रतिभा के साथ संपर्क तो रखा जा सकता है। बस वे बिना देर किए तुरंत अपने गांव की ओर चल पड़े।

हमेशा की तरह वे पाठशाला देखने गए। वहां जाकर उन्होंने मास्टरजी से पाठशाला की आर्थिक अवस्था पर बातचीत की। मास्टरजी ने वहां के आर्थिक हालात के बारे में एक लंबी सी कहानी कह डाली थी। उनकी बातें सुनकर महेंद्रबाबू ने उन्हें घर आने का आमंत्रण दिया था। घर पर उन्होंने मास्टरजी से अति सहानुभूतिपूर्ण होकर पूछा था, "बोलिए मास्टरजी, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं। आखिर यह गांव मेरा भी तो है, इसके प्रति मेरा भी तो कुछ कर्तव्य बनता है।" और इसी क्रम में उन्होंने मास्टरजी से वादा किया कि हर महीने

उनके पिता से उन्हें जो पचास रुपए मिलते हैं उसमें से पांच रुपए बचाकर वे उन्हें भेजेंगे। फिर उन्होंने सुझाव दिया था कि बीच-बीच में विद्यार्थियों को कुछ पुरस्कार देना भी अच्छा होगा। उसके लिए धन कहां से आएगा का प्रश्न उठने पर उन्होंने कहा था, "मैं कुछ मदद अवश्य करूंगा।"

बस इस तरह से बराबर हर महीने पांच रुपयों के साथ कुछ किताबें और मासिक पत्रिका विद्यार्थियों को पुरस्कार में देने के लिए मास्टरजी पाने लगे थे। हर बार एक मासिक पत्रिका और एक किताब के ऊपर महेंद्रबाबू सिद्धेश्वर का नाम लिख देते थे। मास्टरजी हमेशा सोचते कि शायद महेंद्रबाबू को इस एक ही छात्र का नाम याद है अन्यथा वे जरूर अन्य छात्रों का भी नाम किताबों पर अवश्य लिखते।

महेंद्रबाबू की युक्ति पूरी तरह काम कर गई थी। इसमें कोई संदेह नहीं था क्योंकि सिद्धेश्वर नई किताब मिलने पर अपनी जीजी को दिखाता था। एक बार प्रतिभा ने चालाकी से उससे अकेले में पूछा था, "ये सब किताबें तुझे कौन देता है रे ?" सिद्धेश्वर ने बताया था कि कटक से महेंद्रबाबू भेजते हैं। और भी चार बच्चों के लिए भेजते हैं पर उसकी किताब सबसे सुंदर है। उस पर वे उसका नाम भी लिखकर भेजते हैं।

प्रतिभा को अब और कुछ भी पूछने की जरूरत न थी। उसने एक गहरी सांस लेकर किताब को अपनी छाती से लगा लिया था।

6

सनातन और उनकी पत्नी प्रतिभा के ब्याह के संबंध में बातें उससे छिपाकर नहीं करते थे। एक तो उनकी यह आदत न

थी दूसरा उनके घर में कमरों का अभाव था। अतः ब्याह से संबंधित बातें कभी-कभार उसके कानों में पड़ ही जाती थीं। इसी बीच सिद्धेश्वर से मिली एक पत्रिका में उसने महेंद्रबाबू का एक लेख पढ़ा था। उसमें हमारे देश में प्रचलित विवाह-प्रथा से नारियों को जो कष्ट भोगना पड़ता है उसके बारे में विस्तृत वर्णन था। उसमें लिखा था कि माता-पिता अपनी बेटी के सुखों के बारे में न सोचकर बल्कि अपने स्वार्थों के अनुसार ही उसका ब्याह कर देते हैं। हमेशा के लिए उसे एक जाल में फंसा देते हैं। इससे देखा गया है कि अधिकांश नारियां जीवनभर तड़प-तड़पकर जिंदगी गुजारती हैं। इस लेख को पढ़ने के बाद जब प्रतिभा को पता चला कि उसके बाबूजी अपनी गरीबी दूर करने के लिए ही उसका ब्याह करवा रहे हैं तो उसे अपने बाबूजी पर बहुत गुस्सा आया। उसे अपनी अम्मा पर भी बहुत गुस्सा आया क्योंकि वह भी उसे बोझ समझकर अपने सिर से उतार देना चाहती थी। पर वह बहुत मजबूर थी। जब उसका मन बहुत बेचैन हो जाता तो वह महेंद्रबाबू के बारे में सोचने लगती थी। वह सोचती थी कि यदि वे एक बार मिल जाते तो वह उनसे पूछती कि इन परिस्थितियों में उसे क्या करना चाहिए ? पर बाद में उसका मन मुरझा जाता, क्योंकि वह जानती थी कि उनसे मिलने की बात रात में सूरज उगने की तरह ही है।

अंत में उसके मन में यह विचार पक्का हो गया था कि चाहे जो कुछ भी हो वह इस विवाह की विरोधी है। पर उसके इस विचार ने घर में अशांति मचा दी थी। अंत में मजबूर हो उसने फैसला किया था कि चाहे उसके अम्मा-बाबूजी उसका ब्याह करा दें पर वह खुद को कभी भी विवाहिता नहीं मानेगी।

7

इधर प्रतिभा के विषय में दिन-रात सोचना, उसके ख्यालों में डूबे रहना, महेंद्रबाबू का रोज का काम हो गया था। वे कल्पना करते—वो उनके लेख पढ़ती होगी, पढ़कर क्या सोचती होगी। उनका मन होता कि प्रतिभा से अगर मुलाकात होती तो वे उस विषय पर उससे बातें करते। उसके गले की मीठी आवाज सुनते, उसे निहारते…। सोचते-सोचते वे भाव-विभोर हो उठते। कल्पनालोक से निकलकर वे कई बार सोचते—क्या इन कल्पनाओं को साकार नहीं किया जा सकता ?

वे बड़ी दुविधा में पड़ गए थे। वे जानते थे प्रतिभा ही क्यों और भी किसी लड़की से वे विवाह नहीं कर सकते हैं। यह रुकावट उनकी खुद की उत्पन्न की हुई थी। महेंद्रबाबू ने अपने कॉलेज में एक संगठन बनाया था। उसका नाम था 'वीर समाज'। उसका उद्देश्य देश में फैले कुसंस्कारों, अशिक्षा, रूढ़ियों और मूढ़मान्यताओं से लड़ना था। इस रास्ते पर चलने के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को भी इसके सदस्य राजी थे। आवश्यकता पड़ने पर जीवनदान भी दिया जा सकता है, यह बात सभी सदस्य मानते थे। इस रास्ते पर चलने के लिए उन सबने कुछ नियम बनाए थे जैसे, पहला—पढ़-लिखकर कोई भी नौकरी नहीं करेगा, दूसरा—कोई विवाह नहीं करेगा क्योंकि इससे उन्हें फिर उन्हीं पुरानी प्रथाओं में घुसकर जीना पड़ेगा।

एक बार 'वीर समाज' की साप्ताहिक गोष्ठी में महेंद्रबाबू ने विवाह के नियम को लेकर एक नया सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि हम लोगों ने इस समाज में प्रचलित विवाह-प्रथा के विरूद्ध जो आंदोलन छेड़ा है कि 'हम विवाह नहीं करेंगे' वास्तव में वह कोई बड़ी वीरता नहीं है। वास्तव में 'हम असवर्णों से



विवाह करेंगे।' यही हमारा सिद्धांत होना चाहिए। जबरदस्त तर्क-वितर्क के बाद अंत में यह निर्णय लिया गया कि विवाह न करना ही अच्छा है पर जो बिलकुल भी विवाह न कर रह नहीं पाएंगे वे असवर्ण विवाह करेंगे और दहेज की बात तो

वे अपनी जुबान पर लाएंगे ही नहीं। यह नया नियम महेंद्रबाबू के अनुकूल ही था क्योंकि प्रतिभा के साथ उनका विवाह असवर्ण विवाह के अंतर्गत ही आता। वे खुद बनिया थे और प्रतिभा क्षत्रिय घर की लड़की थी। अब आगे उनकी क्रियापद्धति क्या होनी चाहिए वे कुछ निश्चित नहीं कर पा रहे थे। उन्होंने कई प्रेम कविताएं उसी मासिक पत्रिका में छपवाईं जिसके ग्राहक उनके पिता भी थे। पर दुख की बात तो यह थी कि उनके पिता पत्रिका पढ़ना तो दूर उसे खोलते तक न थे।

बी.ए. पास करने के बाद उनके लिए दो तीन जगह से रिश्ते आए थे। महेंद्रबाबू को जब यह पता चला कि उनके पिता दहेज की मांग कर रहे हैं तो वे बहुत गुस्सा हुए। उनके पिता का कथन था कि जो उनके बेटे को विलायत भेज कर पढ़ाएगा वे उसी घर में अपने बेटे का ब्याह करेंगे। विवाह से संबंधित अनेक लेख वे लिख चुके हैं, वो जरूर उनके पिताजी की निगाहों में पड़े होंगे पर वे हैं कि अपने बेटे से उन्होंने एक बार राय तक न ली। अंत में उन्होंने निर्णय किया कि अपने पिताजी को रास्ते पर लाने का एक ही तरीका है कि वे घोषणा कर दें कि वे विवाह नहीं करेंगे। बस, इससे उनके माता-पिता बाद में आकुल-व्याकुल होकर उनसे बात करेंगे और इस तरह वे अपनी मर्जी से विवाह कर सकेंगे। उन्होंने तुरंत इसी संबंध में अपने पिता को एक चिट्ठी लिख डाली। पत्र पाकर उनके पिता जरा भी विचलित न हुए बल्कि उन्होंने सोचा कि कुछ समय के लिए इस संबंध में चर्चा न करना ही उचित होगा। पर विभिन्न जरियों से वे अपने बेटे की गतिविधियों पर नजर रखे हुए थे।

8

नवीन, जिन्होंने 'वीर समाज' की गोष्ठी में विवाह न करने के पक्ष में तर्क-वितर्क किया था, वे थे महेंद्रबाबू के सहपाठी और रामहरिबाबू के बेटे। उन्होंने उस दिन केवल बातों-बातों में ही 'विवाह न करना अच्छा है' नहीं कहा था वे वास्तव में इस उक्ति पर विश्वास करते थे। वे मानते थे कि जब तक इंसान खुद को पूरा संघर्षों में नहीं झोंक देता तब तक वास्तव में कोई आंदोलन पूरा नहीं हो पाता। और इस रास्ते में सबसे बड़ी बाधा विवाह ही है।

एक दिन अचानक उन्हें अपने पिता का पत्र मिला। उन्होंने लिखा था कि उनका रिश्ता तय हो गया है और विवाह की तारीख के दो दिन पहले उन्हें घर पहुंचना है। पत्र पढ़कर उन्हें बहुत दुख हुआ। अपने भविष्य को लेकर उन्होंने न जाने कितनी कल्पनाएं की थीं। क्या वे सब ध्वस्त हो जाएंगी ? एक अनपढ़, गंवार लड़की उनके जीवन में आकर उनसे संसार का सारा सुख, स्वतंत्रता मांगेगी। यदि वे उसकी मांगों को पूरा न कर पाएंगे तो उनका दांपत्य-जीवन कटु हो जाएगा। और यदि वे उसकी मांगों को पूरा करने में लग गए तो वे गांव के साधारण जमींदार ही रह जाएंगे। जीवन में वे और कुछ नहीं कर पाएंगे। पर अपने पिता की बात को वे ठुकराएं कैसे ?

अंत में उन्होंने अपने पिता को एक पत्र लिखा। उसमें उन्होंने लिखा कि उन्होंने अपने भविष्य के लिए अनेक योजनाएं बनाई है पर ब्याह उसमें रुकावट बन जाएगा। ब्याह के लिए तो अभी उमर पड़ी है। इतनी जल्दबाजी की क्या आवश्यकता है ? पत्र तो उन्होंने लिख दिया था पर उनके मन के अंदर से जैसे उन्हें कोई कह रहा था कि पिताजी कदापि नहीं मानेंगे। तो फिर क्या

होगा ? क्या पिताजी की आज्ञा की अवमानना की जा सकती है ? ब्याह तो हो ही जाएगा पर जीवन भी तो बरबाद हो जाएगा। यह विचार जैसे-जैसे उनके मन में दृढ़ होता जा रहा था वे स्वयं को उतना ही कमजोर और असहाय महसूस कर रहे थे।

9

नवीन अपने मन की सारी बातें प्रकाश के सामने निःसंकोच खोल देते थे। और आज जब उनका विवाह उनके आदर्शों से टकरा रहा था और उनकी भविष्य की योजनाओं को डुबाने में लगा था तो उन्होंने अपने मित्र की राय लेना अत्यावश्यक समझा। विप्लव विज्ञान के धुरंधर व्यक्ति के रूप में चारों ओर प्रसिद्ध हैं। इस धरती पर जिस युग में भी जो-जो क्रांतियां हुई हैं उनका विप्लव ऐसे वर्णन करते हैं जैसे खुद उन क्रांतियों में उन्होंने सक्रिय हिस्सा लिया हो। इसके अलावा बाढ़, अकाल आदि होने पर वे जिस तत्परता के साथ लोगों की सेवा करते हैं उससे वे लोगों के अति आत्मीय बन गए थे। नवीन के अलावा कॉलेज के दूसरे अनेक छात्र भी उनके भक्त हो गए थे। महेंद्रबाबू वो पहले व्यक्ति थे जिन्होंने उन्हें 'वीर समाज' के विषय में सबसे पहले बताया था।

प्रकाश के घर पहुंचकर उन्होंने देखा कि वे घर पर नहीं हैं। उनके नौकर ने बड़े बेचैन होकर कहा कि आज वे सुबह से ही न जाने कहां गए हैं। आज तो वे दोपहर के खाने पर भी घर नहीं आए। नवीन बाबू वहीं बैठकर उनका इंतजार करने लगे। वे बैठकर उन तपस्वी जैसे प्रकाशबाबू के बारे में सोच रहे थे, जिसका अपना खुद का घर संसार नहीं है पर फिर भी वह इस देश की गरीब जनता के लिए कितना रो सकता है।

एक बार कही हुई उनकी बात उन्हें याद आ रही थी। उन्होंने कहा था, "पराधीनता केवल हमारी ही शत्रु है ऐसी बात नहीं है। एक हाकिम से लेकर हर भूखा गरीब आदमी इस देश का अपना है। सभी हमारे अपने हैं, भाई हैं पर कोई भी किसी का मुंह देखने को तैयार नहीं है। ऐसे ही निर्जीव व्यवहार का फायदा उठाकर समुद्र किनारे की नमकीन जमीन में नारियल के ऊंचे-ऊंचे पेड़ बढ़ने-सा अत्याचार भी सिर उठाए जा रहा है। और इसके फलस्वरूप मनों की निर्जीवता भी बढ़ी जा रही है। ये तो एक गोरखधंधा मचा हुआ है। इसे दूर करने के लिए कर्मठ देश-भक्तों की आवश्यकता है...।"

वे इन विचारों में डूबे हुए थे कि अचानक उनके कानों में सुनाई दिया, "क्यों भाई नवीन, कैसे आना हुआ ?" उसके बाद सामान्य औपचारिक कुशल-क्षेम के पश्चात् प्रकाश गंभीर स्वर में कहने लगे थे, "नवीन, जिस समय का मुझे इंतजार था, वह आ गया है। महात्मा गांधी एक विशाल जन-आंदोलन करने जा रहे हैं। इससे सौ वर्षों से दबी, पिसी भारत की जनता में आशा का संचार होगा...। इसके लिए तुम और तुम्हारे दोस्त सब तैयार हो न ?"

नवीन ने इस आंदोलन के बारे में पहले भी सुना था। पर आज प्रकाश के आह्वान पर वह भाव-विभोर हो गया था। इसके बाद नवीन ने कुछ चिंतित होकर प्रकाश की ओर देखते हुए कहा था, "अवश्य, वही तो मेरे जीवन का आदर्श है।"

10

कुछ दिनों के बाद पूरे भारत में एक आंदोलन छिड़ गया था। उसके अनुसार, अंग्रेज सरकार के साथ असहयोग करना होगा।

उनके स्कूल उनकी कचहरी, उनकी पदवी सब कुछ छोड़ देना होगा। विशेषकर छात्रों से स्कूल, कॉलेज छोड़ देने का आह्वान किया गया था। इस हाल में 'वीर समाज' के नेता महेंद्रबाबू क्या करेंगे, उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वे एक प्रसिद्ध वकील बनेंगे, सभाओं में जाकर भाषण देंगे, पत्र-पत्रिकाओं में अच्छे लेख लिखेंगे, अपनी मनपसंद जीवनसंगिनी के साथ कटक शहर में मकान बनाकर रहेंगे इन सबके अलावा एक देशभक्त, समाज-सुधारक और एक युग प्रवर्त्तक के रूप में भी उनका खूब नाम होगा, ये ही सब सपने थे महेंद्रबाबू के। पर उन्हें लगा जैसे इस आंदोलन की बाढ़ में उनके मन का सब कुछ बह



जाएगा। तो क्या इस बाढ़ के प्रवाह से दूर रहकर वे एक नगण्य, निंदित और जनता में सबसे अलग-थलग जीवन बिता पाएंगे ? इस द्वंद्व में पड़कर वे बेचैन हुए जा रहे थे।

प्रकाश के सुझाव से 'वीर-समाज' की एक बैठक बुलाई गई, उसमें प्रकाश ने भी हिस्सा लिया। उस बैठक में चर्चा का केंद्र-बिंदु था कि 'वीर-समाज' इस आंदोलन में भाग लेगा या नहीं। महेंद्रबाबू ने बीच में आपत्ति उठाई और बोले कि हमारा देश के प्रति जैसा कर्तव्य हैं वैसे ही हमारा, समाज और माता-पिता के प्रति भी कर्तव्य बनता है। अतः उन्होंने परामर्श दिया कि इन सब बातों के लिए और कुछ दिन इंतजार कर लिया जाए तो अच्छा है। पर प्रकाश ने सबकी ओर देखते हुए कुछ गंभीर होते हुए कहा, "इंतजार का मतलब है कि खुद कुछ निर्णय न लेना, धारा में तिनके-सा बह जाना और भाग्य कहकर सब स्वीकार कर लेना। पर यह तो एक पुरुष को शोभा नहीं देता···।" और इस तरह कहते हुए उन्होंने सभी को आह्वान किया कि नव-प्रभात की बेला में नव-सूर्य की स्वर्णिम रश्मियों सभी आकर भीगें। तभी नवीन बोल पड़े, "मैं अपना संकल्प सभी को बता देता हूं, कि मैं पढ़ाई छोड़कर इस आंदोलन में अवश्य कूदूंगा।" बाकी सभी चुप थे। बस इस तरह 'वीर-समाज' की बैठक समाप्त हो गई थी। नदी की बाढ़ से बांध के समीप का यह पहला घर था जो टूटा था।

11

सन् 1921 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में सारे देश में जो भयंकर तूफान मचा था, उससे अनेक लोगों के जीवन में हलचल पैदा हो गई थी। उनमें से महेंद्रबाबू भी एक थे। महेंद्रबाबू अपनी

बिखरती, टूटती अभिलाषा को समेटने की कोशिश में लगे थे। उन्हें उस समय की परिस्थिति पर बहुत क्रोध आ रहा था। विशेषकर तब, जब कॉलेज के छात्रों और अध्यापकों की दृष्टि उन्हीं पर लगी हुई थी कि वास्तव में ये युवानेता किस रूप में इस स्वतंत्रता संग्राम में कूदेगा।

उनके मन की इस कशमकश की हालत में एक दिन अचानक उनके पिता उनके पास पहुंच गए। इस बीच उन्हें जिले के मजिस्ट्रेट से एक पत्र मिला था। उसमें लिखा था कि उनका लड़का एक सरकार विरोधी आंदोलन में भाग लेने को तैयार है। साथ ही उस पत्र में चेतावनी भी दी गई थी कि वे अपने पुत्र को काबू में रखें अन्यथा उसके भविष्य के साथ-साथ उनके खुद के ऊपर भी परेशानी आ सकती है। उन्होंने पत्र बेटे को देते हुए क्रोधित स्वर में कहा, "यह क्या है ? तू यहां पढ़ने आया है या आवारा लड़कों के साथ आवारागर्दी करने ?" जब महेंद्रबाबू पत्र पढ़ रहे थे, उस समय भी उसके पिता धाराप्रवाह बोलते चले जा रहे थे, "मैं एक डिप्टी हूं। एक डिप्टी का बेटा होते हुए भी तेरे नाम पर यह रिपोर्ट ! और एक आध साल के बाद तेरे लिए नौकरी रखी है इसके लिए मैंने पहले से ही बोल रखा था पर इस समय में यह रिपोर्ट ? अरे इससे तेरा जीवन बर्बाद हो जाएगा और मेरे लिए भी आफत आएगी।" उसी दिन महेंद्रबाबू को साथ लेकर वे पुलिस इंस्पेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट के पास गए। उन्हें अपने बेटे के बारे में समझाया कि यह पूर्णतः निर्दोष है। उन्होंने अपने बेटे का नाम कटक कॉलेज से कटवा दिया और उसे अपने साथ अपनी नौकरी की जगह पर ले गए। इस घटना से महेंद्रबाबू का मनोबल इतना टूट गया कि फिर दुबारा जुड़ ही न सका।

12

जनार्दनबाबू को जिला मजिस्ट्रेट के पास से जैसा पत्र मिला था ठीक वैसा ही पत्र रामहरिबाबू को भी मिला था। चूंकि अपने बेटे को नौकरी पर लगाना उनका उद्देश्य न था इसलिए वे उस पत्र से ज्यादा विचलित न हुए थे। अपने बेटे की पहली चिट्ठी पाकर बस उन्हें यही डर था कि वह ब्याह नहीं करना चाहता। कहीं वह घर छोड़कर सदा के लिए ही न चला जाए। अब इस मजिस्ट्रेट की चिट्ठी से उन्हें एक नई राह सूझ गई थी। उन्होंने वह चिट्ठी देकर एक आदमी को, अपने बेटे को बुला लाने के लिए कटक भेजा। पर उस समय तक नवीन अपनी पढ़ाई छोड़कर पूरी तरह से असहयोग आंदोलन में कूद पड़े थे। सभाएं, जुलूस, विदेशी कपड़ों की दुकानों के आगे धरने लगातार होते चले गए और वे बढ़-चढ़कर उसमें हिस्सा लेने लगे थे। इसी समय पिताजी का बुलावा उनके पास पहुंचा। उन्हें भीतर से ऐसा लग रहा था कि जरूर उन्हें पिताजी इस आंदोलन में सक्रिय रूप में भाग लेने की अनुमति नहीं देंगे। अब वे क्या करें ? वे चिंतित हो गए थे। पहले उन्होंने सोचा कि खुद जाकर अपने माता-पिता को समझा-बुझा कर उनसे सहर्ष अनुमति ले आना ही ठीक होगा पर बाद में उन्होंने सोचा कि पत्र द्वारा भी वे सब कुछ अच्छी तरह समझा सकते हैं। वे अभी इस ऊहापोह से उबरे भी न थे कि उनके पिता रामहरिबाबू वहां पहुंच गए।

रामहरिबाबू के अचानक वहां पहुंच जाने का कारण था कि अभी तक उनके लड़के ने गांधीवादियों के साथ मिलकर जो-जो काम कर डाले थे उससे उनकी जमींदारी छिन जाने का डर था। साथ ही उनके बेटे को जेल भी हो सकती थी। उन्होंने अपने बेटे का कोई भी तर्क-वितर्क न सुना और उसे तुरंत अपने साथ

चलने का आदेश दे डाला। अंत में मजबूर हो नवीन अपने पिता के पीछे-पीछे गांव की ओर चल दिए थे। रामहरिबाबू पहले एक दो दिन तो चुप रहे पर बाद में उन्होंने धीरे-धीरे अपने बेटे को समझाना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा—"अरे हमारे पास क्या नहीं है ? अब तुम्हारी जितनी पढ़ाई हो गई उतनी ही बहुत है बस अब घर बसाने की बात सोचो। बहुत से बक-झक करनेवालों के साथ रहने से क्या अंग्रेज-राज चला जाएगा ? और फिर ये सब एक जमींदार के बेटे को करना चाहिए क्या ? अरे हमारी जमींदारी भी तो उन्हीं अंग्रेजों की कृपा पर टिकी है, ये छिन गई तो हमारी इज्जत चली जाएगी और फिर अंत में हमें लोगों के खेतों में काम कर जीना होगा।" आदि-आदि। नवीन पिता की बातें चुप हो सुनते और सोचते—जीवन क्या जमींदार बने रहने के लिए मिला है ? पर उनके मन की बात उनके मन में ही रह जाती। क्योंकि अपने पिता को जवाब देने की आदत और साहस उनमें नहीं था।

13

रामहरिबाबू ने अपने जीवन-भर के ज्ञान का उपयोग अपने बेटे को समझाने में लगा दिया था ताकि वह वैराग्य छोड़ घर-संसार की ओर लौट आए, उसमें रम जाए। पर अंत में उनके दिमाग में एक ही विचार जोर पकड़ रहा था कि ब्याह कर देने से ही उनका बेटा रास्ते पर आएगा।

इस बीच रुपयों का बंदोबस्त न हो पाने के कारण सनातनबाबू ने खबर भेजी कि विवाह की जो तिथि निर्धारित थी उसे थोड़ा और आगे बढ़ा दिया जाए। उनके अनुरोध पर विवाह की तारीख और पंद्रह दिन आगे बढ़ा दी गई। आखिर

जमींदार के घर ब्याह था सो किसी बात की कमी न थी। नवीन को भी पता चल गया था कि उनका विवाह होनेवाला है पर उन्हें बताने की किसी ने भी जरूरत नहीं समझी थी। जैसे-जैसे विवाह की तैयारियां बढ़ रही थीं उनके मन का दुख भी वैसे ही बढ़ा जा रहा था। एक कमजोर आदमी जैसे अपने काम को पूरा करने के लिए भगवान की ओर ताका करता है वैसे ही नवीन मन ही मन सोच रहे थे कि काश यह शादी टूट जाती। पर भगवान भी कभी कमजोर आदमी की मदद करते हैं भला ?

और अंत में वह दिन भी आ गया था जब नवीन घोड़ी पर सवार हो बारात ले, लड़की वालों के घर पहुंच गया था। विवाह के बाद भी वे किस तरह अपना जीवन देश के स्वतंत्रता संग्राम में लगाएं, यही बात सदा सोचते रहते थे पर कोई मार्ग उन्हें नहीं सूझ रहा था।

लड़कीवाले बड़े गरीब हैं जानकर नवीन का मन दुखी हो गया था क्योंकि गरीब घर की लड़की आकर अपनी सभी मनोकामनाएं पूरा करना चाहेगी। लड़की के पिता से बातचीत करने से उन्हें पता चल गया था कि वे गांव के जाने-माने दलाल हैं तो उनका मन और भी दुखी हो गया था। यदि उनका ब्याह ही करना था तो क्या किसी सभ्रांत घर की शिक्षित कन्या से नहीं हो सकता था क्या ? यह सोच-सोचकर उन्हें अपने पिता पर गुस्सा आ रहा था। इधर प्रतिभा की भी यही हालत थी। उसे भी अपने माता-पिता और समाज के ऊपर क्रोध आ रहा था पर कुछ कहने की दृढ़ता और हिम्मत उसमें नहीं थी सो वह वही सब करे जा रही थी जो-जो उसे कहा जा रहा था।

ठीक समय पर विवाह हुआ। 'यथा रावणस्य मंदोदरी....' मंत्रोच्चार किया गया। प्रतिभा के हाथ के स्पर्श से नवीन की नस-नाड़ियों में एक बिजली-सी दौड़ रही थी। उनके हृदय के

किसी अज्ञात कोने से एक अस्पष्ट-सा स्वर उन्हें लगातार सुनाई दे रहा था कि 'ये तुम्हारी जीवनसंगिनी है, इसे अपना बना लो।' इधर प्रतिभा के मन में भी एक नई अनुभूति संचरित हो रही थी। अब ये चाहे बुरा हो या भला, अब तो वह जीवन भर के लिए इस व्यक्ति के साथ बंध गई है। बस धीरे-धीरे उसके मन की भावनाएं अपने पति की ओर बहने लगी थीं।

14

ब्याह हो चुका था। नवदंपति का नया संसार शुरू हो चुका था। पर सुख कहां था इस संसार में ? एक नाग को पिटारी में जबरदस्ती बंद कर देने से वह जैसे छटपटाता है नवीन की हालत बिलकुल वैसी ही हो रही थी। बस अंतर इतना था कि यह पिटारी खुद उन्हीं की बनाई हुई थी और वे सपेरा भी खुद ही थे। उधर प्रतिभा की हालत भी विचित्र-सी हुई जा रही थी। उसकी सास उसकी मां से भी ज्याद स्नेही और कोमल दिलवाली होंगी यह तो उसने कभी सोचा भी न था। ससुराल आने के ठीक दो दिन बाद ही रामहरिबाबू की पत्नी ज़ाह्नवी देवी ने उसे पास बिठाया और पुचकार कर कहने लगी थीं, "बेटी तू लक्ष्मी बन मेरे घर आई है। तुझे जो भी चाहिए मुझसे दिल खोलकर मांग लेना। मैं भी तेरे जैसे एक गरीब घर से आई थी और मेरी सास ने मेरी जो छीछालेदार की थी वो मेरा दिल ही जानता है। पर तेरी सास तो गरीब घर के दुख को जानती है सो तुझे चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। बेटी, नवीन ही मेरा सब कुछ है। वो दुनियादारी कुछ भी नहीं जानता है। वह कहीं भी कुछ भी करे पर यदि तू पतवार ठीक से पकड़े रहेगी तो नाव ठीक से चलती रहेगी।" इधर सास के इतने



मिठास-भरे व्यवहार के साथ उसका पति उसके प्रति इतना उदासीन रहेगा यह तो उसने सोचा ही न था। नवीन उससे बिलकुल बातचीत नहीं करते थे। वह भी नवीन से कुछ दूर-दूर रहने लगी थी।

जाह्नवी देवी भी गौर कर रही थीं कि बहुत दिन हुए नवीन भी घर पर सोने नहीं आ रहा है और प्रतिभा से बात भी नहीं कर रहा है। इसलिए एक दिन अपने बेटे को बैठक में पढ़ता देखकर उन्होंने बात शुरू की थी, "बेटा, तू घर पर सोने क्यों नहीं आता ?" नवीन एकदम चिढ़कर उठ पड़े थे, बोले, "मां तुम जाओ यहां से, मुझे यहां कोई खुशी नहीं होती। मैं कहीं नहीं जाऊंगा, यहीं पड़ा-पड़ा मर जाऊंगा।" जाह्नवी देवी बड़े ही दुख और विस्मय भाव से उसे देखे जा रही थीं। उनके बेटे को आखिर हुआ क्या है ? यह अपनी बहू से पूछने पर वह उनकी गोदी में सिर रखकर बिलखने लगी थी। तब जाह्नवी देवी ने जबरदस्ती उसे अपने बेटे को बुलाने भेज दिया। किंतु जब प्रतिभा अपनी सास की बात मानकर अपना सारा मान-अभिमान ताक पर रखकर नवीन को मनाने गई तो वह उबल पड़ा। बोला, "यहां क्यों आई है ? मुझे खाएगी क्या ? जा–चली जा यहां से ?"

प्रतिभा बहुत अपमान, दुख और क्रोध के भाव लिए वहां से लौट आई थी। वह अपने बिस्तर पर लेटकर रोने लगी थी। जाह्नवी देवी की आंखों में भी आंसू आ गए थे, पर वे समझ नहीं पा रही थीं कि उनका बेटा ऐसा व्यवहार क्यों कर रहा है।

15

नवीन रात भर नहीं सोए थे। आज की परिस्थिति में उनका क्या कर्त्तव्य होना चाहिए, यही सोचते-सोचते उनकी आंखों की नींद उड़ गई थी। प्रकाश की बात उन्हें याद आ रही थी। एक बार उसने कहा था, "जिस बात को तुम ठीक समझते हो उसे मां-बाप के विरोध करने पर भी कर पाओगे ?" बिलकुल ठीक

ही तो है। माता-पिता का विरोध करना जरूरी है, क्योंकि पुरातन के साथ जब तक नूतन का संघर्ष न हो तब तक क्रांति शब्द का कोई अर्थ ही नहीं होता। मां के पेट से बच्चे का जन्म भी तो उसके संघर्ष का ही परिणाम होता है। इधर प्रतिभा के सौंदर्य या अच्छे व्यवहार ने उसके दिल को नहीं छुआ था, ऐसी बात भी न थी। पर उनके मन में यह दृढ़ भावना थी कि क्रांति और विवाहित जीवन ये परस्पर विरोधी बातें हैं। इसके अलावा वे सोच रहे थे कि उनके बिना यहां उनकी पत्नी को कोई तकलीफ नहीं होगी। इसलिए उसे छोड़कर जाने में उसका कोई नुकसान नहीं होगा। इस तरह से अनेक बातों को सोचने के बाद उन्होंने निश्चय किया कि वे घर छोड़कर चले जाएंगे। फिर उन्होंने सोचा, कि कहीं पिता के सामने जाने से उनके अंदर की कोई कमजोरी न बाहर आ जाए इसलिए रातों-रात घर से चले जाना अच्छा होगा। और बस, एक दिन जब रात का अंतिम पहर बाकी था वे कुछ कपड़े, एक शाल और कुछ रुपए, जो उनके पास थे, लेकर घर से निकल गए थे।

अगले दिन सुबह जब पता चला कि नवीन घर पर नहीं हैं और न ही कहीं उनका पता चल रहा है तो रामहरिबाबू गुस्से और दुख से पागल हो गए। वे क्या करें, उन्हें कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। उन्हें अपनी पत्नी और बहू के ऊपर बहुत गुस्सा आ रहा था। फिर भी उनका सांसारिक अनुभव यही कह रहा था कि न तो उनका बेटा पागल हुआ है और न ही वह आत्महत्या करनेवालों में से है। वह जरूर गांधीवादियों में घुस गया होगा। कोई बात नहीं। कल यदि उनकी जमींदारी पर आंच आएगी तो वे अपने पुत्र को अपनी जमीन-जायदाद से बेदखल कर देंगे, और यदि उनकी जमींदारी के ऊपर कोई आंच नहीं आती तो उन्हें क्या, वो घूमता रहे जहां घूमना है।

प्रतिभा तो अपना मुंह भी किसी को दिखा नहीं पा रही थी। उसे लग रहा था कि कहीं लोग ये न कहने लगें कि सारे फसाद की जड़ यही है। इसी के कारण नवीन घर छोड़कर चला गया है। साथ ही वह मन ही मन बहुत दुखी भी थी। वह सोच रही थी कि वह फूल तोड़ने चली थी पर निदल तक हाथ पहुंचते ही उसकी उंगुली में कांटा चुभ गया। फिर भी जाह्नवी देवी उसे बराबर सांत्वना दे रही थीं कि उनका बेटा कभी भी बुरा काम नहीं कर सकता, जरूर उसका मन किसी कारण से टूट गया है। वो जहां भी गया है एक दिन लौट आएगा। जब बहू मेरे पास है तो बेटा जरूर आएगा।

16

नवीन ने घर छोड़ दिया था और रेलवे स्टेशन पहुंच गए थे। रास्ता कैसे कट गया, वे जान भी न पाए थे। बस वे मन ही मन पिताजी के ऊपर, प्रतिभा पर और खुद अपने ऊपर भी गुस्सा हुए जा रहे थे। हां बीच-बीच में अपने जीवन के उज्ज्वल भविष्य का सपना सोचकर उनकी गति बीच-बीच में धीमी हुई जा रही थी। रेल में तृतीय श्रेणी में बैठकर अनेक चिंताओं के भंवर में डूबते-उतराते वे कटक स्टेशन पहुंच गए थे। रेल टिकिट लेने के बाद अब उनके पास इतने पैसे नहीं थे जिससे कि वे तांगा कर सकते। और वैसे यहां तांगा भी नजर नहीं आ रहा था। सो वे पैदल चलकर ही स्वराज आश्रम तक आ गए थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि सारी दुकानें बंद हैं। सारा शहर सुनसान है। कहीं-कहीं पर पुलिस कांस्टेबल लाठियों के जोर पर दुकानदारों को धमकी देकर दुकानें खुलवाने पर जोर दे रहे थे, पर कोई भी उनकी धमकी से नहीं डर रहा था। यह सब देखकर

गर्व से उनका सीना चौड़ा हुआ जा रहा था। वे मन ही मन सोच रहे थे कि सचमुच 1857 के सिपाही विद्रोह के बाद यही 1921 का असहयोग आंदोलन ही भारत का द्वितीय स्वाधीनता संग्राम है। उस समय कुछ राजा, नवाब और उनके सैनिकों आदि ने विद्रोह किया था, पर इस बार तो सारा देश ही विद्रोह कर रहा है। वे मन ही मन अपनी सारी शक्ति और सारा उत्साह इस आंदोलन में झोंक देने की बात सोच रहे थे।

आश्रम पहुंचकर उन्हें पता चला कि प्रकाश ही इस समय आश्रम का संचालक है। इससे वे और भी खुश हो गए थे। आश्रम में लगभग डेढ़ सौ लोगों की चहल-पहल थी। उनमें से कुछ लोग अफीम-गांजा तथा विदेशी कपड़ों की दुकानों के आगे धरना देने जा रहे थे। बाकी कुछ जोर-जोर से राष्ट्रीय गीत गा रहे थे और कुछ भोजन पका रहे थे। सभी तो सत्याग्रही और संग्रामी थे इसलिए कोई भी किसी का परिचय पूछने की आवश्यकता महसूस नहीं कर रहा था। नवीन प्रकाश से मिलने को उत्सुक थे। पर पूछने पर पता चला कि प्रकाश प्रायः आश्रम में न के बराबर ही रहते हैं। सुबह-सुबह ही निकल जाते हैं और रात को नौ बजे के लगभग लौटते हैं। वे कहां खाते हैं, क्या करते हैं, कोई नहीं जानता।

17

उस दिन प्रकाश को लौटने में रात के लगभग बारह बज गए थे। नवीन को देखते ही बड़ी खुशी से उन्होंने उसे गले लगा लिया था। बोले, "अरे, मैं तो तुम्हारी राह देख रहा था।" थोड़ी देर के बाद वे फिर बोल उठे, "मैं तुम्हारी राह देख रहा था यह मैंने केवल तुम्हारे स्वागत में ही नहीं कहा है। जानते हो,

यदि तुम नहीं आते तो शायद मेरा काम ही नहीं हो पाता।" यह सुनकर नवीन गद्‌गद् हो उठे। कौन-सा काम उन्हें दिया जाना है, यह जानने को वे उत्सुक हो उठे थे। पर काम बताने से पहले प्रकाश और नवीन के बीच कुछ इस प्रकार सवाल और जवाब हुए—

"अच्छा नवीन, इस आंदोलन में शामिल होने के लिए तुम्हें किन-किन समस्याओ का सामना करना पड़ा ?" प्रकाश ने पूछा था।

"समस्या ! कुछ भी नहीं। मैंने तो इस आंदोलन में जुड़ने का पहले से ही निश्चय कर रखा था।" पर प्रकाश को नवीन का यह उत्तर कुछ संतोषप्रद न लगा सो उन्होंने फिर पूछा :

"नहीं, मुझसे बात छुपाने से नहीं चलेगा। मुझे सब साफ-साफ बताओ। तुममें और मुझमें कुछ भी छुपा नहीं होना चाहिए।" और फिर अंत में मन की दुविधा को हटाते हुए आखिर नवीन को कहना पड़ा :

"पिताजी इस बात से राजी न थे। मैं उन्हे बिना बताए चला आया हूं।"

"हूं ! अगर वे तुम्हें वापिस लेने आ जाएं तो ?"

"नहीं, वो नहीं आएंगे।"

"अगर आ जाएं ?"

(बड़ा सोचते हुए उन्होंने धीरे-धीरे कहा) "मैं नहीं जाऊंगा।"

"तुम अविवाहित हो ना ?"

इस प्रश्न का उत्तर नवीन ने बड़े ही दुविधाग्रस्त होकर दिया था, कि वे विवाहित हैं। पर साथ ही कहा था कि विवाह उनकी मरजी से नहीं बल्कि जबरदस्ती किया गया है।

प्रकाश ने मुस्कराकर कुछ समय चुप रहने के बाद पूछा

था, "तुम्हारी पत्नी का इस विषय में क्या विचार है ?"

उत्तर को इधर-उधर घुमाते हुए नवीन ने कहा था, "मेरे ख़याल से विवाह क्रांति के रास्ते में बाधा है। इसलिए मैं विवाह नहीं करना चाहता था। इसलिए आज भी मैं खुद को विवाहित नहीं मानता हूं।"

इस पर प्रकाश ने कुछ गंभीर होकर पूछा था, "फिर तुम्हारी पत्नी का स्थान कहां है ?"

"मैं उसके लिए जिम्मेदार नहीं हूं।"

इस पर प्रकाश धीरे-धीरे कहने लगे थे, "वो तो ठीक है, पर यह तर्क ज्यादा दिन नहीं चलने वाला। एक न एक दिन तुम्हें रुक जाना पड़ेगा और वापस लौटना पड़ेगा। हो सकता है कि आज के इस तर्क के लिए भी तुम्हे उस समय पश्चाताप करना पड़े।"

नवीन ने कुछ ज्यादा ही बेचैन होते हुए जोर से कहा, "नहीं, वैसा कभी नहीं होगा।" और उस दिन रात भर नवीन अपने मन ही मन इसी बात को दोहराते रहे थे—नहीं, नवीन औरत के आकर्षण में फंसकर कभी भी क्रांति से दूर नहीं भागेगा ! प्रकाश को खुद अपने विचार बदलने होंगे।

18

अपने इस नए जीवन को जीते हुए नवीन ने जाना था। निःस्वार्थ त्याग और उसमें मिलनेवाला दुख, सुख, स्वच्छंदता और भोग-विलास से कितना ज्यादा मीठा और आत्मशांति देनेवाला होता है। शुरू-शुरू में दूसरे स्वयंसेवकों की तरह कंधे पर थैला लटकाकर द्वार-द्वार पर मुट्ठीभर अन्न मांगने में उन्हें कुछ अटपटा-सा लगता था। पर बाद में उन्हें समझ में आ गया

था कि इससे उचित परिमाण में अन्न इकट्ठा हो पाता हो या न हो पर इससे हर गरीब और अमीर हृदय की सहानुभूति इस क्रांति के प्रति पता चल जाती थी। वास्तव में यही तो उन क्रांतिकारियों की आवश्यकता थी। इसी तरह शराब की दुकान के आगे धरना देते समय शराबियों की असभ्य भाषा तथा वहीं आसपास रहनेवाली वेश्याओं के अपमान को भी उन्होंने सह लिया था। उन्होंने सोच लिया था कि चाहे जो भी हो पर ये भी तो हमारे भाई-बहन की तरह ही हैं। चाहे इनकी गाली-गलौच सहनी पड़े, पर यदि ये सुधर जाते हैं तो हमारा काम सार्थक हो गया।

प्रकाश नवीन के इन कामों को बड़े गौर से देखते थे। एक दिन उन्होंने नवीन को अपने कमरे में बुलाया और धीरे-धीरे कहने लगे—

"तुम्हें याद है न नवीन, मैंने उस दिन तुमसे कहा था कि मुझे तुमसे काम है इसलिए मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा था ? वास्तव में वह मैं केवल तुम्हारा उत्साह बढ़ाने के लिए नहीं कह रहा था। मुझे तुम्हारी सख्त जरूरत है। तुम इस आश्रम का सारा कार्यभार अपने ऊपर ले लो। क्योंकि मुझे चारों तरफ जाना होगा। चारों ओर जागृति लानी होगी। मैं इस क्रांति के लिए अनेक लोगों को तैयार करना चाहता हूं। वे लोग इस क्रांति की आग को जिंदा रखेंगे, बिलकुल बैटरी में विद्युत की तरह। ऐसा हमें करना होगा ताकि आज का यह उत्साह कल कुम्हला न जाए। जरूरत पड़ने पर पावर-हाउस उन्हें फिर से बिजली की पूर्ति करेंगे। मेरा पूरा विश्वास है नवीन, कि तुम भी एक बड़े पावर हाउस की भूमिका निभाओगे।"

नवीन टकटकी लगाए प्रकाश की ओर देखे जा रहे थे। प्रकाश ने एक कागज पर लिख दिया था, "कटक आश्रम का

कार्यभार अब नवीन के हाथों में होगा। वे ही इस आश्रम के संचालक होंगे—प्रकाश।'' यह कागज प्रकाश ने नवीन की ओर बढ़ा दिया था।

19

'पावर हाउस' वाली बात सुनकर नवीन बहुत उत्साहित हो गए थे। आश्रमवासियों के मन में अधिक से अधिक उत्साह और शौर्य कैसे जगाया जाए, इस दिशा में उनके कदम बढ़ने लगे थे। इसी तरह अनेक योजनाएं बनाते-बनाते उनके मन में एक नई योजना आ गई थी। उन्होंने अपने सहयोगियों से भी परामर्श किया। उनकी योजना थी कि दो दिन के बाद डिप्टी पद के निर्वाचन के लिए जो प्रार्थी जिला मजिस्ट्रेट के पास साक्षात्कार देने आएंगे, उन्हीं के सामने धरना दिया जाए। वे लोग वहां लेट जाएंगे और प्रार्थियों को सरकारी नौकरी करने से मना करेंगे।

निर्दिष्ट दिन योजनाबद्ध कार्य शुरू हो गया। मजिस्ट्रेट साहब अंदर कमरे में बैठ गए थे। एक-एक प्रार्थी को अंदर बुलवाकर साक्षात्कार होना था। सबसे पहले प्रार्थी विनोदबाबू सत्याग्रहियों को पार कर आगे नहीं जा पाए। इस पर मजिस्ट्रेट के आदेश से चपरासी ने अगले नाम की घोषणा की। वह आकर बोला—''विनोदबाबू का नाम खारिज हो गया है। अब महेंद्रबाबू आएं।''

महेंद्रबाबू धीरे-धीरे बरामदे के ऊपर चढ़ने लगे थे। तभी नवीन अचानक सामने आकर दरवाजे के पास लेट गए थे। बोले, ''महेंद्र, हमेशा क्रांति-क्रांति की रट लगानेवाला तू, क्या आज हमसे अलग हो जाएगा ?'' यह बात सुनकर महेंद्रबाबू

पहले थोड़ा दब से गए पर बाद में अचानक गुस्से से बोल पड़े, "नवीन, तूने भी तो विवाह न करने की प्रतिज्ञा की थी ? झूठे !" नवीन के प्रति उपजे क्रोध से ही वे स्वयं को समझा पाए थे कि नवीन तथा उनके साथ वहां पड़े हुए लोगों की 'लौट जाओ, वापिस जाओ' की चीखों से इतना विशाल अंग्रेज साम्राज्य उड़ नहीं जाएगा। यदि वे सोचते हैं कि केवल नारों से वे अंग्रेजों को भगा देंगे तो यह केवल उनकी वाचालता ही होगी। अरे किसी भी स्थिति में रहकर मनुष्य देश-सेवा कर सकता है। पर पहले अपनी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ होनी चाहिए। और फिर उन नारों की परवाह न करते हुए अपने पैरों को झटककर वे आगे बढ़ गए थे।

कुछ समय के बाद वहां पुलिस आ गई थी। उसने अनेक स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस भीड़ को दूर ढकेल कर खुद घेरा बनाकर खड़ी हो गई थी। उस दिन स्वयंसेवक और भीड़ में अनेक लोग केवल नारा लगाने के अतिरिक्त और कुछ भी न कर सके थे। बाद में पता चला कि महेंद्रबाबू के ही विशेष अनुरोध पर मजिस्ट्रेट ने ऐसी व्यवस्था की थी।

20

नवीन के ऊपर महेंद्रबाबू अचानक क्यों फट पड़े थे। इसका कारण शायद वे खुद नहीं दे पाएंगे। पिताजी के आदेश से ही वे डिप्टी की नौकरी के लिए प्रार्थी हुए थे। मजिस्ट्रेट के साथ साक्षात्कार कैसे दिया जाना है, इसी की जानकारी के लिए वे कुछ समय पहले से कटक आ गए थे। इस बीच वे अपने गांव भी गए थे। वहां जाकर उन्हें पता चला कि प्रतिभा का विवाह नवीन के साथ हो गया है। उन्हें बहुत गुस्सा आया कि

पाठशाला के शिक्षक ने भी उन्हें इस विषय में कुछ नहीं बताया। वे जो भी किताब और मासिक पत्रिका सिद्धेश्वर के लिए भेजते थे, वह भी सब बेकार चला गया। फिर उन्हें नवीन पर गुस्सा आया कि उसने पहले उन्हें क्यों कुछ नहीं बताया। अरे हां, उन्होंने भी तो नवीन को अपने मन में प्रतिभा के प्रति उपजे मनोभाव के विषय में नहीं बताया था, तो फिर वह क्यों उन्हें कुछ बताने लगा। अब इस पर उन्होंने कुछ नहीं सोचा। प्रेमगत ईर्ष्या की यही विशेपता नहीं होती कि दूसरे के प्रति अपने क्रोध और विद्वेष का कारण खुद ही ढूंढ़ने पर न मिले। वे जिसे बहुत चाहते थे, उसका विवाह किसी और के साथ हो गया। यह उन्हें अन्याय की तरह लगा। वे आगे सोचते जा रहे थे कि प्रतिभा जैसी लड़की का ब्याह नवीन जैसे नीरस आदमी के साथ हो जाना भी एक अत्याचार ही है। मैं प्रतिभा को ओड़िसा की एक प्रतिष्ठित नारी बना सकता था। पर नवीन के कारण मैं ऐसा न कर सका। उनकी ईर्ष्या का एक कारण और था कि जब वे छात्रनेता थे तो उस समय नवीन उनके पीछे-पीछे एक अनुचर की भांति डोलता रहता था। पर आज वे इस आंदोलन में हिस्सा न ले पाने के कारण वह खुद अगुआ बन बैठा है। बस इसी तरह ईर्ष्या और क्रोध के अलावा अपने पूर्व मित्र के प्रति उनके हृदय में और कोई भाव न थे।

21

उस दिन मजिस्ट्रेट के सामने नवीन तथा अन्य स्वयंसेवकों ने जो धरना दिया था उसी के फलस्वरूप नवीन को एक साल का सश्रम कारावास का दंड मिला था। बाकी सभी स्वयंसेवकों को बीस-बीस बेंत की मार की सजा मिली थी। 'तुम स्वयं को दोषी

मानते हो या निर्दोष' यह न्यायाधीश के पूछने पर नवीन ने बड़े ही दृढ़ और गंभीर स्वर में कहा था, "अपने देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए किया गया कार्य यदि अपराध कहलाता है तो मैं एक अपराधी हूं।" उनका बार-बार यह निर्भीक उत्तर सुनकर, कचहरी में खड़ी भीड़ के मन में भी स्वतः ही एक निर्भीकता का भाव हिलोरें लेने लगा था। वे सब अचानक 'महात्मा गांधी की जय !' बार-बार चिल्लाने लगे थे। न्यायाधीश ने जब उस भीड़ को बाहर चले जाने का आदेश दिया तो वे सब और भी जोर-जोर से महात्मा गांधी की जयकार करने लगे थे।

दंडादेश लेकर नवीन को कटक जेल की ओर ले जाने लगे। जेल के फाटक के बाहर तक पहुंचकर बाहर की दुनिया से विदाई-सी लेते हुए उन्होंने चारों ओर देखा। उनका हृदय रो रहा था। उन्हें लग रहा था जैसे अपने किसी प्रिय मित्र से बिछड़े जा रहे हों। चारों ओर वही चिर-परिचित दृश्य थे—तांगे चल रहे थे, साइकिल की दुकान पर टायर में हवा भरी जा रही थी, सामने एक भिखारी भीख मांग रहा था। तभी उन्होंने देखा कि प्रकाश के नेतृत्व में एक विराट जुलूस राजपथ से जा रहा था। उस जुलूस की विशेषता यह थी कि उसमें स्त्रियों की संख्या बहुत ज्यादा थीं, साथ ही वे लोग 'महात्मा गांधी की जय' के साथ 'नवीनबाबू की जय' के नारे भी लगा रहे थे। प्रकाश उस जुलूस के सामने एक वीर की तरह चल रहे थे। इस दृश्य को देखकर नवीन एक क्षण के लिए आत्म-विभोर हो गए थे। पर बाद में उनके मन में विषाद की एक धारा दौड़ गई थी, क्योंकि वे सोच रहे थे कि उन्हें इन गतिविधियों से अब एक साल तक दूर रहना होगा। एक गहरी सांस लेकर वे जेल के अंदर चले गए थे।

22

जेल में नवीन अपने नए रूप को देखकर खुद ही अचरज कर रहे थे। आधी जांघों तक ढका जांघिया, बिना बाहों का कमर तक कुर्ता और दोनों के बीच-बीच में काली-काली धारियां, यही वहां की पोशाक थी। गले में एक इंच मोटी तिकोनी लकड़ी की छोटी सी तख्ती लटक रही थी। उस पर कैदी नंबर तथा सजा की अवधि लिखी हुई थी। वह तख्ती पतली-सी लोहे की तार से सभी कैदियों ने गले में लटका रखी थी। अपने इस नए रूप से वे थोड़ा दुखी थे। पर तभी उन्हें लगा जैसे उनके अंदर कोई गरज कर बोल रहा हो—"अरे, यही तो तुम्हारा त्याग है, यही तपस्या है। इसी से तो भारतमाता परतंत्रता की बेड़ियों से छूटकर आजाद होगी।"

एक बार एक-एक करके जेल के दूसरे कैदी नवीन के चारों ओर बैठ गए थे। उनसे पूछने लगे थे—कब गांधी राजा बनेंगे, कब अंग्रेज जाएंगे आदि-आदि। 'स्वराज अवश्य आएगा' ऐसी दृढ़ आवाज नवीन से सुनकर सभी आश्वस्त हो गए थे। वे लोग नवीन को प्यार से 'स्वराजबाबू' कहकर पुकारते थे। सभी मन ही मन सोच रहे थे। इन स्वराजबाबू को अपनी-अपनी बात पहले ही कह देने से बाद में सजा से छूटने में सरलता हो जाएगी। इसी संदर्भ में किसी ने उन्हें बताया कि कैसे वह आबकारी अधिकारी की आंखों में धूल झोंककर चार महीने तक शराब बनाता रहा और अंत में जब पुलिस उसे पकड़ने गई तो कैसे मात खा गई थी। दूसरे ने बताया कि कैसे वह पुलिस की आंखों में धूल झोंककर डकैती करता रहा था। पर इन दोनों के अलावा बाकियों की बात सुनकर नवीन को आश्चर्य हुआ क्योंकि वे सभी निर्दोष थे और सजा भोग रहे थे। नवीन ने

सभी को सांत्वना दी थी कि स्वराज आने पर कोई निर्दोष दंडित नहीं होगा। न ही गांव के दलाल अपने फायदों के लिए निर्दोषों को सजा दिला पाएंगे। पर उनमें से एक चोर अपराधी राजेंद्र केवल इन दिलासों से संतुष्ट नहीं हुआ। वह बोला कि जेल से छूटकर वह भी नवीन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वराज का काम करेगा। उसकी बात से प्रसन्न होकर नवीन ने उसकी पीठ सहला दी थी। पर इससे अन्य कैदी नाराज हो गए थे। वे कहने लगे थे कि वह तो बहुत बड़ा चोर है। बात धीरे-धीरे बढ़ गई थी, वे आपस में गाली-गलौच पर उतर आए थे। अब तो नवीन को लगने लगा था कि कुछ गालियों की बौछार उस पर भी हो सकती है सो वह अपने कंबल में आंखें मूंदकर कुछ समय के लिए लेट गए थे।

23

सुनसान रात। सभी कैदी सो चुके हैं। केवल एक-दो कुत्ते जेल की दीवार के उस पार बीच-बीच में भौंक रहे हैं।

नवीन लोहे की खिड़की से बाहर की ओर टकटकी लगाकर देख रहे हैं। उन्होंने देखा, जेल के अहाते की अंतिम दीवार के भीतर की ओर जो पीपल का पेड़ है बस वह ही आज रात की चांदनी का आनंद ले रहा है। अकेला-अकेला बिलकुल स्वार्थी की तरह। नवीन के हाथों में हथकड़ी और पांवों में बेड़ी है क्योंकि आज उन्हें जितना धान कूटने को दिया गया था, वे कूट नहीं पाए थे। तभी उन्हें लगा जैसे चांदनी पीपल के पेड़ से हटकर उन्हीं की ओर चली आ रही है। चलो यह इंसान भी मेरा आनंद ले। पर मेरी इस असहाय अवस्था को देख वह मेरा मजाक तो नहीं उड़ा रही है ? नहीं, नहीं, वो तो मेरा स्वागत

कर रही है। चांद के साथ ऐसी प्यार भरी बातें करते-करते उन्हें लगा कि पृथ्वी कितनी सुंदर है पर इंसान एक दूसरे पर अत्याचार कर उसे कितनी असुंदर बना देता है। सात हजार मील की दूरी पर रहनेवाले अंग्रेजों, हमें भूखा-नंगा रखने और हम पर हुकूमत करने का तुम्हें क्या अधिकार है ? तभी अचानक वे चौंक पड़े, उसी कोठरी में सोया एक कैदी 'मारो, मारो, उसे मारो, मारो, मारो…' जोर-जोर से बड़बड़ा रहा था। वे मन ही मन दुखी हो गए थे। क्या इनमें से कोई स्नेह के, परिणय के स्वप्न नहीं देखता ? तभी उन्होंने देखा कि उनके ऊपर जो चांदनी पड़ रही थी, वह खिड़की के उस पार चली गई है। तो वे उस पर गुस्सा हो उठे—यहां मैंने ही तो तुझे चाहा था। तुझे और कोई तो यहां नहीं पूछ रहा था। तू फिर भी मुझे छोड़कर चली गई ? और फिर अचानक हंसकर वे चांद को देखकर कहने लगे—"अरे मानिनी, मना कर रही है मुझसे ? ठीक है मैं अपनी जगह नहीं छोडूंगा। मैं देखूंगा तू कैसे नहीं आती मेरे पास। तू कल जरूर आना। पगली तेरा जोर कितना है मुझे पता है।"

तभी दीवार के उस ओर तांगे की आवाज सुनाई दी। उनका ध्यान बंट गया था। न जाने वे बाहर की दुनिया में कब जाएंगे। अभी तो यहां उन्हें केवल दो महीने, सत्रह दिन हुए हैं अभी एक साल होने में और नौ महीने तेरह दिन बाकी हैं। यह सोचकर वे कुछ निराश से हो गए थे।

24

"बेटी मैं तो किताब पढ़ना नहीं जानती। तू तो अपने पिता के घर से बहुत सारी किताबें लाई है। जरा पढ़ तो मैं भी सुनूं।

अब इस उमर में तो कुछ धर्म की बातें।" यह बात जिस दिन से जाह्नवी देवी ने प्रतिभा से कही है, वह पढ़ने में ज्यादा रुचि रखने लगी है और अपनी सास को पोथी पढ़कर सुनाने लगी है। आधुनिक उपन्यास, कविताएं आदि उन्हें पसंद नहीं है सो केवल पुराण ही वह उन्हें पढ़कर सुनाती है। एक दिन राम वनवास का प्रसंग सुनते-सुनते उन्हें रोना आ गया था। उन्हें लग रहा था जैसे उनके बेटे नवीन को वनवास हो गया हो। न जाने वो कब घर आएगा ?"

नवीन कहां है, क्या कर रहा है, तुम जाकर खोज-खबर लेते क्यों नहीं, बस पहले यही रट लगाए रहती थीं, अपने पति रामहरिबाबू के सामने। पर एक दिन उन्होंने बहुत चिढ़कर उत्तर दिया था—"मुझे नहीं पता वो कहां गया। अरे वो जाएगा कहां। कहीं कटक में गांधीवादियों के दल में घुसा होगा। बिना वहां से मार पड़े क्या वह घर लौटेगा ?" बस उसी दिन से वे अपने पति से कुछ भी नहीं पूछती हैं। पर एक दिन प्रतिभा ने बताया कि अखबार से उनका पता चल सकता है। सो गांव के स्कूल से अखबार मंगाया जाने लगा। प्रतिभा रोज अखबार पढ़कर सास को सुनाती थी, पर उनका उसमें मन नहीं लगता था। उन्हें कई बार बीच में झपकी आ जाती थी।

एक दिन प्रतिभा की नजर एक समाचार पर पड़ी। उसमें लिखा था कि कटक स्वराज-आश्रम का भार नवीन जी के कंधों पर आ गया है। वे अब उसके संचालक होंगे। उनके संचालक होने से सारे शहर में खुशी की लहर दौड़ गई है। उस समाचर में उनका थोड़ा जीवन-परिचय भी छपा था कि एक बड़े जमींदार के बेटे होने के बावजूद वे सारे सुख-वैभव त्यागकर इस आंदोलन में कूद पड़े हैं। आदि-आदि। कुछ लज्जा भाव से प्रतिभा ने अपनी सास को यह समाचार सुनाया था। बीच-बीच

में जहां नवीन का नाम आता था वो चुप रह जाती थी। समाचार सुनकर जाह्नवी देवी रोने लगी थीं। न जाने बेटा क्या खाता है ? कहां रहता है, क्या वो हमें भूल गया आदि सोच-सोचकर वे बिलखने लगी थीं। प्रतिभा भी अब अपने को रोक न पाई थी। उसकी आंखें भी भर आई थीं। वह वहां से उठकर अपने कमरे में जाकर रोने लगी थी। देश-प्रेम और देश के लिए त्याग आदि बातों से वो ज्यादा अवगत न थी। सो वह यही सोच-सोचकर रोए जा रही थी कि मुझसे रूठकर ही वे वैरागी हो गए हैं ?

25

इस बीच महेंद्रबाबू को डिप्टी की नौकरी मिल गई है। देश-सेवा छोड़कर सरकारी नौकरी में घुस जाने से उनके मन में जो संकोच आता था उसे वे साहित्य-चर्चा आदि माध्यमों से दूर करने की कोशिश करते थे। वे कहते थे—क्या केवल आश्रम में रहकर भीख मांगने से देश की सेवा हो जाएगी, और कुछ उपाय नहीं है क्या ? अरे ओड़िया साहित्य के लिए बहुत काम करना बाकी है। महेंद्रबाबू अक्सर डिप्टी मजिस्ट्रेट बंकिमचंद्र का उदाहरण दिया करते थे। वे कहते थे कि उन्होंने भी तो इसी सक्रांतिकाल में बांग्ला साहित्य को कितना समुन्नत किया है। पर फिर भी अखबारों में नवीन का नाम, उसके भाषण तथा उसकी चर्चा से उनके तन-बदन में आग लग जाती थी। एक दिन था जब वो मेरा सहपाठी था पर आज वो एक बड़ा नेता है और मैं एक नौकर, इस भावना को वो पूरी तरह से अपने मन से नहीं निकाल पाते थे। पर फिर वे अपने मन पर जोर देकर कहते थे कि साहित्यकार का नाम सदा जिंदा रहता है

जबकि नेताओं के नाम भुला दिए जाते हैं। बस इस तरह से अपने मनोभावों को बल देकर वे सतत साहित्य सृजन करने लगे और 'उत्कल साहित्य' में छपवाने लगे थे।

अपनी भाषागत योग्यता का पूरा-पूरा उपयोग करते हुए उन्होंने असहयोग आंदोलन के ऊपर एक बड़ा निबंध लिखा और 'उत्कल साहित्य' में छपवाया। उसमें उन्होंने आंदोलन की आलोचना की थी और लिखा था कि इसमें भाग लेनेवाले लोग केवल अपनी ही बर्बादी नहीं कर रहे बल्कि पूरे देश का सर्वनाश कर रहे हैं।

प्रतिभा गांव में महेंद्रबाबू के कारण जो पत्रिकाएं पढ़ा करती थी उसे वह यहां पर भी मंगाया करती थी। जिस पत्रिका में महेंद्रबाबू का कुछ लेख निकला होता उसे वह बहुत ध्यान से पढ़ा करती थी। 'उन्होंने ही तो मुझे ज्ञान का प्रकाश दिखाया है।' यह सोचकर वह उनका बहुत सम्मान करती थी। इस बार असहयोग आंदोलन के ऊपर महेंद्रबाबू का लिखा निबंध पढ़कर उसे लगा कि उसके पति जो काम कर रहे हैं जरूर वह कोई अच्छा काम नहीं है। और एक बार जब उसने अखबार में पढ़ा कि महेंद्रबाबू नवीन को पैरों से रौंदकर मजिस्ट्रेट से मिलने गए तो वह सोचने लगी थी कि महेंद्रबाबू कभी भी ऐसा घृणित काम नहीं कर सकते हैं। यह उन्होंने तभी किया होगा जबकि उसके पति के काम से उनके मन में घृणा आ गई होगी। तभी अपने पति के प्रति ऐसे भाव अपने मन में आते देख वह घबरा गई थी। उसने सोचा—मैं उन्हें कैसे घृणा कर सकती हूं, वे तो मेरे जीवनसाथी हैं⋯।

26

नवीन के एक साल के लिए जेल जाने की खबर अखबार में पढ़ने के बाद तो जैसे उनके घर बिजली गिर गई। न ही प्रतिभा और न ही जाह्नवी देवी को ही जेलखाने के बारे में ठीक से पता था। वे बस इतना जानती थीं कि वह एक भयावह जगह होती है, जहां चोर, डाकुओं को खूब मारा-पीटा जाता है और उनसे खूब मेहनत कराई जाती है। समाचार पढ़ते ही जाह्नवी देवी तो बेहोश-सी हो गईं और उस दिन उनके घर चूल्हा भी न जला। रामहरिबाबू तो अवाक् हो गए थे। कई दिन पहले किसी ने कुछ कहकर उनका अपमान कर दिया था तो उन्होंने



उसे जेल भिजवा दिया था। आज उनका खुद का बेटा जेल में है, लोग क्या कहेंगे—वे यही सोच-सोचकर चिंतित हो रहे थे। इसके अलावा उन्हें यह भी भय था कि लड़का तो सरकार विरोधी काम कर रहा है कहीं उनकी जमींदारी पर भी आंच तो नहीं आ जाएगी ?

बहुत रो-धो चुकने के बाद जाह्नवी देवी अब अपने पति के पीछे पड़ गई थीं कि चाहे जितने भी रुपए खर्च हों तुम जाकर मेरे बेटे को छुड़ा लाओ। "मैं क्या यह बात नहीं जानता हूं ? पर उससे कुछ नहीं होनेवाला।" कहकर रामहरिबाबू ने उनकी बात टालने की कोशिश की। जाह्नवी देवी बिफर गईं, "हां, हां तुम सब जानते हो ! रुपए-पैसे से तिजोरी भरने के अलावा और तुम जानते ही क्या हो ? एक ही तो बेटा है, न जाने वह किस हाल मे होगा…।"

पत्नी की भर्त्सना और रोना-बिलखना असहनीय हो जाने के बाद रामहरिबाबू जाजपुर में अपने वकील अक्षयबाबू से सलाह लेने गए थे। पर उनकी बात शुरू करने से पहले ही अक्षयबाबू बोले, "कल अखबार में मैंने पढ़ा कि नवीन को एक साल की जेल हो गई है। सच में रामहरिबाबू, आपने तो एक ही गांव में जमींदार रहकर नाम कमाया है पर नवीन की तो आज सारे देश में पूजा हो रही है…" इत्यादि।

बेटे की इतनी प्रशंसा सुन रामहरिबाबू अब क्या कहें कुछ समझ नहीं पा रहे थे। जिस बात का उन्हें डर था वह भी अक्षयबाबू ने हंस-हंसकर दूर कर दिया था। वे बोले, "नहीं, रामहरिबाबू वो कानून अब बदल गया है। पहले दफा 124 के अंतर्गत संपत्ति जब्त करने का प्रावधान था, पर संशोधित कानून में ऐसा नहीं है।" उन्होंने रामहरिबाबू से कहा था कि न जाने कितने बड़े-बड़े बेरिस्टर और देश के अनेक धनी तथा

गण्यमान्य व्यक्ति जैसे मोतीलाल नेहरू, चित्तरंजन दास, लाला लाजपतराय आदि जेल गए हैं। और उसी राह पर चलकर आपका बेटा भी जेल गया तथा उसने ओड़िसा का नाम रोशन किया, भई मानना पड़ेगा !

अब रामहरिबाबू और क्या कहते। अंत में मजबूर होकर वे यथाशीघ्र वहां से वापिस चल पड़े थे।

27

जाजपुर से लौटने के बाद रामहरिबाबू की चिंता कुछ कम हो गई थी। घर आकर उन्होंने पत्नी को बताया, "बेटे को जेल हो गई तो क्या हुआ ? अरी जानती हो देश के बड़े-बड़े लोग जेल में हैं। भगवान यदि करें कि महात्मा गांधी जीत जाएं फिर देखना यही बेटा और क्या-क्या कर दिखाएगा। जानती हो, चारों ओर नवीन का नाम, उसी की प्रशंसा…।"

रामहरिबाबू की बातें सुनकर जाह्नवी देवी को कुछ हद तक तो तसल्ली हो गई थी। पर फिर भी मां का मन था इतनी जल्दी कहां बूझनेवाला। इधर प्रतिभा के मन में अपने पति के प्रति जो मान था वह पल भर में न जाने कहां उड़ गया था। जेल में न जाने क्या-क्या सज़ा उन्हें भोगनी पड़ती होगी, यह सोचकर वह दुखी हो जाती थी। साथ ही साथ उसे अपने पति पर गर्व था कि वे लुक-छिप कर चोरों की तरह जेल नहीं गए हैं बल्कि एक वीर की तरह जेल के दरवाजे तोड़कर अंदर गए हैं। देश के और भी बड़े-बड़े लोग जेल गए हैं यह भी उसने अखबार से जान लिया था। पर महेंद्रबाबू इतने पढ़े-लिखे होकर भी इनके विरूद्ध क्यों लिखते हैं ? अब उसके मन में अपने पति के प्रति इतनी भावनाएं हिलोरें ले रही थीं कि और कोई

भी तर्क उनके आगे काम नहीं कर रहा था।

जाह्नवी देवी गौर कर रही थीं कि बहू शायद मन ही मन उनके बेटे को याद करके चिंतित-सी है। इस बात से वे थोड़ा प्रसन्न भी हुईं। पर वे बहू को देखकर कभी-कभी दुखी भी हो जाती थीं क्योंकि वह दिन-प्रतिदिन दुबली हुई जा रही थी। सजने-संवरने की भी उसे फिकर नहीं। एक दिन तो उन्होंने देखा कि उसने सोने की चूड़ियां भी उतारकर कांच की चूड़ियां पहन ली है। अंत में उन्होंने बहू को समझाना शुरू किया—"अरे पगली, नवीन जेल गया तो क्या हुआ, अरे बड़े-बड़े लोग जेल जाते हैं...। महात्मा गांधी की आवाज पर धरती उलट-पलट हो रही है...। एक साल तो यूं ही कल की तरह गुजर जाएगा। देखना, नवीन इस राज्य का राजा होकर आएगा...." आदि-आदि। पर वह मन ही मन समझ रही थी कि अपनी बातों से वे बहू का मन हल्का नहीं कर पा रही है।

28

एक दिन रामहरिबाबू नहाने जाने से पहले अपने शरीर पर तेल लगा रहे थे कि अचानक प्रकाश सामने आए और उन्हें नमस्कार किया। तेल लगाते समय किसी को नमस्कार नहीं किया जाता सो रामहरिबाबू थोड़ा गुस्सा हो गए थे। पर जब उन्होंने प्रकाश की ओर ध्यान से देखा तो जाना कि ये तो गांधीवादियों का कोई नेता है, इसे तो उचित सम्मान के साथ विदा करना होगा सो उन्होंने अपनी भंगिमा बदलकर उन्हें बैठने को कहा। जब प्रकाश ने बताया कि वे कटक के स्वराज आश्रम से आए हैं तथा यहां कुछ दिन रहना चाहते हैं तो उनके कान खड़े हो गए थे। उन्होंने नवीन के बारे में पूछा। इसके बाद ख़ुद

झूठ-मूठ दुखी होने का नाटक करते हुए उन्होंने कहा कि, ''यहां के लोग उसकी बातें न समझ पाए तभी तो वह कटक चला गया।'' इसके बाद बातों का सिलसिला कैसे जारी रखा जाए वे कुछ समझ नहीं पा रहे थे सो हड़बड़ करते हुए वे नहाने चले गए और नौकर को प्रकाश का ध्यान रखने के लिए कह गए।

जाह्नवी देवी को खबर मिल गई थी कि बेटे के पास से एक आदमी आया है। इसलिए वे दरवाजे की आड़ में खड़ी होकर रामहरिबाबू और प्रकाश की बातें सुन रही थीं। उन्होंने उसी आड़ से प्रकाश को देखा। उन्हें गुस्सा आ रहा था आखिर उनके पति नवीन के बारे में और कुछ क्यों नहीं पूछ रहे हैं। उसके कटक जाने का कारण भी उन्होंने कुछ भी क्यों बता दिया। प्रतिभा भी खिड़की की आड़ लेकर दोनों की बातें सुन रही थी। उसका भी मन हो रहा था कि उस आए मेहमान के पास जाकर अपने पति के बारे में और भी कुछ बातें जाने।

रामहरिबाबू के नहाकर आने के बाद प्रकाश ने एक ऐसी बात उन्हें कही कि उसे सुनकर रामहरिबाबू को थोड़ा अजीब-सा लगा। प्रकाश ने उनसे नवीन की पत्नी से मिलने की इच्छा व्यक्त की थी। रामहरिबाबू ने उसे टालते हुए कहा था कि वो कोई बहुत पढ़ी-लिखी लड़की नहीं है। इस पर प्रकाश ने कहा था कि इससे कुछ नहीं होता। नवीन जिस राह का राही है उसकी पत्नी को भी उसी राह का अनुसरण करना चाहिए। इस राह पर तो पढ़े-लिखे, अनपढ़, गांव-शहर क्या पुरुष क्या नारी सभी चल सकते हैं। इस पर रामहरिबाबू ने एक और बहाना बनाया कि नवीन की मां कुछ पुराने ख़यालों की औरत है। इसलिए वो राजी होगी कि नहीं, पता नहीं। पर प्रकाश के बार-बार अनुरोध करने पर उनसे पूछा गया तो उन्होंने कोई

आपत्ति नहीं उठाई। क्योंकि वास्तव में सास-बहू दोनों ही नवीन के विषय में जानना चाहती थीं। इसलिए वहां से लौटकर रामहरिबाबू को मजबूरन प्रकाश से कहना पड़ा था, वे लोग राजी नहीं हो रहे थे, मैंने ही जिद करके उन्हें राजी किया है। आप इस दरवाजे के पास चले आइए वे लोग वहीं अंदर बैठकर बातचीत करेंगी।''

कुछ समय तक धीरे-धीरे बातचीत होने के बाद संकोच धीरे-धीरे हट गया था। जाह्नवी देवी ने अपने बेटे के खाने-पीने, रहने-ओढ़ने आदि के बारे में बहुत सारे प्रश्न पूछे थे। प्रकाश उनका सरल और स्नेह से जवाब देता जा रहा था। पर प्रकाश दोनों में से किसी को भी ठीक से नहीं देख पा रहा था। अंत में उसने बड़ी कोमलता से कहा, ''मां मैं भी तो तुम्हारा बेटा हूं। जैसा नवीन है वैसा ही मैं भी हूं। मां-बेटा क्या यूं ओट में बैठकर बात करते हैं ? और फिर मैं तो यहां रहूंगा इसीलिए यहां आया हूं। जब तक नवीन जेल से नहीं आ जाता तब तक मैं यही रहूंगा, आपका बेटा बनकर...।'' जाह्नवी देवी प्रसन्नता से भर उठीं थीं कि उनका बेटा जेल से छूटकर घर आएगा। उन्होंने उसी बात को फिर एक बार प्रकाश से पूछा तो प्रकाश ने कहा था कि वह जेल से जरूर घर लौटेगा। वह खुद उसे घर लाएगा। इस तरह बात करते-करते दोनों के बीच एक संकोचविहीन आत्मीयता आ गई थी। जाह्नवी देवी ने प्रकाश से पूछा, ''बेटा तुम्हारा घर कहां है ?'' प्रकाश हंसकर कहने लगे थे, ''मां मेरा कोई घर नहीं है। मैं जहां रहता हूं, वहीं मेरा घर हो जाता है। इसलिए तो मैं तुम्हें मां कहकर पुकारता हूं।'' इस पर जाह्नवी देवी ने बड़े करुणा-विगलित स्वर में कहा था, ''बेटा तू यहीं रह। जब नवीन आ जाएगा तब तेरा मन हो तो चले जाना।''

प्रतिभा ध्यान से दोनों की बातें सुन रही थी। उसने जब सुना कि नवीन जेल से वापस घर आएंगे तो वह पुलकित हो उठी थी। पर अचानक उसके मन में आया—वो आएंगे तो मुझसे बात तो करेंगे ? मैं उनके लिए क्या करूंगी, जिससे वो मुझसे बात करेंगे ? पर यदि उन्होंने मुझे नहीं पूछा तो ? गहरी सांसें लेकर वह अपने उद्वेग को दबाने की कोशिश कर रही थी।

रामहरिबाबू भी दूर से उनकी बातें सुन रहे थे। जब उन्होंने सुना कि नवीन के आने तक यह आदमी उनके घर में रहेगा, तो उन्हें यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्होंने मन ही मन सोचा कि प्रकाश का यहां रहना, विपत्ति को आमंत्रण देना ही होगा।

29

रामहरिबाबू की अक्सर दोपहर के भोजन के समय ही अपनी स्त्री से बातचीत होती है। पर इधर कुछ दिन हुए वे दोपहर के भोजन के समय चुपचाप सिर नीचा करके भोजन कर, बाहर चले जाते हैं। एक दिन उन्होंने गला खंखारकर, जरा ऊंची आवाज करते हुए कहा, ''आज पूरा एक महीना हो गया। मैंने अपनी जुबान बंद रखी थी, पर मैं देख रहा हूं कि अब मुंह खोलना ही पड़ेगा....।'' वे सोच रहे थे कि वे जो भी कह रहे हैं उनकी पत्नी उसे जरूर खंबे की ओट में खड़ी होकर सुन रही होगी। पर उधर से कोई उत्तर न आता देख उन्होंने रसोइए को आवाज लगाई। वह जब सब्जी लेकर वहां हाजिर हुआ तो उन्होंने पूछा—''क्यों रे, मालकिन यहां नहीं है क्या ?'' रसोइए ने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाकर धीरे-से कहा, ''नहीं मालिक, वे तो रसोईघर में हैं। प्रकाशबाबू वहां भोजन कर रहे हैं। वे वहीं बैठकर बातें कर रही हैं।''

यह बात सुनते ही रामहरिबाबू गुस्से से लाल हो गरज उठे, "अच्छा, वो रसोई में बैठकर खा रहा है ? घर क्या धर्मशाला हो गया है ?...." रसोइए ने जाह्नवी देवी को खबर दे दी थी। उन्होंने तुरंत आकर रामहरिबाबू से कहा, "क्या बके जा रहे हो जी ? आखिर बात क्या है ?" अब तो रामहरिबाबू और भी उत्तेजित हो उठे थे। बोले, "अब और क्या होना बाकी है ? जाति गई, धर्म गया और अब जमींदारी भी जानेवाली है। अरे शास्त्र कहते हैं अनजान आदमी को तो चबूतरे पर भी नहीं बिठाना चाहिए, किंतु हमारे घर तो वो दिनभर घुसा रहता है और तुम लोगों के साथ खुसुर-पुसुर करता रहता है। रसोई में खाता है। और यहां से जाकर नीच-जात के लोगों के मुहल्ले में घूमता रहता है। उस दिन एक आदमी ने आकर मुझे दंडवत किया तो उससे कहने लगा कि सिर किसी के आगे मत झुकाओ। हम सभी मनुष्य हैं, सब समान हैं...।" इतनी सारी बातें सुनने के बाद जाह्नवी देवी अंत में कुछ सख्त होकर बोलीं, "क्या-क्या कहे जा रहे हो जी ? अरे रसोई में बैठकर किसी ने खा लिया तो क्या रसोईघर को छूत लग गई ? और मुझे ये सब क्यों सुना रहे हो ? जाओ उसे ही क्यों नहीं कह देते ?" जाह्नवी देवी जानती थीं कि वे अपने मुंह से प्रकाशबाबू को कुछ नहीं कहेंगे। वे तो उसकी सब बातों में 'हूं', 'हां' करते हैं। इस पर रामहरिबाबू और भी गुस्से से बड़बड़ाकर थाली छोड़ बाहर चले गए।

30

धैर्य की भी कोई सीमा होती है। यदि यह सीमा पार हो जाए तो खुद को संभालना बहुत कठिन हो जाता है। कुछ दिन के

बाद एक ऐसी ही परिस्थिति का सामना करना पड़ा था रामहरिबाबू को। एक बार एक ग्रामीण व्यक्ति उनके पास आया था। वह उन्हें इस साल कर नहीं दे पाएगा। यह बात उसने रामहरिबाबू के पैरों पर गिरकर, विनती करते हुए नहीं कही थी जोकि गांव की एक प्रकार से परंपरा बन चुकी थी, बल्कि सीधे-सीधे ही खड़े होकर कह दी थी। इससे पहले किसी भी गांव वाले ने इतनी हिम्मत न की थी। इस पर रामहरिबाबू ने चिल्लाते हुए कहा—"बड़ी-बड़ी बातें करने लगा है तू। अरे लगा तो इसे—" तभी उनका एक आदमी आकर उसे थप्पड़-घूंसे मारने लग गया था। वह गांववाला 'बाप रे ओ मां' कह-कहकर चिल्लाने लगा था। आवाज सुनकर प्रकाशबाबू बाहर आ गए थे और उस गांववाले के पास खड़े हो गए थे। उन्हें देखकर तो जैसे उस गांववाले में न जाने कहां से बल आ गया। वह जोर-जोर से कहने लगा, "आज मेरे बदन में ताकत नहीं है इसलिए मैं उलटकर तुम्हें मार नहीं पा रहा हूं। पर मैं हमेशा कमजोर नहीं रहूंगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो मेरे बेटे, नाती, पोते सब इस मार का बदला लेंगे।" इस पर रामहरिबाबू उस आदमी पर और जोर-जोर से गुस्सा करने लगे थे। उनका पाला हुआ वह आदमी और भी जोर-जोर से उसे पीटने लगा था। अभी तक प्रकाश को वहां खड़ा देखकर रामहरिबाबू के पाले हुए मुस्टंडे आदमी ने कहा, "अरे साहब, जाइए। इस जमींदारी के मामलों में आप यहां क्या कर रहे हैं ?" प्रकाश थोड़ा हंसकर बोले, "मैं यहां खड़ा होकर देख रहा हूं कि एक इंसान की जान कितनी आसानी से जा सकती है।" तभी रामहरिबाबू और भी चिढ़कर अपनी जगह से उठकर प्रकाशबाबू से बोले, "आप यहां से चले जाइए। हमारा यह अंचल पहले बहुत अच्छा था आपने ही आकर इन मूर्खों को न जाने क्या-क्या सिखाकर इस अंचल

को खराब कर दिया है।'' प्रकाश कुछ समय तक चुपचाप खड़े रहे फिर रामहरिबाबू की ओर घूरकर तेज कदमों से अंदर चले गए। वहां खड़े हुए लोगों को रामहरिबाबू बता रहे थे कि यह आदमी जो अभी-अभी अंदर गया है उसे खाने को नहीं मिलता था इसलिए खाने के लिए ये मेरे घर में पड़ा है 'धर्म-बेटा' बनकर।

कुछ समय के बाद उनके पाले हुए मुस्टंडे ने उनके कान में धीरे-धीरे न जाने क्या कहा। रामहरिबाबू ने कुछ समय तक न जाने क्या सोचा, फिर उसके कान में उन्होंने भी धीरे-धीरे कुछ कहा। उसके बाद अचानक वे उठकर अंदर चले गए।

31

घर के अंदर की ओर बने बरामदे में जाह्नवी देवी और प्रकाश बैठकर बातें कर रहे थे। रामहरिबाबू वहीं जाकर खड़े हो गए और गंभीर स्वर में बोले, ''देखो प्रकाशबाबू मैंने तुम्हें बहुत दिन तक यहां रहने दिया है, पर अब तुम सीधे यहां से चले जाओ वरना...।'' प्रकाश तुरंत उठकर बोले, ''मेरा क्या है, मैं तो अभी यहां से चला जाऊंगा यदि मांजी आज्ञा दें तो। आप ही इनसे कहकर मुझे आज्ञा दिलवा दीजिए, मैं चला जाऊंगा।'' इतना कहकर वे बाहर चले गए।

जाह्नवी देवी चिंतित-सी नीचे की ओर देखे जा रही थीं। अब रामहरिबाबू वहीं बैठकर उन्हें समझाने लगे थे कि यह जमींदार का घर है और जमींदारी बचाए रखने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है। इसलिए बाहर के आदमी का यहां हमेशा रहना अच्छा नहीं है। जाह्नवी देवी ने कुछ समय चुप रहकर

कहा, "नवीन के आने को और दो ही महीने तो रह गए हैं। नवीन आ जाए तो ये चला जाएगा, नहीं तो इससे मुझे क्या पड़ी है ? नवीन के लिए ही मैंने इसे रखा है। इसके चले जाने के बाद यदि नवीन नहीं आया तो ?" रामहरिबाबू बोले कि नवीन के आने में कोई संदेह नहीं है वे खुद जाकर उसे ले आएंगे। पर जाह्नवी देवी का मन नहीं माना। वे ना की मुद्रा में सिर हिलाने लगी थीं। इस पर रामहरिबाबू के धैर्य का बांध टूट गया। वे खड़े होकर गुस्से से कहने लगे थे, "अच्छा ! ठीक है, मैं देखता हूं वो कैसे यहां रहता है।" इतना कह वे बाहर चले गए।

जाह्नवी देवी ने देखा कि प्रतिभा उन दोनों की बात सुन रही है। सो उन्होंने उससे पूछा, "अब तू ही बता बहू ! क्या वह यहां से चला जाए ?" पर प्रतिभा चुप रही। अब जाह्नवी देवी के दिमाग में आने लगा था कि वास्तव में प्रकाश जो कहता है कि जमींदारी प्रथा ठीक नहीं है, भगवान की पूजा की क्या आवश्यकता, लोग ही तो भगवान हैं, उन्हीं की सेवा करना ही धर्म है, ये बातें कभी-कभी उन्हें भी पसंद नहीं आती थीं। पर नवीन के लिए तो उसे अटकाना जरूरी था। यदि वो कुछ दिन और रुक जाए तो हमारा क्या नुकसान हो जाएगा ? न जाने कब आएगा नवीन' ऐसे बड़बड़ाते हुए उनका गला रुंध गया था। इधर प्रतिभा की आंखें भी छलछला आई थीं। उसी समय नौकर ने आकर डरते-डरते बताया, "बाहर जमींदार साहब बोल रहे थे कि अब प्रकाश बाबू घर के अंदर नहीं आ सकते हैं।" जाह्नवी देवी ने चिढ़कर बड़बड़ाते हुए कहा, "हां रहने दो, घर में रहने से कौन सा पहाड़ टूटे जा रहा था ?"

32

प्रकाश जब भी जाह्नवी देवी से बातें करते तो प्रतिभा भी वहीं बैठकर सुनती रहती। वह भी कभी बीच-बीच में बोलती। प्रकाश की हर बात को वह आत्मसात करने की कोशिश करती। वह समझ रही थी कि उसके पति जो भी चाहते हैं वही बातें प्रकाश बताते हैं।

एक बार प्रकाश ने गरीब और अमीरों के बीच के अंतर को बताया कि यह भेदभाव इतना भयंकर है कि गरीबी के कारण मां अपनी बेटी को लाड़ करने का समय नहीं निकाल पाती और पैसे के लिए अपने गांव के बाहर गया आदमी साल में कभी-कभी एक बार भी अपनी पत्नी का मुंह नहीं देख पाता। जाह्नवी देवी ने इस बात को कर्मफल कहकर उड़ा दिया था। पर प्रतिभा को अपने मैके की याद आ रही थी। उसे याद आ रहा था कि कैसे उसके मां-बाप उसके ब्याह से सुखी रहने का मार्ग खोज रहे थे। उसकी मां काम करके कितना थक जाती है पर उसकी मदद करनेवाला कोई नहीं है। उसे यह भी याद आया कि सिद्धेश्वर यहां एक बार आकर कितना अपमानित हुआ है उसके ससुर से। उस समय वह सोच रही थी कि शायद वह गलत समझ रही है, पर आज उसे असली बात समझ में आ गई थी। बड़े लोगों का गरीबों के प्रति अनादर भाव जानकर उसे गुस्सा आ रहा था। प्रकाश ने एक बार बताया था कि यहां पर स्त्रियों के साथ जो व्यवहार किया जाता है, वह सरासर गलत है। आदमी, औरत को अपनी जायदाद समझकर घर के अंदर संभाल कर रखता है इसलिए वे बाहर की दुनिया के विषय में कुछ जान नहीं पाती हैं। पति और पत्नी के बीच केवल संतान उत्पन्न करने तक ही संबंध रह गया है। जाह्नवी

देवी ने हंसी में बात को टाल दिया था। वे बोली थीं कि यह सब तो भगवान का ही बनाया हुआ है। पर प्रतिभा को उस रात की याद हो आई थी कि जब वह अपने पति के सामने उसकी कृपा की प्रार्थी बनकर गई थी पर उसके पति ने एक हाकिम की तरह उसकी दरखास्त नामंजूर कर दी थी। इतनी अवज्ञा। अब उसकी समझ में आ रहा था कि इसका मूल कारण यही है कि औरत अपना महत्व खुद ही नहीं समझती।

और एक बार जाह्नवी देवी के बार-बार नवीन के बारे में पूछने पर प्रकाश ने समझाया था कि जहां भी अत्याचार होता है, वहां जाकर अत्याचार भोगनेवाले लोगों की मदद करना और उन्हें अत्याचार के विरूद्ध खड़ा करना यही क्रांतिकारियों के काम हैं। और इस काम के लिए जो भी दुख-कष्ट सहने पड़ते हैं उसकी उसे कोई परवाह नहीं है। परवाह न करने पर दुख महसूस ही नहीं होता है, वह छोटा हो जाता है। इसलिए वे सोच सकते हैं कि नवीन बहुत खुश है। यह बात प्रतिभा को इतनी भा गई कि वह भी मन ही मन सोचने लगी कि काश उसे भी अपना जीवन किसी महत्वपूर्ण कार्य में लगाने का अवसर मिला होता।

अब तो धीरे-धीरे महेंद्रबाबू के प्रति उसका आदर कम होने लगा था। उनके कुछ लेख पढ़कर तो उसके मन में अब घृणा भी जागने लगी थी।

प्रकाश की बातें सुनकर वह इतना मग्न रहने लगी थी कि प्रकाश के प्रति रामहरिबाबू की चिढ़चिढ़ाहट का भी उस पर कोई असर नहीं होता था। उसका मन तो बार-बार यही होता था कि प्रकाशबाबू और कुछ दिन यहां रह जाएं।

33

उस दिन की घटना के बाद रामहरिबाबू ने थाने में खबर भेजी थी कि एक बाहर का आदमी सरकार विरोधी बातें कर लोगों को भरमा रहा है। इससे आगे चलकर भयंकर दंगा-फसाद होने की संभावना है। इधर उन्होंने प्रकाशबाबू को भी चेतावनी दे दी थी कि यदि वो तुरंत नहीं चले जाते तो वे उन्हें पुलिस से पकड़वा देंगे। उनकी धमकी को सुन प्रकाशबाबू हंस पड़े थे, बोले, "मैं क्या पुलिस से डरता हूं ?" इस बात को सुन रामहरिबाबू थोड़ा दब गए थे पर फिर कुछ समय तक न जाने क्या सोचकर अंदर आए और गुस्से से तमतमाकर बोले, "उस आदमी से कह दो कि यहां से तुरंत चला जाए नहीं तो थोड़ी देर में ही पुलिस उसे बांधकर ले जाएगी। फिर मुझे दोष मत देना।" उस समय जाह्नवी देवी और प्रतिभा आपस में बैठकर बातें कर रही थीं। दोनों ने विस्मित होकर एक दूसरे को देखा। अंत में प्रतिभा ने गहरी सांस लेकर कहा, "वे चले जाएं तो अच्छा है। हमारे घर रहकर आखिर उनका इतना अपमान क्यों हो ?" जाह्नवी देवी ने भी मजबूर होकर प्रतिभा की बात मान ली थी। उन्होंने नौकर को बुलाया और उसके हाथ प्रकाश को खबर भिजवाई कि वह चला जाए।

रामहरिबाबू अपने कार्यालय में बैठकर अदायगी का हिसाब-किताब कर रहे थे कि तभी प्रकाश उनसे विदाई लेने वहां पहुंचे। रामहरिबाबू ने कुछ व्यस्तता दिखाते हुए कहा, "अच्छा तो आप जा रहे हैं ? ठीक है जाइए। कुछ ख़राब मत सोचिएगा। ये मूर्ख अंचल···" तभी प्रकाश उनकी तरफ उंगुली दिखाकर जोर से बोलने लगे थे, "इन लोगों को मूर्ख आप कहते हैं क्योंकि इन्हें अभी अपनी शक्ति का पता नहीं है। ये लोग

आपके वैभव और पुलिस की लाल पगड़ी से डर जाते हैं। पर याद रखिए जिस दिन इनका यह डर चला जाएगा उसी दिन ये लोग देश चलाने लग जाएंगे। तब इन्हीं लोगों की कृपा पर आपका यह वैभव टिकेगा। ठीक है मैं जा रहा हूं पर मै सदा इन मासूम और दुखी लोगों के मन में रहूंगा। प्रत्यक्ष में हो या परोक्ष में आप सदा मुझे याद रखेंगे।"

प्रकाश के जाने के बाद ही अचानक रामहरिबाबू के कार्यालय में एक अफवाह उड़ने लगी थी कि शायद किसी ने किसी को मार दिया है। बाद में रामहरिबाबू को पता चला कि जो आदमी मार खाने से मर गया था और जिसे उन्होंने तुरंत जलाने का हुकुम दिया था उसे जलाया नहीं गया था। जिस आदमी को उन्होंने यह काम सौंपा था वह कहीं चला गया था। भय और क्रोध के भाव बारी-बारी उनके चेहरे पर आ-जा रहे थे। अब उनके मन में बार-बार यह विचार आ रहा था कि प्रकाशबाबू को इस तरह निकालकर उन्होंने भूल की।

34

चारों ओर चर्चा फैल चुकी थी कि रामहरिबाबू ने एक आदमी को मार डाला। इधर रामहरिबाबू ने थाने के मुंशी से लेकर पुलिस तक सभी को अपने हाथ में कर लिया था। लाश को मुआयने के लिए भेज दिया था। डॉक्टर ने भी रिपोर्ट दे दी थी कि वह आदमी वात और कफ के कारण मरा है। पर जनता की आवाज को पैसे के बल पर दबाया न जा सका। अब वह आवाज इतनी भयंकर हो चुकी थी कि लोगों ने जमींदार के गुमास्तों आदि का पानी पीना तक हराम कर दिया। थाने के

मुंशी रामहरिबाबू की सुरक्षा के लिए बराबर उनके पास ही रहने लगे। इसके अलावा रामहरिबाबू ने अपने खर्च से पांच बंदूकधारी सिपाहियों को अपने घर के बाहर खड़ा कर रखा था। उन्होंने खुद भी कहीं बाहर जाना बंद कर दिया था।

इन हालातों में जाह्नवी देवी बहुत दुखी हो गई थीं। प्रतिभा नौकरों से सभी छोटी-मोटी खबरें लेती रहती थी। नौकरों की सहानुभूति लोगों के साथ थी। नौकरों को यह अनुभव हो चुका था कि छोटी मालकिन जनता के साथ ही है। जनता को पता था कि नवीन लोगों के अधिकारों के लिए जेल गए हैं। नौकरों के जरिए से उन्हें मालूम चल गया था कि नवीन की पत्नी उन्हीं के साथ है। बात उड़ते-उड़ते रामहरि के कानों में पहुंच गई थी। वैसे उन्हें अपनी बहू पर कोई संदेह न था पर फिर भी उन्होंने जाह्नवी देवी को कहा, "एक मजे की बात जानती हो ना ? ये लफंगे लोग कह रहे हैं कि हमारी बहू उन लोगों के साथ है...." जाह्नवी देवी ने इसका जोरदार प्रतिवाद किया, बोलीं, "कौन कहता है जी ! हमारी बहू तो किसी के आगे जबान तक नहीं खोलती।" बाद में प्रतिभा ने अपनी सास से पूछा था, "मांजी आप मेरे विषय में क्या कह रही थीं, जाह्नवी देवी ने उसे आश्वासन देते हुए कहा कि छोड़ो लोग तो कहते ही हैं। जो उनके मन में आता है उसके लिए चिंतित होने की कोई आवश्यकता नहीं है।" पर प्रतिभा ने सिर झुकाकर दृढ़ स्वर में कहा, "लोग जो कह रहे हैं वह सच है माँजी। एक आदमी को पीटते-पीटते उसकी जान ही ले ली। इस पर लोग क्या नहीं भड़केंगे ? और फिर उस पर पुलिस भी उन पर अत्याचार करना शुरू कर दे तो अनाचार की सीमा ही नहीं रहेगी। यही सब तो रोकने के लिए कितने ही लोग जेल गए हैं। जेल से लौटकर वे क्या कहेंगे....?"

जाह्नवी देवी को नवीन की याद आ गई थी। वे बड़े दुखी मन से बोली थीं, "अब तू ही बता बहू भगवान को इसी समय यह लीला करनी थी कि यह झमेला खड़ा हो जबकि मेरा बेटा लौटनेवाला है ? वह सच में लौटेगा तो ?"

35

सूर्य की किरणें यदि लैंस द्वारा केंद्रित हो जाएं तो आग भी लगा सकती हैं। इसी तरह छोटी-सी जेल के अंदर मनुष्य अपने अंदर छुपे न जाने कितने भावों से परिचित हो पाता है जोकि बाहर की दुनिया में रहकर जान नहीं पाता है। यहां नवीन के मन में कभी-कभी ऐसे-ऐसे भाव उठ आते थे कि वह स्वयं ही अचंभित हो जाता था।

वसंत आ गया है। जेल की चारदीवारी के अंदर स्थित सारे वृक्ष नए-नए पत्तों से सज गए हैं। उन्हें देख ऐसा लगता है जैसे वे कैदियों को चिढ़ा रहे हों। चीं-चीं करती हुई चिड़ियां भी उन्हें ऐसी लग रही थीं जैसे उन पर हंस रही हों और कह रही हों कि तुम लोग तो सब बंदी हो, देखो ! हम सब कैसे स्वतंत्र हैं। ऐसा वातावरण पा न जाने कैसे नवीन के अंदर का सोया प्यार जाग उठा। उन्हें लगा जैसे वे किसी को पूर्ण समर्पण कर दें और कोई भी उनके पास पूर्ण समर्पित हो जाए। तब उन्हें याद आया कि जब कन्यादान के समय प्रतिभा का हाथ उनके हाथ में सौंप दिया गया था तो कैसी एक अनिवर्चनीय सिहरन उन्होंने अनुभव की थी। इसके बाद भी घर पर उन्होंने इस सिहरन को न जाने कितनी बार अनुभव किया था, जिसे वे यूं ही दबा गए थे। पर क्यों ? क्या प्रतिभा प्रेम योग्य न थी ? बेचारी का क्या दोष था ? न जाने कितने सपने सजाकर

वह अपनी आशाओं की नन्हीं-सी नौका लेकर उनके पास आई थी, उसे पार लगा देने के लिए, पर उन्होंने उसे क्यों लौटा दिया ? कितनी तकलीफ हुई होगी उसके मन को ? देश के लिए उनका जितना कर्त्तव्य है उसके प्रति भी तो उतना ही है। और यदि वे कोशिश करते तो प्रतिभा को भी तो अपनी राह चला सकते थे।

वहीं पर उन्होंने निर्णय किया कि जेल से निकलने के बाद वे कुछ दिनों के लिए घर जाएंगे। माता-पिता को सारी बातें समझाएंगे और प्रतिभा से भी दिल से माफी मांग लेंगे। यदि वो मान करके बात नहीं करेगी तो वे उसके मान को सह लेंगे क्योंकि गलती तो उन्हीं की है न...।"

'पर मैं छूटूंगा कब ? अभी तो और तीन महीने बाकी हैं !' उन्होंने गहरी सांस लेकर अपनी चिंता कम करने की कोशिश की। पर वसंत ऋतु उन्हें विश्राम करने दे तब न ?

36

क्रांति को दबाने के लिए सरकार ने जिस दमन-नीति का सहारा लिया था उसके चलते सौ-सौ लोगों को जेल जाना पड़ा था। लोग जमींदार के अत्याचारों से बचने के लिए जब सरकार का सहारा लेते थे तो सरकार के बंदूकधारी सैनिक उन्हें दबाने के लिए उनके घर जला देते थे, कितनों को गोली मार देते थे और अनेकों को जेल में ठूंस देते थे। इस तरह से चारों ओर से अनगिनत क्रांतिकारी आकर कटक की जेल में भरे थे।

नवीन अब चोर और डाकुओं के साथ न थे। उन्हें अब उनकी ही श्रेणी के लोगों के बीच रखा गया था। नवीन उन लोगों के मन में शौर्य और साहस हमेशा बनाए रखने की

कोशिश किया करते थे। पर कभी-कभी उनका मन अंदर ही अंदर टूटने लगता था। कब तक चलेगा यह अत्याचार ? क्या इसका अंत नहीं है ? फिर वे अपने मन की हताशा को झटककर साहस का पल्ला पकड़ लेते थे।

वे सोच रहे थे—जेल से छूटते ही मैं सभी भागों में जाऊंगा, जो अत्याचार के शिकार हुए हैं वहां के लोगों में फिर साहस भर उन्हें उसके विरूद्ध खड़ा करूंगा। इसके बदले में चाहे मुझे जेल होनी हो तो हो जाए। अत्याचार के आगे सिर झुकाने से तो आजीवन कारावास भला। इस तरह सोचते-सोचते अचानक दूसरा विचार उनके मन में आया कि तो क्या वसंत ऋतु का मान बेकार हो जाएगा ? मैंने जिसका हाथ थामा था वो क्या जीवन भर गहरी सांसों के सहारे ही जिएगी ?

बीच-बीच में प्रकाश की बातें उन्हें याद आ जातीं। उन्हें तो उसने कभी भी चिंतित या विचलित नहीं देखा। क्रांतिकारी के अंदर जितनी दया, जितना धैर्य और जिन-जिन गुणों की जरूरत होती है वे सब प्रकाश के अंदर थे। वे मन ही मन सोचते क्यों मैं प्रकाश जैसा नहीं बन सकता ? उनकी भाषा में मैं क्या पावर-हाउस नहीं हो सकता, जिससे कि विद्युत निकलकर औरों को प्रभावित कर पाती ? नहीं पर उनकी तरह होने के लिए घर की ममता पूरी तरह छोड़नी होगी…। जेल में ऐसे ही अनेक भाव नवीन के मन में आते जाते रहते थे पर वह यह समझ नहीं पाते थे कि वे कौन-सी विचार-धारा में ही बहते रहे।

37

जेल से छूटने का दिन जैसे-जैसे पास आता जा रहा था। नवीन

के मन में उद्वेग उतना ही ज्यादा बढ़ा जा रहा था। अभी और भी पंद्रह दिन बाकी हैं। ओफ्फ् इतने दिन कैसे कटेंगे। और फिर धीरे-धीरे चौदह, तेरह बारह और ऐसे करते-करते अंतिम दिन भी आ पहुंचा। जितनी खुशी उन्हें उस उन्मुक्त जीवन की कल्पना दे रही थी उतनी ही चिंता उन्हें उन दायित्वों को निभाने की हो रही थी जो उन्हें बाहर जाकर निभाने थे।

आज नवीन को सब घेर कर बैठे हैं। वो उन सबको छोड़कर चला जाएगा। यह सोचकर सभी दुखी हो रहे हैं और उनमें से कुछ की आंखें भी भर आई हैं। उन सबको देखकर नवीन भी दुखी हो रहे थे। उन्हें छोड़ जाने का उन्हें भी गम था। कुछ भी हो, फिर भी नवीन उन्हें सांत्वना दे रहे थे। सभी उन्हें अपने-अपने पते-ठिकानों के बारे में बता रहे थे ताकि नवीन वहां जाकर खबर दे सकें। चूंकि वहां कागज आदि की कोई सुविधा न थी सो नवीन उनकी बातों को याद रखने की पूरी-पूरी कोशिश कर रहे थे। उन्हें यह विश्वास दिला रहे थे कि वे स्वयं उनके घरों में जाकर उनके परिवारजनों की खबर लेंगे और उन सबकी बातें भी बताएंगे। तभी उन्हें बीच में अपने परिवार की भी याद हो आई थी। वे सोच रहे थे कि मेरे इस आंदोलन में भाग लेने से मेरे परिवार की तो कोई आर्थिक-क्षति नहीं हुई है पर इनमें से न जाने कितने लोगों के परिवार भूख-उपवास में सोए होंगे। पर मेरा तो बल्कि नाम ही हुआ है इस आंदोलन से। वे मन ही मन सोच रहे थे कि इतिहास भी तो सेनापतियों के ही गुण गाता है पर साधारण सैनिकों को कौन याद रखता है जबकि उन्हीं के त्याग और क्रांति के लिए पागलपन की हद तक काम करने से ही विजय निश्चित होती है।

38

जेल से बाहर आते ही नवीन की नजरें प्रकाश के ऊपर पड़ीं। उन्होंने देखा कि वे मुस्कराते हुए उन्हीं की ओर बढ़े चले आ रहे हैं। नवीन भी उन की तरफ दौड़ गए और उन्हें जोर से गले लगा लिया। भावावेश में नवीन की आंखें भर आई थीं। प्रकाश बोले, "हां नवीन मैं तुम्हारा बेसब्री से इंतजार कर रहा था। तुम्हें बहुत सारी अच्छी और कुछ बुरी खबरें भी देनी हैं।" दोनों बात करते-करते आश्रम की ओर चल पड़े थे। खूब गहरी नींद में अचानक बुरा सपना देखकर कोई हड़बड़ा कर उठ बैठे ठीक वैसा ही नवीन को लग रहा था। उन्हें लग रहा था जैसे सब कुछ वैसा का वैसा ही हो। नयासड़क चौक पर उसी बरगद के पेड़ के नीचे वैसे ही बांस की डालियों की खरीद-बिक्री चल रही थी। सड़क पर तांगे, साइकिल आदि वैसे के वैसे चल रहे थे। पर फिर भी आज उन्हें कुछ नया-नया-सा लग रहा था।

प्रकाश गंभीर होकर बोले, "पिछले साल के अंदर क्या-क्या बदला है पहले तुम उसे जान लो।" अब उन्होंने बताना शुरू किया कि वे उनके घर गए थे। वहां वे कुछ दिन रहे थे। अब वे नवीन की विस्मित और जिज्ञासु नजरों को देखकर थोड़ा हंस पड़े थे और बोले, "तुम्हारी मां ने मुझे बहुत प्यार किया।" नवीन अब और भी आश्चर्यचकित हो गए थे। अरे ये घर के भीतर घुसे कैसे ? मां से मिले कैसे ? और जब प्रकाश ने बताया कि प्रतिभा के अंदर वास्तविक प्रतिभा छुपी हुई है तो वे रोमांचित हो उठे। फिर प्रकाश बोले, "प्रतिभा जी ने मुझे एक पत्र लिखा है पर वास्तव में वह तुम्हारे लिए है।" 'अँय ? क्या मैं सपना देख रहा हूं ?' नवीन के विस्मय की कोई सीमा न थी। जहां पर्दा-प्रथा का शासन हो वहां प्रकाश

का प्रवेश और फिर पत्र-व्यवहार ! बात क्या है ? नवीन की बालबुद्धि भरी बात को सुनकर प्रकाश बोले, "इसमें आश्चर्यचकित होने की कोई बात नहीं है। एक साल कोई कम नहीं होता और फिर यह तो क्रांति का समय है !"

आश्रम में पहुंचकर नवीन को आश्रम बड़ा श्रीहीन-सा लगा। न हीं लोगों की चहल-पहल और न ही उत्साह भरा वातावरण। चारों ओर कुछ वीरानी-सी। नवीन ने बहुत ही उद्वेग से पूछा, "देश की क्या हालत है ?" प्रकाश बोले, "यह आश्रम भी तो एक देश का ही प्रतिबिंब है। आज जो आश्रम की हालत है वही देश की है।" अब उन्होंने नवीन की हताशा को भांपा और बोलने लगे, "क्यों नवीन दुखी हो गए हो ? इस समय तुम्हारी जयजयकार कर, तुमसे क्रांति की दीक्षा लेनेवाला यहां कोई नहीं है। इस समय तुम्हारी ओर हो सकता है कि कोई नजरें उठाकर भी न देखे। पर जानते हो यह भी एक स्थिति है। इस समय यदि तुम हिम्मत रख सको तो यह तुम्हारी बहादुरी होगी।"

उनकी बात सुनकर नवीन को आश्चर्य लगा। बाहर आने का सुख इस तरह हवा बन जाएगा, यह तो उन्होंने सोचा भी न था। चलो फिर भी अब वे मुक्त हैं यही सोचकर वे प्रसन्न थे।

39

प्रकाश ने नवीन के हाथ में पत्र पकड़ा कर "मुझे काम है" कहा और बाहर चले गए। नवीन ने चिट्ठी लेकर बार-बार पढ़ी पर फिर भी उसका जी न भरा। तभी आश्रम के बचे-खुचे लोग उसे घेरकर बैठ गए थे। नवीन पत्र बंद कर उनसे हंस-हंसकर उनके हालचाल पूछने लगे थे। तभी उनकी नजर पुरंदर नामक



स्वयंसेवक पर पड़ी। वह जब पढ़ाई छोड़कर यहां आया था तो उसके पिता ने उसे कितना मारा था। यहां तक कि मारते-मारते उसकी पीठ पर ही उनका छाता टूट गया था। फिर भी वो छिपते-छिपाते यहां आश्रम में आ गया था। नवीन ने उसके

हालचाल पूछे तो वह बोला, "सुना है मेरे पिता ने मुझे अपनी संपत्ति से बेदखल कर दिया है पर देश को मुक्त कराने का संकल्प लेकर आया हूं अब लौटूंगा नहीं।" कितना त्याग ! सोचते ही रह गए नवीन।

फिर नवीन ने देश के विषय में जो सुना उससे उनका खून खौल उठा। उन्होंने ऐसे अत्याचार की तो कभी कल्पना भी न की थी। कहीं पर पुलिस की लाठियों से एक बुढ़िया का सिर फट गया तो कहीं आबकारी नीलाम के समय पिकेटिंग कर रहे स्वयंसेवकों को तंग किया गया, अपमानित किया गया ! और कहीं पति को बांधकर उसके सामने ही उसकी पत्नी से बलात्कार किया गया। सभी कह रहे थे कि यह सच है कि लोग अत्याचारों से भयभीत हो दब गए हैं पर यदि उन्हें फिर से साहस दिया जाए, शौर्य की भावनाएं जगाई जाएं तो एक बार फिर वे अत्याचारों के विरूद्ध हुंकार भर सकते हैं। पर दुख की बात तो यह थी कि जो लोग दूसरों में शौर्य जगा रहे थे वे स्वयं ही डरे हुए थे।

कुछ समय के बाद सब अपने-अपने काम से चले गए थे। नवीन फिर से चिट्ठी पढ़ने बैठ गए। वे बहुत चिंतित थे। वे सोच रहे थे कि जिस क्रांति ने सफलता की निश्चितता का वचन दिया था वह आज टूटती दिखाई पड़ रही है। पर उस वचन की रक्षा का दायित्व भी आज उन्हीं लोगों पर है जो क्रांति की आवाज सुन दौड़ पड़े थे। वे स्वयं को चेता रहे थे—अरे मैं तो कहता था कि मैं पूर्णतः बंधनहीन हूं। मैं पूर्ण समयदानी की तरह क्रांति के लिए काम करूंगा। पर आज घर की ओर मैं क्यों खिंचा जा रहा हूं। सारी आस और सारे संपर्कों को छोड़कर देश के लिए प्राण दे देने से ही तो देश स्वाधीन हो पाएगा।

40

नवीन रात को लेटे-लेटे अपने कर्त्तव्य के संबंध में सोच रहे थे। अचानक उन्होंने लालटेन को अपने पास खींचकर प्रतिभा की चिट्ठी पढ़नी शुरू कर दी थी। उसने प्रकाश को लिखा था—

"....यदि वे सोचते हैं कि विवाह उनकी इच्छा से नहीं हुआ इसलिए वे विवाहित जीवन के उत्तरदायित्वों को वहन नहीं कर रहे हैं तो मैं भी ऐसा कह सकती हूं कि इस विवाह में मेरा भी कोई हाथ नहीं है। मैं भी तो इस दायित्व से मुक्त हो सकती हूं। वे यदि मुझे अपने लिए उपयुक्त नहीं मानते तो मैं भी उन्हें अपने लिए उपयुक्त नहीं मान सकती हूं—मेरा भी यह अधिकार है। यदि वे अपने को बड़ा क्रांतिकारी कहकर मेरी उपेक्षा कर सकते हैं तो मैं भी अपने को बड़ी क्रांतिकारिणी कहकर सारे संसार की उपेक्षा कर सकती हूं। आपकी प्रेरणा से मैं अब पहले वाली अबला नारी नहीं हूं जो हर समय पुरुष के आगे हाथ जोड़कर खड़ी रहती है। क्रांति का पथ मेरे लिए भी खुला है। आज यदि यहां की जनता जमींदार के विरोध में खड़े होने के लिए मुझे सहायक मानती है तो मैं राजी क्यों न हूंगी ? मैं भी घर-संसार छोड़ दूंगी। अपने जीवन को मैं भी इस विशाल नदी में फेंक दूंगी। मुझे भी तैरने का साहस है। उतराते हुए हो या तैरते हुए मैं भी समुद्र की ओर जाऊंगी। यदि डूब भी जाऊंगी तो मुझे चिंता नहीं है। क्योंकि मैं भी तो दुनिया में अकेली हूं। मेरा कोई नहीं...।"

प्रतिभा ऐसी चिट्ठी लिख सकती है ? क्रांति का ऐसा चित्र आंक सकती है ? यदि उसकी खुद की प्रतिभा न होती तो क्या प्रकाश कुछ ही दिनों में प्रेरणा देकर उसे बदल पाते ! इतनी गुणवान पत्नी का वे निरादर करते आए हैं यह दुख उन्हें सता

रहा था। पर अपने ही ससुर के विरूद्ध जनता से मिल वह नेत्री बनेगी यह सोचते ही वे भय से सिहर उठे थे। क्रांति के पथ पर चलने के लिए उन्हें अपने माता-पिता को छोड़ना होगा। सारी धन-संपत्ति को छोड़ना होगा। यह सोचकर वे चिंतित हो गए थे। अब तो उनका मन प्रकाश को दोष देने से भी पीछे नहीं हटा था। सोच रहे थे कि कॉलेज के समय प्रकाश ने उन्हें कुछ सोचने भी नहीं दिया। उन्हें इस प्रकार विचारों से उत्तेजित करता रहा कि वे इस आंदोलन में कूद पड़े। प्रकाश ने ही उन्हें टूटी नाव में बिठाकर समुद्र में छोड़ दिया है।

41

बिस्तर पर सोचते-सोचते न जाने कब उनकी आंख लग गई थी। आधी नींद में उन्होंने एक अजीब सपना देखा। उन्होंने देखा कि काठजोड़ी नदी में बाढ़ आ गई है। वह भयंकर उफान पर है। उसने दोनों किनारे तोड़ दिए हैं। उसी उफनती हुई नदी के बीच एक लकड़ी तैर रही है। तभी उन्हें कहीं से संगीत का स्वर सुनाई दिया। "मेरी अकेली जीवन नौका, नहीं है मेरा कोई खिवैया।" अरे यह तो प्रतिभा की आवाज है। तभी उस लकड़ी ने मनुष्य का आकार ले लिया। वह गीत गाने लगी थी। वह रो-रोकर गीत गा रही थी। किनारे पर लोगों की भीड़ जमा हो गई थी। लोग चिल्ला रहे थे, "अरे बह गई, बह गई !" वे नदी में कूदने ही वाले थे प्रतिभा को बचाने के लिए पर तभी प्रकाश ने उन्हें आकर पीछे से पकड़ लिया था। प्रकाश उसे हंस-हंसकर बड़े ही निष्ठुर ढंग से कह रहे है—"नवीन, कहां जा रहे हो ? डूबने दो उसे !" नवीन उन्हें धक्का देकर नदी में कूद पड़े। तभी उनकी नींद खुल गई। उनका दिल धड़क रहा था। उन्होंने

चारों तरफ देखा। कोई भी नहीं था बस पास में लालटेन जल रही है और पास ही प्रतिभा की चिट्ठी रखी है।

इस सपने के बाद वे स्वयं को अपराधी समझ रहे थे। फिर वे सोचने लगे कि प्रतिभा को साथ रखें मगर वे काम कैसे करेंगे। तभी उनके दिमाग में एक उपाय आया। वे सोचने लगे कि जिस क्रांति के प्रचार-प्रसार में वे लगे हैं वही क्रांति तो उनके गांव तक भी पहुंच गई है, तभी तो वहां के लोग अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठा रहे हैं। तो कितना अच्छा होता यदि वे अपनी जमींदारी अच्छी तरह संभाल लेते। इससे लोगों की भलाई होगी, माता-पिता खुश होंगे और प्रतिभा भी अकेली नहीं रहेगी। पर बाद में एक प्रश्न उनके मन को कचोटने लगा—तो क्या मैं एक भला जमींदार होकर अपने गांव में रहूंगा और वैसे ही मेरा जीवन खत्म हो जाएगा ? पर आज तक उनके साथ जो इतने क्रांतिकारियों ने काम किया और अत्याचार भोगे वे उनको क्या मुंह दिखाएंगे ? उन्हें अपने प्रश्न का उत्तर नहीं मिला।

42

प्रतिभा ने प्रकाश के नाम जो पत्र लिखा था वह जाह्नवी देवी के कहने और उसे उत्तेजित कर देने पर ही लिखा गया था पर उसने कुछ रूप बदल दिया था पत्र का। जैसे-जैसे लोगों का क्रोध बढ़ता जा रहा था वैसे-वैसे रामहरिबाबू बात-बात पर असहयोग आंदोलन, प्रकाश और नवीन को गालियां देने लगते थे। एक दिन जब जाह्नवी देवी ने कहा कि लोगों को कहो कि बेटे के लौटने तक थोड़ा धैर्य रखें तो रामहरिबाबू और भी आगबबूला हो अपने बेटे पर चिल्ला पड़े थे—"वह भी क्या

इंसान है ?"

एक दिन जाह्नवी देवी प्रतिभा के पीछे ही पड़ गई थीं कि वह नवीन को पत्र लिखे। क्योंकि वे रामहरिबाबू की गतिविधियों को देख रही थीं। और इन परिस्थितियों में नवीन का लौटना इतना सरल न था। वे बोलीं, तू लिखना कि मां रोती है। तुम जो भी कर रहे हो वो ठीक है पर एक बार आकर माता-पिता को देख जाना क्या ठीक नहीं है ? पर बहू जनता के कोप और पिताजी की गाली-गलौच के बारे में तू कुछ मत लिखना। कुछ समय तक चुप रहने के बाद प्रतिभा बोली, "ठीक है मैं पत्र लिखूंगी।" उसने पहले सोचा कि एक बार सासुजी की बातों में आकर उसका कितना अपमान हुआ था पर अब वह ऐसा नहीं होने देगी। उसके बाद उसने बहुत सोच-समझकर ऐसी एक चिट्ठी लिखी। चिट्ठी लिखने के बाद उसके मन में एक प्रतिज्ञा करने की इच्छा जागृत हुई थी और डाक में डाल देने के लिए नौकर को चिट्ठी देते समय उसने मन ही मन प्रतिज्ञा कर ली थी—"बस यह मेरा आखिरी प्रयत्न है। जेल से छूटने के यदि पंद्रह दिन के अंदर वे नहीं लौटते तो मैं अकेले ही जीवन बिताऊंगी। मैं स्वतंत्र हो जाऊंगी और तब मेरा काम भी सिर्फ क्रांति होगा। जहां अत्याचार होगा मैं वहां पहुंचूंगी, जहां आंसू बह रहे होंगे मैं वहां जाकर सेवा करूंगी।"

जाह्नवी देवी को जब पता चला कि बहू ने बेटे के पास पत्र लिखा है तो वह बहुत खुश हुई। बहू की आंखों में छलछलाए आंसुओं को देखकर वह और भी खुश हो गई। पर उन्हें यह पता नहीं था कि ये आंसू दुख के नहीं बल्कि त्याग के मार्ग पर पहला कदम रखने की घोषणा कर रहे थे।

43

चिट्ठी डाल देने के दो दिन तीन दिन के बाद प्रतिभा अपने भविष्य में बारे में सोच रही थी कि तभी उनका नौकर रामा पहुंच गया, वहां अपनी छोटी मालकिन से कुछ बातें करने। एक गुप्त और बहुत जरूरी बात करने वह उसके पास बैठ गया था। उसने बताया कि गांव की जनता कल एक सभा करनेवाली है। जमींदार जी की गतिविधियों को देखकर जनता का धैर्य खत्म हो गया है। उसने तो एक को मारते-मारते मार ही दिया। और अब इस विद्रोह में अगुआ बने लोगों को वे जेल में ठूंसने की योजना बना रहे हैं। पुलिस के पास जाने से वे मारपीट कर भगा देते हैं। थानेवाले दरखास्त को फाड़कर फेंक देते हैं। बोलिए अब और क्या होगा ? फिर उसने कुछ रुक-रुककर कहा—"गांव की जनता केवल आपके भरोसा दिलाने पर रुकी है नहीं तो जमींदार जी को...।" "क्या मार डालते ? बोल ?" बीच में ही प्रतिभा पूछ बैठी थी। उसके बार-बार पूछने पर नौकर ने बताया, "नहीं, छोटी मालकिन पर गांव के लोग बहुत गरम हैं पर वे कह रहे हैं कि हम छोटी मालकिन को अपनी बात कह देने के बाद ही जो करना है सो करेंगे।"

प्रतिभा सब सुनकर कुछ देर के बाद बोली, "तुम उन लोगों को छोटे मालिक के आने तक इंतजार करने को कहो। और बीस के बाद तो वे आ ही जाएंगे। मैंने उन्हें पत्र लिखा है।" पर रामा को उसकी बात नहीं भायी। वह बोला, "छोटी मालकिन, लोग कह रहे हैं कि छोटे मालिक अब और वापस नहीं आएंगे। वे तो गांधीवादियों के दल में मिल गए हैं। यदि उनकी प्रतिक्षा करते रहेंगे तो यहां सब खत्म हो जाएगा।" तभी प्रतिभा के दिमाग में एक और युक्ति सूझी। वह बोली, "सभी

से कहो कि वे मिलकर छोटे मालिक के पास एक पत्र लिखें। उसमें उन्हें सीधे यहीं आ जाने के लिए लिखें। आज से ठीक पांच दिन बाद अगले शुक्रवार को उनके छूटने की तारीख है। ठीक उसी समय उनमें से कोई कटक चला जाए। जाओ अपने मुखियाओं को कह दो कि मैंने यही कहा है।"

शाम को रामा लोगों से बातचीत कर वापस आकर बोला, "छोटी मालकिन, उन्होंने आपकी बात मान ली है पर फिर भी वे कह रहे थे कि यदि वे वापस न आए तो ?" इस पर प्रतिभा ने उत्तेजित स्वर में कहा, "नहीं आएंगे तो मैं खुद तुम्हारी समस्या से जूझूंगी। इस शुक्रवार के ठीक पंद्रह दिन बाद जो शुक्रवार आएगा। उसी के अगले शनिवार को तुम सभा करना। मैं उस सभा में आऊंगी। वो नहीं आएंगे तो मैं खुद तुम्हारी समस्या का समाधान करूंगी।"

वास्तव में गांव की जनता इस ढंग से एक दबाव डालना चाह रही थी रामहरिबाबू के ऊपर। क्योंकि जब वे घर में ही अपनी पत्नी और बहू के मुंह से सब बातें सुनेंगे तो वे अवश्य डर जाएंगे। पर जनता क्या जाने कि प्रतिभा के विचार किन रास्तों पर चल पड़े थे ?

44

प्रतिभा ने रामा को बड़े जोश में सब कह तो दिया था पर अब उसे डर लग रहा था। यदि सचमुच सौ-सौ लोग सामूहिक रूप से रामहरिबाबू पर आक्रमण करने आएंगे और इधर नवीन भी न पहुंचे होंगे तो क्या वह उस समूह की नेत्री बन अपने ससुर को मारने आएगी ? हां वह उनको जाकर शांत रहने के लिए

कहेगी पर इससे क्या समस्या सुलझ जाएगी ? उनके दुख-दर्द कैसे दूर होंगे ? और पहली बात कि अपने सास-ससुर और समाज से संबंध तोड़ क्या वह इस विद्रोही जनता से सीधा संपर्क रख पाएगी ? पर अंत में वह अपनी सास को बिना बताए न रह पाई थी कि विद्रोही जनता उसके ससुर की जान लेने पर उतारू है। "तुझे कैसे पता चला ?" सास द्वारा पूछने पर प्रतिभा को मजबूरन बताना पड़ा कि रामा ने ही उसे यह सब बताया है। अब जाह्नवी देवी के रामा से पूछने पर उसने बताया—"मालकिन, मैंने तो एक उड़ती-उड़ती खबर सुनी थी, पर सचमुच थोड़े लोग ऐसा करेंगे ?" पर फिर भी जाह्नवी देवी के मन में चिंता बैठ गई थी। सो प्रतिभा के मना करने पर भी उन्होंने यह बात अपने पति को बता दी। क्योंकि पहले से ही वे जान लेंगे तो अपने बचाव का कुछ न कुछ रास्ता तो निकाल लेंगे।

प्रतिभा के मन में जो आशंका थी कि रामा विद्रोहियों का दूत बनकर उसके साथ मिलकर ही यह चक्कर चला रहा है और यह समझकर ससुरजी आगबबूला हो जाएंगे, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। वे केवल उत्तेजित होकर बोले, "मैं सारी बातें जानता हूं। उनकी कमेटी में जो भी विचार-विमर्श होता है उन्हीं का आदमी मुझे आकर बता जाता है। मैं अपने बचाव का पूरा बंदोबस्त कर चुका हूं ये कव्वे मेरे पीछे लगे हैं। जब तक ढेर सारे एक साथ न मरेंगे तब तक उनकी छाती ठंडी नहीं होगी।" फिर कुछ देर बाद वे स्वयं से ही कहने लगे थे, "मैंने पुलिस और जाजपुर के उच्च पदाधिकारियों को खबर कर दी है। जब दल के दल बंदूकधारी आएंगे तब उनका मजा निकलेगा।"

45

रामहरिबाबू की बंदूकधारियों की बात सुनकर प्रतिभा परेशानी में पड़ गई थी। वे लोग यदि सभा करेंगे तो वहां पर हजार-हजार लोग बैठे होंगे। उन पर गोलियां चलाई जाएंगी तो अनगिनत तो वहीं मर जाएंगे। अनेक जख्मी हो जाएंगे। ओफ्फ् कितना भयंकर दृश्य होगा। पर यह सब होगा ही क्यों ? गरीब लोगों के अत्याचार के विरूद्ध सिर उठाने पर उनके सिरों को कुचलने के लिए ही यह कराया जाएगा ? क्या धन एक ऐसी चीज है जिससे इस दुनिया में कुछ भी कराया जा सकता है ? पुलिस और उच्च पदाधिकारी क्या सब इसी धन के वश में हो जाते हैं ? पर यह धन आता कहां से है ? उन्हीं गरीब लोगों से चूसकर ही तो यह धन कुछ हाथों में इकट्ठा रहता है। ये सारी भावनाएं उसके मन में आते ही उसका मन अपने पति के प्रति श्रद्धा से भर गया। वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। पर साथ ही वह सोच रही थी कि उन्हें इस परिस्थिति में गांव आकर यहां की जनता की मदद अवश्य करनी चाहिए। फिर उसने रामा को बुलाकर उसे चिंता न करने को कहा। साथ ही उसने कहा कि अन्य सभी लोगों को भी डरने की कोई जरूरत नहीं है। सभी नवीन के आने तक इंतजार करें। पर रामा के मुख पर निरूत्साह को देख वह समझ रही थी कि उसका मनोबल टूट गया है। अब वह स्वयं को भी दोषी समझ रही थी। रामा ने उसे जो भी बताया था वह बात उसे अपनी सास को नहीं बतानी चाहिए थी। साथ ही लोग भी उस पर संदेह करेंगे कि वह अंदर की बात बताकर उन्हें विपत्ति में डाल रही है।

उसने सोचा कि यदि नवीन आ जाते हैं तो वह खुलकर

जनता के पक्ष में बोलेगी। उसने उन्हें वचन दिया है। हां, वह जरूर जाएगी उनकी सभा में। वह मजबूत होकर अपने सास-ससुर, पास-पड़ोसी किसी की भी परवाह न कर वह सब कहेगी जो भी उसे कहना है। पर क्या कहेगी ? कैसे कहेगी ? सोचते-सोचते वह पसीने-पसीने हुई जा रही थी। फिर भी वह अपने को हिम्मत बंधा रही थी। वह सोच रही थी, जैसे स्वामी परित्यक्ता सीता ने इस विदीर्ण धरती के अंदर शरण ले ली थी वैसे ही वह भी अपने आप को इस उन्मुक्त जगत में मिला देगी।

46

एक के बाद एक दिन बड़ी मुश्किल से गुजर रहा था। और अंत में पंद्रह दिन बीतने लगे। बस आ रहे होंगे, अभी बीच रास्ते में होंगे सोच-सोचकर नवीन का इंतजार हो रहा था पर उनका कहीं अता-पता न था। इस बीच प्रतिभा को खबर मिली थी कि लोग कटक भी गए थे नवीन को लेने पर उसका कुछ पता नहीं। जिस दिन पंद्रह दिन पूरे हो गए, प्रतिभा ने रामा को बुलाकर कहा, "जाओ लोगों से कहो कि कल वे सभा का आयोजन करें। मैं वहां पहुंचूंगी।" पहले तो रामा को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ पर जब बार-बार उसने जोर देकर अपनी बात कहीं तो रामा ने एक टांग पर दौड़कर सारे गांव में खबर दे दी।

प्रतिभा के मन में कितना चोट खाया अहंकार और अत्याचारित जनता के प्रति कितनी सहानुभूति जमा है यह कोई भी नहीं नाप सकता था। वह सोच रही थी—"उनका इतना अहंकार ! उस रात मैं खुद उन्हें बुलाने गई थी पर उन्होंने मुझे

भिखारिन की तरह दुत्कार दिया था। और फिर मैंने चिट्ठी लिखी उसका भी कोई उत्तर नहीं। ठीक है। पूरा गांव उनका कुछ नहीं है, गांव की जनता उनकी कुछ नहीं है, माता-पिता उनके कुछ नहीं है। और मैं तो उनकी कुछ भी नहीं हूं। परायी लड़की हूं ना। पर यहां मैं अपने सास-ससुर के लिए नहीं आई थी। मेरी भी कोई इज्जत है। मैंने लोगों को वचन दिया है कि पंद्रह दिन खत्म होते ही सभा का आयोजन करो। मैं उसमें जाऊंगी। हां जाऊंगी, जाऊंगी, अवश्य जाऊंगी।"

तभी बाहर रामहरिबाबू की आवाज आई। प्रतिभा ने सोचा कि नवीन शायद आ गए। पर अगले क्षण वह जान गई थी कि उसकी उत्कंठा निर्मूल है। कुछ समय के बाद जाह्नवी देवी ने उसे धीरे से कहा, "बहू तूने सुना ना ? ये लोग नगाड़े बजा-बजाकर चारों ओर प्रचार कर रहे हैं कि कल हाट लगने की जगह एक सभा होगी और उस सभा को तू संबोधित करेगी। जानती है तेरे पिताजी सुनकर कितना गुस्सा हो रहे हैं कि ये लोग उनकी बहू का नाम बदनाम कर रहे हैं। वे तो आपे से बाहर हो गए हैं। पुलिस के पास भी उन्होंने लोग भेज दिए हैं।" प्रतिभा सब सुनकर भी चुप थी।

उस रात वह पलंग पर न सोकर जमीन पर चटाई बिछाकर सोई थी। मन ही मन उसने पलंग से विदाई ले ली थी। उसने सारे गहने उतारकर बक्से में रख दिए थे। उसके हाथों में बस दो चूड़ी बाकी थी। वह आगामी अनजाने भविष्य की तैयारी कर रही थी।

भोर की ठंडी हवा के स्पर्श से लगी नींद में उसने एक सपना देखा। उसने देखा कि नवीन उसका हाथ पकड़कर बहुत अनुनय-विनय कर रहे हैं, क्षमा मांग रहे हैं। उसने झटककर अपना हाथ छुड़ा लिया। वह बोली थी कि किसी ने भी कोई

गलती नहीं की है फिर मुझसे माफी मांगने की क्या जरूरत है ? फिर वह किसी शून्य में मिल जाती है। नवीन बड़ी कातर दृष्टि से उसी की ओर देखे जा रहे हैं। उसका भी मन नवीन के पास लौट जाने को हो रहा है पर बीच में शून्य है, महाशून्य। कोई किसी से नहीं मिल पा रहा है।

47

सुबह हुई। रामहरिबाबू आनेवाले उच्च पदाधिकारी, पुलिस अफसर और सिपाहियों के लिए रहने और खाने का बंदोबस्त करवा रहे हैं। इधर उन्होंने लोगों को यह पता करने के लिए भी भेज रखा है कि सभा में कौन-कौन और कब आ रहे हैं। उनके मन में डर तो है पर फिर भी वे यहां से वहां और वहां से यहां अपने काम से घूमते फिर रहे हैं। जाह्नवी देवी सुबह-सुबह नहा-धोकर भगवान के सामने प्रार्थना कर रही है कि किसी का भी अनिष्ट न हो।

प्रतिभा सुबह-सुबह नित्यकर्म समाप्त कर अपने हर काम से विदाई ले रही है। उसके शरीर पर केवल हाथों में सोने की दो चूड़ी देखकर जाह्नवी देवी ने पूछा, "क्यों बहू, पहले ही तो तूने सारे गहने उतार दिए थे। शरीर पर था ही क्या जो बाकी के भी उतार दिए ?" प्रतिभा ने गंभीर होकर कुछ समय चुप रहने के बाद कहा, "माँजी, गहनों का बक्सा आपके कमरे में ही है।" जाह्नवी देवी उसकी बात का अर्थ समझ न सकीं ? उन्होंने सोचा कि बहू शायद डर रही है कि लोग घर में घुसकर सोना-गहना ले जाएंगे, सो वे उसे हंस-हंस कर सांत्वना दिए जा रही थीं कि ऐसा कुछ नहीं होनेवाला। फिर उन्होंने गौर किया कि आज बहू ने उनके लिए बहुत सारे पान बना दिए हैं पर

खुद एक भी नहीं खाया। आज उसने भोजन में भी अनेक पकवान बनाए हैं पर खुद तो कुछ भी नहीं खाया। उनके पूछने पर प्रतिभा ने कहा था, "मेरा पेट ठीक नहीं है।"

दोपहर में भोजन कर जब सासूजी थोड़ा विश्राम करने लगी तो वह उनके पैर दबाने लगती है। "तूने तो आज कुछ खाया भी नहीं बहू ! अच्छा जा, सो जा।"कहने पर भी प्रतिभा ने उनकी बात नहीं मानी। और जब उन्हें हल्की-हल्की झपकी आने लगी तो उनके पैरों पर अपना माथा लगाकर उसने उन्हें प्रणाम किया। मन ही मन में वह बोली, "मां मुझे विदा करो।" कहते-कहते उसकी आंखें भर आई थीं।

वहां से आकर वह भविष्य के लिए खुद को तैयार करने लगी थी। एक सुनसान मैदान में चांदनी रात में कोई अकेला खड़ा हो उसे बिलकुल वैसा ही लग रहा था। पर अब कुछ भी सोचने का समय नहीं था। तुरंत ही घर से उसे निकल जाना था। वह रामा को साथ ले जाएगी। वहां से सीधी सभा में जाएगी और जो भी मन में आएगा वहां कहेगी। फिर प्रकाश जहां होगा वहां जाएगी और वहीं अपना पूरा जीवन समर्पित कर देगी।

प्रकाश की बात सोचते ही उसे नवीन की याद आ गई। वह सोचने लगी कि प्रकाश के साथ रहने पर नवीन से भी जरूर मुलाकात होगी और फिर···पर उसने चिढ़कर उस भावना को अपने मन से निकाल दिया। "नहीं, मेरा अब उनके साथ पति-पत्नी का रिश्ता नहीं है। एक परिचित आदमी की ही तरह पहचान रहेगी। शायद वह भी नहीं होगा। वो मेरे कौन हैं और मैं भी उनकी कौन होती हूं ?"

49

हाट लगनेवाले मैदान में शाम को सभा होगी, सुनकर चारों ओर से लोग-बाग वहां के लिए चल पड़े हैं। ऐसा लग रहा था जैसे सभा में सम्मिलित होने से सारा अत्याचार समाप्त हो जाएगा। इसके अलावा चारों ओर यह खबर जंगल की आग-सी फैल गई थी कि प्रतिभा देवी इस सभा को संबोधित करेंगी। नवीन भी देश के लिए जेल गए हैं और अब उनकी पत्नी भी अपने पति के पदचिह्नों पर माता सीता सी चल पड़ी हैं। इस दृश्य को देखने को सौभाग्य मानकर अनेक लोग उधर खिंचे चले आ रहे थे।

शाम होने से पहले वहां लगभग दो-तीन हजार लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी। उच्चपदाधिकारी तथा अनेक बंदूकवाले पुलिस के लोग भी वहां जमा हो गए थे, सभा पर नजर रखने को। पुलिस को देखकर अनेक लोग भयभीत हो गए थे पर चूंकि सभी एक साथ थे इसलिए भय के चिह्न कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे। बल्कि लोगों के मनों में अत्यधिक जोश उमड़ता जा रहा था। उच्चपदाधिकारी कुर्सी पर बैठे थे। उनके सामने एक मेज थी। मेज के दोनों ओर पुलिस इंस्पेक्टर और सब-इंस्पेक्टर थे। मेज पर दो कापियां और पेंसिल रखी थी। उच्चपदाधिकारी महोदय बड़े निरूत्साह से चारों ओर देख रहे थे। उनके मुंह पर विषाद की छाया थी।

धीरे-धीरे कोलाहल शांत हो गया था। प्रकाश और पुरंदर सभा के बीच चारों ओर घूम-घूमकर लोगों को ससम्मान बिठा रहे थे कि तभी प्रकाश की नजरें उस उच्चपदाधिकारी पर पड़ीं और वे बड़े बेपरवाह से उससे बोले, "क्यों महेंद्रबाबू ! ओहो तो आप यहां आए हैं गोली मारने का आदेश देने ? चलो अच्छा

है। कई लोग रंगमंच पर आपका अंतिम अभिनय भी देखने का सौभाग्य पा जाएंगे।''

एक समय के अपने इस ससम्माननीय मित्र को अवश्य ही कुर्सी पर बिठाना चाहिए, यह विचार महेंद्रबाबू के मन में आया था, पर उन्होंने वह अपने मस्तिष्क से झटक दिया। एक उच्चपदाधिकारी होकर उन्हें दबना नहीं चाहिए सो यह सोचकर कुछ गरम होकर उन्होंने प्रकाशबाबू को उत्तर दिया, ''आप लोग यदि हिंसा या अशांति फैलाएंगे तो हमें गोली चलानी पड़ेगी, इसमें आश्चर्य की बात क्या है ?'' ''हमें यदि गोली का डर होता तो हम अवश्य सोचते कि गोली खाने में ही हमारी मुक्ति है ?'' कहकर प्रकाश ठठाकर हंस पड़े थे। महेंद्रबाबू ने चिढ़कर बातों का रुख मोड़ दिया था और अंत में बेचैन होकर पूछ बैठे कि, ''प्रतिभा देवी सभा में कितने बजे आएंगी ?'' उन्हें उनका उत्तर नहीं मिला पर महेंद्रबाबू का चेहरा गंभीर हो गया था।

ठीक समय पर सभा आरंभ हो गई थी। पुरंदर ने खड़े होकर देश की परिस्थिति के संबंध में भाषण देना शुरू कर दिया था।

49

संध्या गहराने लगी थी। सभा के बीच में एक बड़ा बल्ब और चारों कोनों पर चार बड़े-बड़े बल्बों की व्यवस्था थी। पुरंदर देश-विदेश के सभी क्रांतियों के बारे में कुछ न कुछ बोलते चले जा रहे थे।

तभी सभा के पीछे थोड़ा-थोड़ा कोलाहल सुनाई पड़ा। धीरे-धीरे सभा की नजरें पीछे की ओर मुड़ गईं थीं। 'छोटी मालकिन आ रही हैं', 'प्रतिभा देवी आ रही हैं' का एक दबा स्वर चारों ओर फैलता जा रहा था और देखते ही देखते

'हरिबोल', 'महात्मा गांधी की जय' के नारों से सभा-स्थल गूंज उठा। खुद उच्चपदाधिकारी भी उस ओर देखने लगे थे—ये क्या वही बालिका है, जिसे एक दिन उन्होंने हृदय में स्थान दिया था ? प्रकाश प्रतिभा को भीड़ से निकालकर सभा के बीच तक ले आए थे।

प्रतिभा के चेहरे पर संकोच के कोई चिह्न नहीं थे बल्कि उसकी आंखों से लगातार एक ज्योति निकल रही थी। प्रकाश ने धीरे से उससे कहा, "तुम्हें जो भी कहना है कह दो। लोग बहुत देर से आ चुके हैं और बहुत कुछ सुन भी चुके हैं।" पुरंदर के भाषण समाप्त होने के कुछ क्षणों के बाद प्रतिभा ने कुछ ऊंचे स्वर में आरंभ किया, "भाइयो, मैं आज पहली बार पिंजरे से निकली हूं। अच्छी तरह से अभी उड़ना नहीं आता, इसलिए आप लोग मुझसे ज्यादा आशा न करना। पर मैं आप लोगों को इतना बता देना चाहती हूं कि मैं आपके दुख में शामिल होने के लिए बाहर आई हूं। यदि आपका भला होगा तो मेरा भला भी होगा और अगर आपका बुरा होगा तो मेरा भी बुरा होगा। भोर होते ही जैसे पंछी चहचहाकर प्रातःकाल की घोषणा कर देते हैं ठीक वैसे ही आज की यह सभा सारे अत्याचार का अंत और शांति के आलोक के विस्तार की चहचहाहट बने। मैं भी अपनी सीमित शक्ति आपके साथ मिला दूंगी। मुझे और ज्यादा कुछ नहीं कहना है।" इतना कहकर वह शिथिल होकर बैठ गई थी। उसे लग रहा था न जाने किस मंत्र-बल से वह उतना कह गई थी पर अब वह शक्ति जैसे शरीर से चली गई थी।

जयजयकार के बीच 'रास्ता छोड़ो', 'हटो, हटो' की आवाजें आने लगी थीं। तभी सबने देखा कि नवीन उसी ओर बढ़े चले आ रहे हैं। उनकी नजरें प्रतिभा पर पड़ीं और प्रतिभा ने भी उनको देखा। कुछ समय वे लगातार एक दूसरे को देखते रहे।

कुछ दूरी पर खड़े होकर महेंद्रबाबू भी उन्हें दुखी होकर देखे जा रहे थे।

प्रतिभा को स्पष्ट करने के लिए वे तुरंत आवेग भरे कंठ से प्रकाश को कहने लगे कि वे किन कारणों से यहां वक्त पर नहीं आ पाए। रास्ते में एक स्थान पर भीषण अत्याचार हो रहा था सो वे वहीं····।

पर प्रकाश ने उनकी ज्यादा बात नहीं सुनी, वे खड़े होकर कहने लगे थे।

"मेरा परिश्रम सार्थक हो गया। क्रांति का गठबंधन होकर तुम दोनों सदा जीवित रहो। तुम्हारा दुख ही चिरसुख हो, निर्धनता ही संपदा बन जाए और विच्छेद ही मधुर-मिलन बन जाए, यही मेरा आशीर्वाद है तुम जैसे आदर्शवादी क्रांतिकारियों को।"

●●

विनायक कम्प्यूटर्स, दिल्ली-32 द्वारा लेज़र टाइपसेट और
शिवम् ऑफसेट, नारायणा, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Tamil Nadu, Tripura, Uttar Pradesh, Uttranchal, Andaman & Nicobar Islands, Chandigarh and Pondicherry

In most of the states health and physical education, moral education, art education, work experience are covered under co-scholastic areas In Kerala, yoga is given importance In Pondicherry value education has been given more importance

Instructional Time

Out of 24 states/union territories which have responded 19 states/UTs have an average working days between 200 to 241 days Chandigarh has the highest number of working days (241) whereas Assam has the least number of working days (156) Five states/UTs have an average working days between 156 to 190 days Andhra Pradesh, Bihar, Karnataka, Manipur, Nagaland, Orissa, Punjab and West Bengal did not provide any information

The duration of period varies from 30-50 minutes Out of 23 states/UTs, which have provided information, six states have 45 minutes duration of a period, 14 states have 40 minutes duration and only two states, i e Himachal Pradesh and Jammu & Kashmir have 35 minutes duration

In scholastic areas number of periods per week varies from 29 to 48 In co-scholastic areas the number of periods per week varies from 0 to 12 Assam has not provided even a single period for co-scholastic aspects.

Activities organized under Co-scholastic areas

The data received from the states/UTs indicated that at higher secondary stage under co-scholastic areas, debate activity is taking place in 25 states/UTs The states which are not organizing debate activity are Andhra Pradesh, Karnataka, Nagaland, Punjab and Sikkim Bihar and Orissa did not provide any information The elocution activity is prevailing in Arunachal Pradesh, Chhatisgarh, Delhi, Goa, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Jammu and Kashmir, Jharkhand, Kerala, Maharashtra, Mizoram, Rajasthan, Tamil Nadu, Tripura, Uttar Pradesh, Uttranchal, West Bengal, Andaman and Nicobar Islands, Chandigarh and Pondicherry Recitation activity is prevalent in 21 states/UTs whereas skits/play is prevalent in 23 states/UTs The dance activity is being performed in 22 states/UTs but Quiz competition is being organized in as many as 24 states/UTs Apart from these activities song in Arunachal Pradesh; poster, essay writing, drama in

Gujarat, science exhibition, paper reading, seminar in Haryana, drawing, mehandi, rangoli in Maharashtra, seminar, science fair in Rajasthan, drawing competition in Tamil Nadu, drawing, story writing in Uttar Pradesh, painting in Andaman Islands; NCC, Scout, rangoli are organized in Chandigarh

Activities under which Inter School Competitions are being organized at Higher Secondary Stage

In Inter School Competitions, cricket competitions are organized only in Arunachal Pradesh, Chhatisgarh, Delhi, Goa, Gujarat, Haryana, Jharkhand, Madhya Pradesh, Maharashtra, Manipur, Meghalaya, Rajasthan, Tamil Nadu, Tripura, Uttar Pradesh, Uttranchal, West Bengal, Andaman & Nicobar Islands, Chandigarh and Pondicherry Football tournaments are organized in 22 states/UTs Hockey competitions are organized in Arunachal Pradesh, Chhatisgarh, Delhi, Goa, Gujarat, Haryana, Jharkhand, Maharashtra, Mizoram, Rajasthan, Tamil Nadu, Tripura, Uttar Pradesh, Uttranchal, West Bengal, and Chandigarh Badminton competitions are not organized in West Bengal, Andaman & Nicobar Islands, Assam, Manipur and Jharkhand Tennis and table tennis competitions are organized in Arunachal Pradesh, Delhi, Gujarat, Haryana, Maharashtra, Meghalaya, Uttranchal, Chandigarh, and Rajasthan Table tennis competitions are organized in Chhatisgarh, Goa, Jammu and Kashmir, Madhya Pradesh, Manipur, Mizoram, Tripura, Uttranchal, Andaman & Nicobar Islands, Chandigarh, Pondicherry and Tamil Nadu Most of the states/UTs organize volleyball competitions except West Bengal and Kerala Most of the states/UTs organized Basket ball, swimming, racing, athletics and volleyball competitions

Activities Developed and Evaluated at Higher Secondary Stage

The library club activities are developed and evaluated in Chhatisgarh, Gujarat, Manipur, Uttar Pradesh, Uttranchal and West Bengal These are developed but not evaluated in Assam, Tamil Nadu and Chandigarh Whereas in the states of Arunachal Pradesh the library activity is evaluated but not developed Sports and games activities are developed and evaluated in majority of states However, these activities are not evaluated in Arunachal Pradesh, Delhi, Jharkhand, Kerala, Madhya Pradesh, Maharashtra, Meghalaya, Mizoram and Tripura Delhi is the only state where these activities are neither developed nor evaluated Art and painting activities are developed and evaluated in 15 states/UTs States like Kerala, Madhya Pradesh, Maharashtra, Mizoram, Tripura, Uttar Pradesh and Andaman & Nicobar Islands have develop these

activities but do not evaluate However, these activities are evaluated but not developed in Arunachal Pradesh Manipur is the only state where these activities are neither developed nor evaluated The drama activity is developed and evaluated in Assam, Chhatisgarh, Delhi, Goa, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Jammu and Kashmir, Madhya Pradesh, Rajasthan, Tamil Nadu, Uttranchal and Pondicherry States like Arunachal Pradesh, Kerala, Meghalaya, Tripura, Uttar Pradesh, West Bengal and Chandigarh develop these activities but do not evaluate. However, states like Jharkhand, Maharashtra, Manipur, Mizoram and Andaman & Nicobar Islands neither develop nor evaluate the drama activity The dance activities are developed and evaluated in 13 states/UTs whereas states like Goa, Jharkhand, Kerala, Maharashtra, Manipur, Meghalaya, Mizoram and Andaman & Nicobar Islands have neither developed nor evaluated these activities In the states of Arunachal Pradesh, Tripura, Uttar Pradesh and Chandigarh these activities are developed but not evaluated

The music activities are developed and evaluated in the states of Assam, Chhatisgarh, Delhi, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Jammu and Kashmir, Madhya Pradesh, Rajasthan, Tamil Nadu, Uttranchal, West Bengal and Pondicherry However, states/UTs like Kerala, Maharashtra, Manipur and Meghalaya neither develop nor evaluate But these activities are developed and not evaluated in Arunachal Pradesh, Goa, Jharkhand, Mizoram, Tripura, Uttar Pradesh, Andaman & Nicobar Islands and Chandigarh The elocution activities are developed and evaluated in most of the states/UTs but these were neither developed nor evaluated in Arunachal Pradesh, Jharkhand, Madhya Pradesh and Meghalaya However, these activities are developed but not evaluated in Goa, Mizoram, Tripura, Uttar Pradesh, Andaman & Nicobar Islands and Chandigarh Quiz activity is developed and evaluated in majority of the states/UTs However, these activities are neither developed nor evaluated in Kerala and Madhya Pradesh The yoga activity is developed and evaluated in Assam, Chhatisgarh, Delhi, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Jammu and Kashmir, Rajasthan and Uttranchal But they are neither developed nor evaluated in Jharkhand, Kerala, Madhya Pradesh, Maharashtra, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Andaman & Nicobar Islands and Pondicherry

Motivation of the Schools to participate in various Co-curricular Activities

For participation in Co-curricular activities certificates are awarded in all states/UTs and except in Kerala Prizes are also distributed in all the states. The reporting of

participation is done in majority of the states/UTs except Assam, Goa, Manipur, Tamil Nadu, Andaman & Nicobar Islands and Pondicherry The data was not available from Andhra Pradesh, Bihar, Karnataka, Nagaland, Orissa, Punjab and Sikkim

Inter-School Competitions

Most of the states/UTs organized inter-school competitions in the area of football, volleyball, cricket, kho-kho, kabbadi, badminton, quiz, debate, dance, song, athletics and science exhibitions Out of 32 states/UTs, Andhra Pradesh, Bihar, Karnataka, Manipur, Mizoram, Orissa and Punjab did not provide any information

Personal and Social Qualities

All the personal and social qualities are developed and evaluated in Delhi, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Jharkhand, Rajasthan, Uttranchal and West Bengal In Sikkim, none of these qualities are developed and evaluated In Kerala only the quality of regularity and punctuality developed In Arunachal Pradesh, Assam, Jammu & Kashmir, Madhya Pradesh, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Tamil Nadu, Tripura, Uttar Pradesh, Andaman & Nicobar Islands, Chandigarh and Pondicherry, the personal and social qualities are developed but not evaluated In the state of Goa all most all the qualities are developed and evaluated except the evaluation of sharing, civic sense, truthfulness, patriotism and protection of environment The remaining states of Andhra Pradesh, Bihar, Chhatisgarh, Karnataka, Maharashtra, Nagaland, Orissa and Punjab have not provided information.

Tools used for evaluation of Personal and Social Qualities

In evaluating the personal and social qualities, most of the states/UTs used observation schedule Of the 32 states/UTs, only Jharkhand, Manipur, Uttranchal and Chandigarh are using all the tools The check-list is used by Arunachal Pradesh, Gujarat, Haryana, Maharashtra, Meghalaya, West Bengal and Chandigarh Rating scale is used by Maharashtra, Manipur, Uttranchal and Chandigarh and self appraisal tool is used by Arunachal Pradesh, Gujarat, Manipur, Tamil Nadu, Uttranchal and Chandigarh Peer evaluation is also done by Arunachal Pradesh, Chhatisgarh, Gujarat, Haryana, Jammu & Kashmir, Manipur, Tamil Nadu, Uttranchal, West Bengal and Tamil Nadu The Anecdotal Record are used by Chhatisgarh, Haryana, Manipur, Rajasthan, Uttranchal and Chandigarh The states/UTs of Andhra Pradesh, Bihar, Karnataka, Nagaland, Orissa and Punjab have not provided information The states/UTs of Assam, Goa, Kerala,

Sikkim, Tripura, Andaman & Nicobar Islands and Pondicherry are not using any of the tools to evaluate personal and social qualities

Implementation of Various Schemes like OBB, DPEP, SSA

The Operation Black Board (OBB) scheme is implemented only in the states of Delhi and Himachal Pradesh The Mid-day Meal Schemes are not implemented in any of the states/UTs. The merit scholarship is provided in Assam, Chhatisgarh, Delhi, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Jammu & Kashmir, Jharkhand, Madhya Pradesh, Maharashtra, Meghalaya, Mizoram, Rajasthan, Tamil Nadu, Tripura (post-metric scholarship), Uttar Pradesh, Uttranchal and Chandigarh Free uniforms are given in the states/UTs of Delhi, Haryana, Jharkhand and Andaman & Nicobar Islands Free textbooks are provided in the states/UTs of Delhi, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Jharkhand and Andaman & Nicobar Islands. Attendance scholarships are also given in the states/UTs of Delhi, Gujarat, Haryana, Jharkhand, Mizoram and Chandigarh Other than these Gujarat is giving loan scholarships for study purpose, Andaman & Nicobar Islands is giving ST scholarship, Madhya Pradesh is providing scholarship to poor students, Meghalaya is giving border scholarship, Rajasthan and Tamil Nadu are giving scholarships to SC/ST students

School Supervision/Inspection

School supervision/inspection activities have been done by academic inspectors in Assam and best awardee teachers and lecturers of B Ed colleges in Gujarat In majority of the states/UTs school supervision activity has been the responsibility of the District Educational Officers (DEOs), Block Resource Centres (BRCs), Cluster Resource Centres (CRCs), School Inspectors (SIs), Deputy Directors, Joint directors (School Education), Directors of Pubic Instruction (DPI) and District Inspectress for Girls' Schools in Jharkhand

The information was not available from the states of Andhra Pradesh, Bihar, Mizoram, Orissa and Punjab

Status of Homework

The homework is assigned and corrected regularly in Assam, Delhi, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Maharashtra, Rajasthan, Tamil Nadu, Uttar Pradesh, Andaman & Nicobar Islands, Chandigarh and Pondicherry However, in Arunachal Pradesh, Chhatisgarh, Kerala, Meghalaya, Tripura and Uttranchal, the homework is assigned but

its correction is not regular The information was not available from the states of Andhra Pradesh, Bihar, Goa, Jammu & Kashmir, Karnataka, Madhya Pradesh, Manipur, Mizoram, Nagaland, Orissa, Punjab, Sikkim and West Bengal

Use of Different Forms of Questions

Of the 27 states/UTs whose responses indicate that all most all the states/UTs except Jammu & Kashmir, Mizoram and Punjab are using long answer, short answer and very short answer type questions All the selection type questions are used by the states of Chhatisgarh, Gujarat, Himachal Pradesh, Kerala, Maharashtra, Meghalaya, Tamil Nadu, Tripura, Uttar Pradesh, West Bengal and Pondicherry However, Assam, Haryana Jammu & Kashmir, Jharkhand and Manipur are using only multiple choice type, Bihar is using alternative response and multiple choice type, Delhi is using all the selection type questions except multiple choice type, Goa is using only the fill in the blanks, Mizoram is using all the selection type questions except fill in the blanks, Rajasthan and Uttranchal are using all the selection type questions except matching, Chandigarh is using fill in the blanks and alternative response questions Information was not available from Andhra Pradesh, Karnataka, Nagaland, Orissa and Sikkim

Status of Balanced Question Paper

The data reveals that all most all the states/UTs are aware of instructional objectives except the state of Chhatisgarh which seems to be unaware of balanced question paper All the states/UTs, except Arunachal Pradesh, Delhi, Jammu & Kashmir, Jharkhand, Meghalaya, Uttranchal and Andaman & Nicobar Islands prepare design and blue prints in setting a balanced question paper Other than Tripura and Andaman & Nicobar Islands all the states/UTs prepare marking scheme and check answer scripts Bihar, Orissa, Punjab and Sikkim did not provide any information

Different Tests in an Academic Session

The data reveals that most of the states are not conducting class tests Only three states indicated the number of class tests they have conducted In an academic session Maharashtra conducted 2 tests, Tamil Nadu conducted the highest number, i e , 40 tests and Pondicherry is conducting 20 tests West Bengal acknowledges the presence of class tests Goa and Maharashtra are conducting 2 unit tests in a session However, the states of Assam, Haryana, Himachal Pradesh, Jammu & Kashmir and Kerala indicated that they are conducting three term tests in an academic session Tamil Nadu is conducting 8

unit tests whereas Pondicherry is conducting 10 term tests Himachal Pradesh, Mizoram and Andaman & Nicobar Islands are conducting one monthly test In Uttar Pradesh 3 tests, in Uttranchal 6 tests, in Tamil Nadu 7 tests and in Chandigarh 8 monthly tests are conducted in an academic session Almost 12 states conducted two term tests and 9 states indicated that they are conducting 3 term tests However, Rajasthan is the only state which conducts 5 term tests in a session Jharkhand is conducting 4 term tests in an academic session

Level at which Question Papers are Developed for Term Tests

The data indicates that Gujarat and Rajasthan states develop question papers at cluster level Rajasthan is the only state who develop question papers at cluster, district and state level None of the states/UTs develop question papers at block level Rajasthan, West Bengal and Pondicherry develop question papers at district level Majority of the states develop question papers at state level for term tests

Question Bank

The data available from the table denotes that the question banks are available in Delhi, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Maharashtra, Tamil Nadu, Uttranchal, West Bengal and Pondicherry. Most of these question banks are available in mathematics, sciences and social sciences However, these question banks are also available in statistics, logic and psychology in the state of Gujarat Only in Delhi state Hindi language question bank is available

These question banks are available to the teachers in all the states who responded except West Bengal These question banks are also available to students in Gujarat, Himachal Pradesh, Maharashtra, Tamil Nadu, Uttranchal, West Bengal and Pondicherry. The information is not available from other states

In-service Training to Teachers on Evaluation

The data received from the states revealed that the state of Assam conducted five training programmes for about 200 teachers of 17 days duration covering conceptual development In Goa two six-day training programmes were organized covering all aspects of evaluation In Gujarat, 15000 teachers were trained in a three day training programme covering all areas of evaluation Maharashtra organized ten day training programmes for about 1291 teachers covering all aspects of evaluation. These training programmes were also covered lesson planning, evaluation techniques and teaching

techniques In Mizoram 250 teachers were trained in a five day training programme covering all aspects of evaluation

Rajasthan provided training in the aspects of evaluation It has conducted seven training programmes of 6-15 days duration. West Bengal indicated that it also provided training to teachers covering all the aspects of evaluation Pondicherry had organized five day training programmes to 73 teachers in different aspects of evaluation These training programmes were each of five days duration The remaining states/UTs did not provided information

Diagnosis of Learning Difficulties

The data shows that in Gujarat, Himachal Pradesh and Chandigarh, the learning difficulties are diagnosed by using observation, oral test and diagnostic testing In Delhi it is done by diagnostic testing However, in Andaman & Nicobar Islands these learning difficulties are diagnosed by using observation and oral testing. Data was not available from the remaining states

Providing Remedial Instruction

In Gujarat, Karnataka, Madhya Pradesh, Mizoram, Tamil Nadu, Uttar Pradesh, Uttranchal, West Bengal, Chandigarh and Pondicherry remedial instructions are provided to individual students In Assam, Chhatisgarh, Goa, Gujarat, Himachal Pradesh, Karnataka, Madhya Pradesh, Mizoram, Rajasthan, Uttranchal, West Bengal, Andaman & Nicobar Islands, Chandigarh and Pondicherry remedial instructions are provided to only weak students in groups In Assam, Goa, Gujarat, Himachal Pradesh, Karnataka, Kerala, Maharashtra, Tamil Nadu Rajasthan, Uttar Pradesh, West Bengal, Bengal, Andaman & Nicobar Islands, Chandigarh and Pondicherry common problems are discussed and reported to parents However, in Chhatisgarh, Madhya Pradesh, Manipur, Meghalaya and Mizoram these common problems are only discussed The remaining states did not provide any information

Types of Evaluation of different Stages

Out of 32 states/UTs, Arunachal Pradesh, Assam, Goa, Haryana, Himachal Pradesh, Kerala, Maharashtra, Rajasthan, Tamil Nadu, West Bengal, Andaman & Nicobar Islands, Chandigarh and Pondicherry are using both formative and summative evaluation at different stages of education However, Chhatisgarh, Delhi, Gujarat, Jammu & Kashmir Jharkhand, Madhya Pradesh, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Tripura, Uttar Pradesh and

Uttranchal provided only summative evaluation The information was not provided by Andhra Pradesh, Bihar, Karnataka, Nagaland, Orissa, Punjab and Sikkim

Public Examination/External Examination

Almost all the states/UTs are conducting public examinations either at XI or XII level Most of the states /UTs are conducting these external examinations either for promoting to next classes or for certification purpose In the states/UTs of Arunachal Pradesh, Delhi, Sikkim, Andaman & Nicobar Islands and Chandigarh the Central Board of Secondary Education (CBSE) is conducting these examination In the remaining states, either Boards of Secondary Education or Boards of Higher Secondary Education are conducting public examinations

Techniques used in Public Examination and Weightage given to them

In Gujarat, Madhya Pradesh, Maharashtra, Mizoram, Tripura, Andaman & Nicobar Islands and Chandigarh 100% weightage is given to written tests in art subjects, whereas 70% in Madhya Pradesh, 80% in Maharashtra, 70% in Mizoram, 80% in Tripura, 75% in both Andaman & Nicobar Islands and Chandigarh is given to written tests in science subjects In Chhatisgarh, Delhi and Pondicherry, 75% weightage is given to written tests In Assam, Goa, Himachal Pradesh, Jammu & Kashmir, Kerala and Manipur, 70% weightage is given to written tests Haryana and Karnataka are giving 90% weightage but Rajasthan is giving only 60% weightage to written tests Weightage to oral tests are being given only in five states Himachal Pradesh and Manipur are giving 5% weightage to oral tests Haryana is giving 10% weightage, Rajasthan 6 67% weightage and Tamil Nadu is giving 20% weightage to oral tests Regarding weightage to practical tests, Karnataka is giving 10% weightage whereas Rajasthan is giving 33% weightage to oral tests In the states of Assam, Goa, Jammu & Kashmir, Kerala, Madhya Pradesh and Mizoram 30% weightage is given to oral tests However, Chhatisgarh, Delhi, Himachal Pradesh, Manipur, Tamil Nadu, Andaman & Nicobar Islands, Chandigarh and Pondicherry are giving 28% weightage to oral tests

Weightage given to Internal and External Examination

In Arunachal Pradesh, Maharashtra and Andaman & Nicobar Islands 100% weightage is given to external written assessment In Gujarat state, 5% weightage to internal written assessment, 90% weightage is given to external written assessment and 5% weightage to oral internal assessment In Himachal Pradesh, 70% weightage is given to written

external assessment, 5% weightage to oral internal assessment and 25% weightage to practical internal assessment In Jammu & Kashmir, 70% weightage is given to written external assessment, 12% weightage to practical internal assessment and 18% weightage to practical external assessment

In Karnataka, 90% weightage is given to written external assessment In Kerala, 40% weightage to written external assessment, 30% weightage to internal practical and 30% weightage to external practical assessment In Madhya Pradesh, 75% weightage is given to written internal assessment and 25% weightage to practical external assessment Rajasthan is giving 10% weightage to written internal and 90% to external assessment Tripura is giving 80% weightage to written external and 20% weightage to practical external assessment In Chandigarh, 75% of weightage is given to written external and 25% weightage to practical external assessment. Pondicherry is giving 75% weightage to external written, 10% weightage to internal oral, 10% weightage to internal practical and 5% weightage to external practical assessment The data was not available from Andhra Pradesh, Assam, Bihar, Chhatisgarh, Delhi, Goa, Haryana, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Nagaland, Orissa, Punjab, Sikkim, Tamil Nadu, Uttar Pradesh, Uttranchal and West Bengal

Evaluation of Personal and Social Qualities

The Personal and Social Qualities are evaluated only in Himachal Pradesh, Jharkhand, Tamil Nadu and Uttar Pradesh In Himachal Pradesh, discipline, cleanliness, obedience, leadership and cooperation qualities are evaluated using observation technique These are reported in terms of grades In Jharkhand, responsibility and patriotism are evaluated using observation technique which is reported through grades In Tamil Nadu, environmental awareness and civic sense qualities are evaluated using observation and assigned grades In Uttar Pradesh, leadership, cooperation, discipline, patriotism qualities are evaluated The remaining states did not provide information

Reporting of Personal and Social Qualities

The personal and social qualities are reported by using marks, grades and statements in Chhatisgarh and Haryana Uttar Pradesh and Uttranchal are reported these qualities by using grades and statements Himachal Pradesh and Mizoram are reporting these qualities by using grades Karnataka and Rajasthan are reporting the personal and social qualities by using statements The remaining states have not provided information

Informal Evaluation Techniques

The informal evaluation techniques are being used only in Haryana, Maharashtra and Chandigarh In Haryana, peer evaluation and anecdotal records are used for the purpose of informal evaluation However, Maharashtra and Chandigarh have used only anecdotal record technique in informal evaluation The remaining states/UTs did not provide information

Informing Parents about the Performance of their Wards by the Schools

The data shows that in majority of the states, the parents are being informed about the performance of their children by the schools In most of the states, the performance is reported by either Report Card or by Programme Card or by Progress Card In Haryana and Tripura, the performance is reported through Parent Teacher Association/Mother Teacher Association (PTAs/MTAs) In Arunachal Pradesh, the performance is being reported through notice board In Mizoram, parents are informed through letters The information was not available from Andhra Pradesh, Bihar, Chhatisgarh, Delhi, Manipur, Meghalaya, Nagaland, Orissa, Punjab, Sikkim and Tamil Nadu

Findings

- Almost all the states/UTs are teaching Modern Indian Language or mother tongue, English, Hindi, Mathematics, Social Science and Science under scholastic area.
- In most of the states health and physical education, moral education, art education and work experience are covered under co-scholastic areas
- Most of the states/UTs have working days between 200 to 241 in an academic year
- Majority of the states are having 40 minutes duration of a period In scholastic areas the number of periods per week varies from 29 to 48 In co-scholastic areas the number of periods per week varies from 0 to 12
- Most of the states/UTs are organizing debate, elocution, recitation, skits/play, dance activities
- Cricket, Football, Basket Ball, Swimming, Racing, Athletics and Volley Ball activities are organized in majority of the states.
- All the states/UTs awarded certificates for participating in co-curricular activities except in Kerala
- Majority of the states/UTs organize inter-school competitions in the areas such as football, volley ball, cricket, kho-kho, kabbadi, badminton, quiz, debate, dance, song, athletics and science exhibitions

- All the personal and social qualities are developed and evaluated in Delhi, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Jharkhand, Rajasthan, Uttaranchal and West Bengal
- Of the 32 states/UTs, only Jharkhand, Manipur, Uttaranchal and Chandigarh are using all the tools such as observation schedule, checklist, and self appraisal techniques
- Most of the states/UTs are using observation schedule for evaluation of personal and social qualities
- In majority of the states/UTs, schools are being supervised by DEOs, BRCs, CRCs, SIs, Deputy Directors, Joint Directors, DPIs
- The homework is assigned and corrected regularly in less than 50 per cent of the states
- All most al the states/UTs are aware of instructional objectives.
- Majority of the states/UTs are preparing question paper by using design, blue print and marking scheme
- Most of the states are not conducting class, unit and monthly tests But almost all the states are conducting term tests
- In majority of the states/UTs, questions banks are not available In subjects like Mathematics, Science and Social Science question banks are available only in few states
- Majority of the states/UTs are not providing in-service training to teachers in various aspects of evaluation
- In most of the states/UTs learning difficulties are not diagnosed by the teachers
- In majority of the states/UTs teachers are providing remedial instructions to weak students They are also discussing common problems in class and reporting to parents
- About 1/3rd states/UTs are using both formative and summative evaluation
- Most of the states are giving 20% to 30% weightage to practicals in public examinations
- Only Himachal Pradesh, Jharkhand, Tamil Nadu and Uttar Pradesh are evaluating personal and social qualities by using observation technique and reporting in terms of grades
- Except Haryana, Maharashtra and Chandigarh no other state/UT is using informal evaluation techniques
- In majority of the states/UTs, parents are being informed about the performance of their children by the schools, through report card or through Parent Teacher Associations

CHAPTER V
Summary

The department undertook the present study titled **A Study of Evaluation Practices at all stages of School Education Across the States** mainly to know the status of Evaluation practices at all stages of school education. Various committees and commissions of Education since independence have made various suggestions and recommendations regarding evaluation at the school stages yet people have not much knowledge how each (state/union territory) has taken up which scheme and what modifications they have undergone over a period of time. Therefore, educational evaluation remains the weakest link in the total educational system.

In this context the department undertook the project to know the status of various evaluation practices across the states. The project was initially taken up during academic session 2002-2003 and was confined to only primary stage of the school education. During the academic session 2003-2004 it was extended to the entire stage school education. A questionnaire was developed and finalized to gather all the relevant information on the topic after a lot of discussions. The development of questionnaire was an in-house activity which was carried out by the team members of this project. In the process of development of the questionnaire the reports of various committees and commissions which were published since independence were screened for the relevant and pertinent material. The questionnaire was sent to all the organizations dealing with the evaluation component of different stages of school education. For elementary (primary/upper primary) the information was collection from the relevant SCERT/SIE. The information for secondary and senior secondary stages was collected from the relevant secondary board/senior secondary board/council or joint board which is responsible for both the stages. The information was collected from 32 states/UTs

All the information received from various states/union territories was compiled and analyzed in tabular form. The information from structuring of school education to analysis of results are basically meant to know what steps/schemes are being followed in which

state/union territory and where they are not being followed. The ultimate purpose of this study was to find deficiencies in our evaluation system at various stages of school education The deficiencies in practicing may be because of lack of awareness, poor awareness, non-implementation of the schemes, poor supporting infrastructure or some other reasons. Therefore, it is absolutely necessary to know all the details of the evaluation schemes at all stages of school education. Evaluation practices are discussed under the following headings:

- General
- Primary level
- Upper Primary level
- Secondary level
- Higher Secondary level

Major Outcomes are as under:

Findings

- There are mainly two patterns of school education across the states/UTs i.e. 1st Primary I-V, Upper Primary VI-VIII, Secondary IX-X, Higher Secondary XI-XII 2nd Primary I-IV, Upper Primary V-VII, Secondary VIII-X, Higher Secondary XI-XII
- Approximately 2/3 states/UTs have implemented non-detention policy at primary stage.
- Only Andhra Pradesh, Gujarat, Jammu & Kashmir, Karnataka, Madhya Pradesh, Nagaland and Orissa have extended non-detention policy upto upper primary stage.
- Continuous and Comprehensive Evaluation Scheme is in practice upto different levels of school education in states/UTs
- Competency based teaching-learning approach is not being followed in the states/UTs of Jammu & Kashmir, Madhya Pradesh, Meghalaya, Tripura and Chandigarh.
- Competency based teaching learning approach is being followed in 16 states/UT
- Assam, Bihar, Chhatisgarh, Haryana, Himachal Pradesh, Madhya Pradesh, Mizoram, Sikkim, Uttar Pradesh, Uttranchal and Chandigarh are conducing public examination at the end of terminal class of primary stage.
- More than 50% states/UTs are conducting public examination at the terminal stage of upper primary stage.

- Mostly states/union territories have divided full academic session in either 2 or 3 terms baring Jharkhand, Kerala and Rajasthan states.
- In more than 50% states/UTs hard spots in learning are being identified at all stages of school education.
- Only in some states project work techniques is being used at all stages of school education for assessing students' performance.
- Approximately half in number of states/union territories analyses the results for different purposes.

Primary Stage

- Most of the states/UTs are teaching mother tongue, mathematics, environmental studies in scholastic areas.
- Mostly states/UTs are organizing activities mainly in work education, art education and Health and Physical education in co-scholastic areas.
- The number of periods per week varies from 22 to 30 in scholastic areas across the states.
- In most of the states/UTs, the number of periods in co-scholastic areas are 6-8 in a weak.
- The duration of a period varies from 35-45 minutes baring some states.
- In most of the states/UTs Recitation, skit/play, dance and quiz competitions are organized.
- Racing and athletic activities are organized by majority of states/UTs
- Cricket, football, hockey, badminton, tennis, table tennis, volley ball, basket ball and swimming activities are organized in few states.
- Games & sports and art & printing activities are developed and evaluated in most of the states/UTs.
- Drama, dance and music activities are developed and evaluated in approximately half of the states/UTs.
- Approximately 2/3rd of the states/UTs motivate students for participation in co-curricular activities by awarding certificates/prizes, and/or reporting performance in report card.
- Observation schedule is mostly used as a tool for assessing personal and social qualities.
- Incentive scheme such as OBB, mid day meal and free textbooks, are provided in most of the states/UTs.
- All most all states/UTs are having structured system of school inspection/ supervision.

- In almost in all states/UTs, the homework is assigned to students
- In 2/3rd of the states/UTs homework is corrected regularly.
- Different forms of supply and selection types questions are used in question papers
- Almost all states/UTs claim for following the steps required for development of a balanced question paper
- Term tests are conducted in more than 2/3rd states/UTs
- In more than half states/UTs question papers are developed at school level or cluster level
- Question banks are available in only few States/UTs
- Learning difficulties of students are diagnosed mostly by observation or oral techniques
- Remedial measures are provided to students in more than 2/3rd states/UTs
- Majority of states claim that they conduct both formative and summative evaluation
- Written as well as oral techniques are used in external examination with different wieghtages in different states/UTs
- Personal and social qualities are reported in terms of grades
- Informal evaluation techniques are used in very few states
- In most of the states/UTs students' performance is reported to parent through report cards

Upper Primary Stage

- There was a lot of variations in number of periods were week across the states
- Mostly states/UTs are organizing activities such as debate, Elocution, Recitation, Skit/Play, Dance, and Quiz Competition in co-scholastic areas
- At least 2 or 3 games and sports are organized in all states/UTs
- Inter-school competitions in games and sports are organized in almost all states/UTs
- Only in few states inter-school competitions are organized in activities covering literary, scientific, cultural and aesthetic aspects
- Most of states are using observation schedule as a tool for evaluating personal social qualities
- Self appraisal is used only in Arunachal Pradesh, Nagaland and Tamil Nadu for evaluating personal and social qualities
- Mostly states are developing and evaluating personal and social qualities

- The states of Andhra Pradesh, Chhatisgarh, Gujarat, Jammu & Kashmir, Madhya Pradesh, Mizoram, Orissa, Sikkim and Tamil Nadu and giving 100% weightage to written tests
- Many stages are evaluating the personal and social qualities like regularity, self-cleanliness, leadership, discipline, patriotism, values, punctuality and sense of responsibility by using observation and anecdotal record techniques and reporting them in grades
- Most of the states are not using informal evaluation techniques
- At least one incentive scheme is implemented in all states/UTs
- Almost all states/UTs have structured system of schools inspection and supervision
- In all states/UTs homework is assigned to students
- In majority of the states home work is corrected regularly
- Mostly States are using different forms of questions in test/paper
- Long answer questions are not used in Arunachal Pradesh, Bihar, Delhi, Madhya Pradesh, Manipur, Mizoram, Tripura and Uttranchal states
- Instructional objectives are used in most of the states for preparation question paper
- Paper setters use Design and Blue print for developing test
- Number of class tests, unit tests, monthly tests and terms tests varies from state to state
- Term tests are developed at different levels in different states/UTs
- Out of 32 states/UTs questions bank are developed all subjects in ten states/UTs
- Formal diagnostic tests are used only in Delhi, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Karnataka, Nagaland, Rajasthan, West Bengal and Chandigarh for identifying learning difficulties
- Delhi, Gujarat, Karnataka, Rajasthan, West Bengal, Chandigarh and Pondicherry adopt various strategies to overcome learning difficulties of students
- Mostly states/UTs make an attempt to resolve the difficulties in learning of students
- Majority of state/UTs use both formative and summative evaluation methods for evaluating the performance of students
- In-service training courses are organized only in half of the states/UTs during the last three years

Secondary Stage

- All the states/UTs teach subjects like mother tongue, one modern Indian language, English, Mathematics, Social Science and Science

- In most of the states/UTs health and physical education, art education, work experience, vocational education, and sports and games are covered under co-scholastic areas
- Majority of the states/UTs have 210 to 241 working days in an academic year
- Majority of the states/UTs are having 40 minutes period
- In co-scholastic areas, majority of the states/UTs have six periods per week
- In scholastic area subjects like Home Science, Economics, Music, Dance, Drawing, Agriculture, Information Technology, Computer Science, Vocational education and environmental education are optional subjects
- Activities such as physical education, art education, work experience, yoga and moral education are compulsory in co-scholastic areas NCC, Scouts and Guides, SUPW occupies prominent place in co-scholastic area as optional
- In most of the states/UTs, debate, elocution, recitation, skit/plays and dance activities are organized
- Cricket, Football, Badminton and Volley Ball activities are organized in almost all the states
- All the states/UTs award certificates for participating in co-curricular activities except Kerala
- Most of the states/UTs are conducting inter school competitions in science exhibition, sports & games, quiz, science seminars, essay writing, drawing, debate, fancy dress and elocution
- Personal social qualities are developed and evaluated in Andhra Pradesh, Chhatisgarh, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Jharkhand, Karnataka, Rajasthan, Uttranchal and West Bengal
- All the tools are used to evaluate personal and social qualities in Haryana, Manipur, Uttranchal and Chandigarh
- Mid-day meal, merit scholarship, free uniform, free textbooks and attendance scholarships are provided in majority of the states
- Majority of states/use both supply and selection type questions
- Majority of the states/UTs prepare question paper by using design, blue print and marking scheme
- All the states/UTs are conducting class, unit, monthly and term tests
- In majority of the states, question banks are available in science, social science, mathematics and English
- Less than half of the states are providing in-service training to teachers

- Only in Haryana, Himachal Pradesh, Karnataka , Rajasthan, West Bengal and Chandigarh learning difficulties are diagnosed by using all the three techniques i e observation, oral tests and diagnostic tests
- All the states/UTs are conducting public examinations at class X
- About 50 per cent of the states are evaluating personal and social qualities These qualities are evaluated by using observation, check list and self appraisal techniques
- Majority of the states/UTs are not using informal evaluation techniques

Higher Secondary Stage

- Almost all the states/UTs are teaching Modern Indian Language or mother tongue, English, Hindi, Mathematics, Social Science and Science under scholastic area
- In most of the states health and physical education, moral education, art education and work experience are covered under co-scholastic areas
- Most of the states/UTs have working days between 200 to 241 in an academic year
- Majority of the states are having 40 minutes duration of a period In scholastic areas the number of periods per week varies from 29 to 48 In co-scholastic areas the number of periods per week varies from 0 to 12
- Most of the states/UTs are organizing debate, elocution, recitation, skits/play, dance activities
- Cricket, Football, Basket Ball, Swimming, Racing, Athletics and Volley Ball activities are organized in majority of the states
- All the states/UTs awarded certificates for participating in co-curricular activities except in Kerala
- Majority of the states/UTs organize inter-school competitions in the areas such as football, volley ball, cricket, kho-kho, kabbadi, badminton, quiz, debate, dance, song, athletics and science exhibitions
- All the personal and social qualities are developed and evaluated in Delhi, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Jharkhand, Rajasthan, Uttaranchal and West Bengal
- Of the 32 states/UTs, only Jharkhand, Manipur, Uttaranchal and Chandigarh are using all the tools such as observation schedule, checklist, and self appraisal techniques
- Most of the states/UTs are using observation schedule for evaluation of personal and social qualities
- In majority of the states/UTs, schools are being supervised by DEOs, BRCs, CRCs, SIs, Deputy Directors, Joint Directors, DPIs
- The homework is assigned and corrected regularly in less than 50 per cent of the states
- All most al the states/UTs are aware of instructional objectives

- Majority of the states/UTs are preparing question paper by using design, blue print and marking scheme
- Most of the states are not conducting class, unit and monthly tests But almost all the states are conducting term tests
- In majority of the states/UTs, questions banks are not available In subjects like Mathematics, Science and Social Science question banks are available only in few states
- Majority of the states/UTs are not providing in-service training to teachers in various aspects of evaluation
- In most of the states/UTs learning difficulties are not diagnosed by the teachers
- In majority of the states/UTs teachers are providing remedial instructions to weak students They are also discussing common problems in class and reporting to parents
- About $1/3^{rd}$ states/UTs are using both formative and summative evaluation
- Most of the states are giving 20% to 30% weightage to practicals in public examinations
- Only Himachal Pradesh, Jharkhand, Tamil Nadu and Uttar Pradesh are evaluating personal and social qualities by using observation technique and reporting in terms of grades
- Except Haryana, Maharashtra and Chandigarh no other state/UT is using informal evaluation techniques
- In majority of the states/UTs, parents are being informed about the performance of their children by the schools, through report card or through Parent Teacher Associations

Over the last five and a half decades, many good schemes of evaluation at the school stage have remained on paper in many states for a variety of reasons It is high time all the states/UTs should implement them in true spirit With the advent of globalisation, it is high time that these schemes of evaluation are implemented at the grass roots with all care and details These schemes need to monitored closely while implementation so that no lacuna remains They should become part and parcel of the school education system That would not be enough, without introducing the advanced schemes and the techniques of evaluation They need to be adopted/adapted to Indian conditions so that they become organically joined to the present evaluation system in the country The ultimate result of all these efforts should result in a school education system which is internationally comparable and children have all the competencies and skills to face the ever changing, complicated and difficult world

Appendix

Evaluation Practices At All Stages of School Education

(Questionnaire)



Department of Educational Measurement and Evaluation
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg, New Delhi – 110016
2003

Evaluation Practices at All Stages of School Education
(Questionnaire)

Guidelines

1. Please read carefully each and every question/statement given in the questionnaire
2. Please, do not leave any question unanswered.
3. Please, provide information as per directions given.
4. In this questionnaire there are four types of questions or statements

i. Yes/No	.	Please select only Yes or No.
ii Put tick (✓)	:	Please put tick (✓) mark at appropriate place as per need of individual question.
iii Provide information in the table		Provide information as per the need of the appropriate place in the table
iv. Open ended	:	Please, provide observations/information/views/suggestions in brief at appropriate space.

5. In case, there is a shortage of space for providing complete information, please, use separate sheet and attach with questionnaire

6. If possible, please forward/supply a copy of relevant notifications, circulars, guidelines, documents or any other material which may help us to elicit more detailed information regarding system of evaluation in your State/UT.

7. The information provided in this questionnaire will be used for preparing a document only and there will be no reflection on any individual.

8. Please sent back filled-in questionnaire as soon as possible to

The Head,
DEME
NCERT, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi - 110016

EVALUATION PRACTICES AT DIFFERENT STAGES OF SCHOOL EDUCATION

1 Name of the State

2 Classes comprises at various stages of school education

Sl. No.	Stage	Classes
i	Primary	
ii	Upper-Primary	
iii	Secondary	
iv	Higher Secondary	

3. Instructional Time for various levels .

Sl No.	Class/Classes	No of working days in the last academic year	Average duration of the period in minutes	Number of periods per week for		Total
				Scholastic Areas	* Co-Scholastic areas	
i	Classes I & II					
ii	Classes III & IV					
iii	Class V					
iv	Classes VI to VIII					
v	Classes IX & X					
vi	Classes XI & XII					

* Co-scholastic activities include . Art Education , Work Education, Health and Physical Education, Drawing, Sports, Games, Yoga, Literary, Scientific, Cultural, Aesthetic etc

4 Details about subjects taught in scholastic areas and activities covered under co-scholastic areas

(i) Scholastic Areas

Sl No.	Class/Classes	Subject(s)
i	Classes I & II	
ii	Classes III & IV	
iii	Classes V	
iv	Class VI to VIII	
v	Classes IX & X a. Compulsory b. Optional	
vi	Classes XI & XII a) Compulsory b) Optional	

(ii) Co-scholastic Areas

Sl No.	Class/Classes	Activities			
		Compulsory	Number of periods per week	Optional	Number of periods per week
i	Classes I & II				
ii	Classes III & IV				
iii	Class V				
iv	Classes VI to VIII				
v	Classes IX & X				
vi	Classes XI & XII				

5 Which of the following programmes/activities are organized by the schools?
(Please write Yes or No against each activities)

Sl No.	Programmes/ Activities	Stages of School Education			
		Primary	Upper Primary	Secondary	Higher Secondary
i	Debate				
ii	Elocution				
iii	Recitation				
iv	Skits/Play				
v	Dance				
vi	Quiz Competition				
vii	Any other (Please specify)				

6 Which sports and games are organized by the school?
(Please write Yes or No against each sport/game)

Sl No.	Sports/Games	Stages of School Education			
		Primary	Upper Primary	Secondary	Higher Secondary
i	Cricket				
ii	Football				
iii	Hockey				
iv	Badminton				
v	Tennis				
vi	Table Tennis				
vii	Volley Ball				
viii	Basket Ball				
ix	Swimming				
x	Racing				
xi	Athletics				
xii	Any other (Please Specify)				

7 Which of the following activities are developed and evaluated in the schools? (Please write Yes or No in the appropriate column under each stage)

(Dev =Developed, Eval = Evaluated)

Sl No.	Activities	Stages of School Education							
		Primary		Upper Primary		Secondary		Higher Secondary	
		Dev.	Eval	Dev.	Eval	Dev.	Eval	Dev.	Eval
i	Library club								
ii	Sports & Games								
iii	Art & Painting competitions								
iv	Drama								
v	Dance								
vi	Music								
vii	Elocution								
viii	Quiz								
ix	Yoga								
x	Any other (Please Specify)								

8 (i) Do schools motivate the students to participate in various co-curricular activities? Yes/No

(ii) If yes, provide information in the table given below

Sl No.	Modes of Motivation	Primary	Upper-Primary	Secondary	Higher Secondary
i	Certificate is awarded				
ii	Prizes are awarded				
iii	Participation is reported in report card				
iv	Any other (please specify)				

9 (i) Whether inter-school competitions are organized? Yes/No

(ii) If yes, please write the events and also write Yes/No under each stage in the table given below

Sl No.	Name of the event	Stages of School Education			
		Primary	Upper Primary	Secondary	Higher Secondary
i					
ii					
iii					
iv					

10 Which of the following personal and social qualities are developed and evaluated in schools?

(Please put tick(✓) if answer is Yes and put cross (x) if answer is No

(Dev.=Developed; Eval = Evaluated)

Sl No.	Social & Personal Qualities	Stages of School Education							
		Primary		Upper Primary		Secondary		Higher Secondary	
		Dev.	Eval	Dev.	Eval	Dev.	Eval	Dev.	Eval
i	Discipline								
ii	Regularities & Punctualities								
iii	Self cleanliness								
iv	Environmental cleanliness								
v	Sense of Responsibility								
vi	Leadership								
vii	Initiative								
viii	Cooperation								
ix	Sharing								
x	Civic Sense								
xi	Truthfulness								
xii	Patriotism								
xiii	Protection of Environment								
xiv	Any other (Please Specify)								

11. Which tools do schools use to evaluate Personal and Social Qualities?
(Please write Yes or No)

Sl No	Tools	Stages of School Education			
		Primary	Upper Primary	Secondary	Higher Secondary
i	Observation Schedule				
ii	Check List				
iii	Rating Scale				
iv	Self Appraisal				
v	Peer Evaluation				
vi	Anecdotal Record				
vii	Any other (Please Specify)				

12 Scheme (s) such as Operation Black Board, DPEP, SSA, Mid-Day Meal, Merit Scholarsl other scholarship etc. implemented in the schools
(Please write Yes/No in the Table)

Sl No.	Scheme	Primary	Upper Primary	Secondary	Higher-Secondary
i	OBB				
ii	DPEP				
iii	Mid-day Meal				
iv	Merit Scholarship				
v	Free Uniform				
vi	Free Textbooks				
vii	Attendance Scholarship				
Viii	Any other (Please Specify)				

13 (i) Whether the non-detention policy is followed in the schools? Yes/No
(ii) If yes upto which stage (Please mark (✓) at appropriate place)

(i) Primary [ ] (ii) Upper-Primary [ ]
(iii) Secondary [ ] (iv) Higher Secondary [ ]

14 (i) Whether Continuous and Comprehensive Evaluation (CCE) Scheme is developed by the state? Yes/No
(ii) If yes upto which stage (Please mark (✓) at appropriate place)

(i) Primary [ ] (ii) Upper-Primary [ ]
(iii) Secondary [ ] (iv) Higher Secondary [ ]

15 (i) Is CCE Scheme implemented in Schools ? Yes/No
(ii) If yes upto which stage (Please mark (✓) at appropriate place)

(i) Primary [ ] (ii) Upper-Primary [ ]
(iii) Secondary [ ] (iv) Higher Secondary [ ]

16 (i) Do schools follow competency based teaching-learning technique ? Yes/No
(ii) If yes upto which stage (Please mark (✓) at appropriate place)

(i) Primary [ ] (ii) Upper-Primary [ ]
(iii) Secondary [ ] (iv) Higher Secondary [ ]

(iii) Whether training programmes for teachers have been organized by the state? Yes/No

(iv) Whether the scheme of CCE was widely circulated in the schools? Yes/No.

17 (i)Whether the state has a structured system of school inspection/supervision ? Yes /No

(ii) If yes

Give the structure ________________________
____
____

(iii) If No,

How schools are being inspected/supervised? ________________________
____

18 (i) Whether teachers assign home work to students? Yes/No
(ii) If yes, mention the stage by putting a mark (✓) at appropriate stage.

(i) Primary [ ] (ii) Upper-Primary [ ]
(iii) Secondary [ ] (iv) Higher Secondary [ ]

(iii) Whether teachers correct home work of students?
(a) Regularly [ ] (b) Sometimes [ ] (c) Never [ ]

19 (i) Whether teachers assign project work to students? Yes/No
(ii) If yes, mention the stage by putting (✓) mark at appropriate stage
(i) Primary Stage [ ] (ii) Upper-Primary Stage [ ]
(iii) Secondary Stage [ ] (iv) Higher Secondary Stage [ ]

20 (i) Do teachers use different forms of questions in test/question paper? Yes/No
(ii) If yes, please indicate your answer by writing Yes/No against each form of question at each stage of education

Sl No.	Forms of Questions	Stages of School Education			
		Primary	Upper Primary	Secondary	Higher Secondary
		Yes/No	Yes/No	Yes/No	Yes/No
i	Supply Type (i) Long answer (Essay)				
ii	(ii) Short Answer				
iii	(iii) Very Short Answer				
iv	(iv) Fill in the Blanks				
v	(v) Any other (Please Specify)				
vi	Selection Type i Alternative Response (True/False, Yes/No, Right/Wrong)				
	ii. Matching (Single/Double, Check list, Matrix)				
	iii Multiple Choice (Question form, incomplete statement form)				
	iv Any other (Please specify)				

21 Whether teachers are
(i) aware of instructional objectives? Yes/No
(ii) preparing design and blue print? Yes/No

(iii) preparing detailed marking scheme? Yes/ No
(iv) checking the answer scripts using detailed marking scheme? Yes/No

22 How many terms are there in an academic session ? [ ]

23 How many tests do you conduct in one academic session ? [ ]
(Please write the number for each stage)

Sl No.	Tests	Primary	Upper-Primary	Secondary	Higher Secondary
i	Class Tests				
ii	Unit Tests				
iii	Monthly Tests				
iv	Term Tests				
v	Any other (please specify)				

24 At what level question papers are developed for term tests?

Sl No.	Level	Primary	Upper-Primary	Secondary	Higher Secondary
i	Cluster				
ii	Block				
iii	District				
iv	State				
v	Any other (Please specify)				

25 (i) Whether the question bank (s) has /have been developed in the school subject (s) in your state? Yes/No
(ii) If yes, please provide the following details :-

Sl No.	For which stage Question Banks are available?	Yes/ No	Subject (s) for which Question Banks are available	Whether Qestion Bank (s) is/are available (write Yes or No.)	
				Teachers	Students
i	Primary				
ii	Upper-Primary				
iii	Secondary				
iv	Higher Secondary				

26 (i) Whether teachers use Criterion Referenced Tests (CRT) ? Yes /No

(ii) If yes, at which stage. (Please mark tick (✓) at appropriate stage)

(i) Primary Stage [ ] (ii) Upper-Primary Stage [ ]
(iii) Secondary Stage [ ] (iv) Higher Secondary Stage [ ]

27(i) Whether the State Education Department provides in-service training to teachers on various aspects of evaluation at different levels ? Yes/No

(ii) If yes, please provide information in the table given below

Sl No	Training Components	Primary	Upper-Primary	Secondary	Higher Secondary
i	Number of training courses organized in last academic session?				
ii	Number of teachers participated in a training course				
iii	Maximum duration of a training courses				
iv	The areas of training courses were (Please put tick (✓)against each stage. a Conceptual				
v	b Development of tools of evaluation				
	c. Administration of tools				
	d Recording procedures				
	e Decision making				
	f. Reporting				
	g Any other (Please specify)				

28 (i) Whether hard spots in learning of students are identified? Yes/No

(ii) If Yes, at what stage (Please write Yes or No against appropriate stage (s))

Sl No.	Stage	Write Yes or No
i	Primary	
ii	Upper-Primary	
iii	Secondary	
iv	Higher Secondary	

(iii) If yes, at any stage (s), how do teachers diagnose learning difficulties?

Sl No.	Stage	Observation	Oral Test	Diagnostic Tests	Any other Please specify
i	Primary				
ii	Upper-Primary				
iii	Secondary				
iv	Higher Secondary				

29 (i) Do teachers provide remedial instruction to students? Yes/No

(ii) If yes, please put the (✓) mark against the appropriate mode (s)

Sl No.	Modes / Stages	Provide remedial instruction to individual student	Provide remedial instructions only to weak students in group	Discuss common problems in class	Report to parents	Any other method used (Please Specify
i	Primary					
ii	Upper-Primary					
iii	Secondary					
iv	Higher Secondary					

30. What type of evaluation is used at different stages?
(Please write Yes/No at appropriate place)

Sl No.	Stage	Types of Evaluation	
		* Formative	** Summative
i	Primary		
ii	Upper-Primary		
iii	Secondary		
iv	Higher Secondary		

* Formative Evaluation : Evaluation conducted during the teaching learning process

** Summative Evaluation . Evaluation conducted at the end of the session covering all the contents taught during the session

31 (i) What stage public examination/external examination is conducted ?
(Please mark (✓) at appropriate stage)

(i) Primary Stage [ ] (ii) Upper-Primary Stage [ ]
(iii) Secondary Stage [ ] (iv) Higher Secondary Stage [ ]

(ii) If yes, please provide details in the given below

Sl. No	Stage	Yes/ No	If yes, then		
			In which Class/Classes	Purpose of the external examination	Who conducts this examination?
i	Primary				
ii	Upper-Primary				
iii	Secondary				
iv	Higher Secondary				

(ii) What technique (s) is/are used in the public examination at different levels and how much weightages are given to them ?

Sl No.	Stage	Technique(s) used							
		Written		Oral		Practical		Any other (Please Specify)	
		Yes/ No	Weightage	Yes/ No	Weigh tage	Yes/ No	Weightage	Yes / No	Weightage
i	Primary								
ii	Upper-Primary								
iii	Secondary								
iv	Higher Secondary								

32 (i) Whether weightage to both internal assessment and external assessment are given to students for the purposes of promotion to the next class? Yes/No

(ii) If yes, then how much weightage do you give to the internal assessment and external assessment in public examination?

(Please, provide information in the table given below)

Sl No.	Stage	Type of Assessment	Weightage in terms of % of Marks			
			Written	Oral	Practical	Any other (Please Specify)
i	Primary	Internal				
		External				
ii	Upper-Primary	Internal				
		External				
iii	Secondary	Internal				
		External				
iv	Higher Secondary	Internal				
		External				

33 (i) Whether Personal and Social Qualities are evaluated in schools? Yes/No

(ii) If yes, provide information in the following table

Sl No.	Stage	Name of Personal & Social Qualities	Technique (s) used for assessment	Tools used	Reported in terms of Marks/Grades Pl. specify
i	Primary				
ii	Upper-Primary				
iii	Secondary				
iv	Higher Secondary				

34 (i) Do you show the evaluation records of Personal & Social Qualities in the Report Card? Yes/No

(ii) If yes, at which stage (Please Tick the relevant stage/stages)

(i) Primary [ ] (ii) Upper-Primary [ ]
(iii) Secondary [ ] (iv) Higher Secondary [ ]

35 (i) Do schools report Social and Personal Qualities in Report Card ? Yes/No

(ii) If yes which of the following is used for reporting at different stages?

(Please write Yes or No against each mode under each stage.)

S. No.	Mode	Stages of School Education			
		Primary	**Upper Primary**	**Secondary**	**Higher Secondary**
i	Marks				
ii	Grades				
iii	Statement				

36 Which of the following methods are used for indicating the performance of student in the scholastic and co-scholastic areas?

Sl No.	Stages		Scholastic Areas			Co-Scholastic areas		
			Marks	**Grades**	**Both Marks & Grades**	**Marks**	**Grades**	**Both Marks & Grades**
i	Primary	Internal						
		External						
ii	Upper-Primary	Internal						
		External						
iii	Secondary	Internal						
		External						
iv	Higher Secondary	Internal						
		External						

37.(i). Do teachers use Informal* evaluation techniques? Yes/No

(ii) If yes, please write the different techniques used by teachers in the table given below)

Sl No	Stage	Techniques
i	Primary	
ii	Upper-Primary	
iii	Secondary	
iv	Higher Secondary	

* **Informal Evaluation Techniques** :- *Such as peer evaluation, self evaluation by students, anecdotal records etc.*

38 (i) Do schools inform parents about the performance of their wards? Yes/No

(ii) If yes, then how are they informed? (Please provide information against each stage)

Sl No.	Stage	Modes
i	Primary	
ii	Upper-Primary	
iii	Secondary	
iv	Higher Secondary	

39 (i) Whether the annual results are analyzed? Yes/No

(ii) If yes, how the feed back is used for decision making at different levels? (Please, provide information in brief)

Sl No.	Stage	Results are Analyzed	How the feed back is used
i	Primary		
ii	Upper-Primary		
iii	Secondary		
iv	Higher Secondary		

40 What suggestions would you like to offer for quality improvement in education at different stages?

Sl No.	Stage	Suggestions for quality improvement
i	Primary	
ii	Upper-Primary	
iii	Secondary	
iv	Higher Secondary	

41(i) Whether some innovative evaluation practices* are developed and implemented in the state for the quality improvement in school education? Yes/No

(ii) If yes, please mention briefly innovative evaluation practices in the table given below

Sl No.	Stage	Innovative Practice(s)	Please write the name of the school (s) where these innovative practices are in practice
i	Primary		
ii	Upper-Primary		
iii	Secondary		
iv	Higher Secondary		

- **Innovative evaluation practices : that evaluation practice which is uncommon and help out in improving evaluation procedure.**

42 How evaluation may be used as an effective tool for quality improvement in teaching-learning process? (Please mention in brief)

____

____

____

____

43 Would you like to give any suggestion which has not been mentioned above?
(if yes please mention in brief)

____

____

____

____

____

____

Information provided by

Name : ____________________

Designation : ____________________

Complete Address (Official) ____________________

____

____

Phone No (O) : ____________________

(R) : ____________________

Fax No. : ____________________

E-mail address : ____________________

Mobile No. : ____________________